नित नवल
राजदेव मण्डल

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | २०२७

नित नवल

राजदेव मण्डल

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका । २०२७

प्रकाशन-विवरण

नित नवल राजदेव मण्डल

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

समीक्षा-निबन्धक क्रम

अम्बरा : लोकानुभव, सामाजिक प्रतिरोध आ काव्यशिल्प 4

बसुंधरा : धरती, देह आ प्रतिरोध 24

हमर टोल : टोलक सामाजिक शरीर आ प्रतिरोध 45

जल भँवर : समाज, जल आ आख्यान 63

जाल : ऋण, जाति आ स्त्री-प्रतिरोध 82

लाज : स्त्रीशिक्षा, वर्गसत्ता आ नैतिक प्रत्यभिज्ञान 104

पंचैती : सामाजिक न्याय, जातिगत नियन्त्रण आ स्त्री-प्रतिरोध 123

त्रिवेणीक रंग : घर, वर्ग आ भयक आख्यान 138

वापसी : प्रतिष्ठाक अवापसी आ सम्बन्धक विखण्डन 156

अध्याय 1

अम्बरा : लोकानुभव, सामाजिक प्रतिरोध आ काव्यशिल्प

समकालीन मैथिली कवितामे कोसीक त्रासदी, जातिगत असमानता, श्रम, नारी-अनुभव आ पर्यावरणीय चेतना

शोध-सार

राजदेव मण्डलक 'अम्बरा' (२०१०) समकालीन मैथिली कविताक एहन संग्रह अछि जाहिमे ग्रामीण जीवनक ठोस परिस्थितिक संग नैतिक प्रतिरोध, सामाजिक असमानता, जातिगत अपमान, विपत्ति, अस्तित्व-संघर्ष आ प्रकृतिक विनाश एक-दोसरसँ गुँथल अछि। एहि अध्ययनमे कवितासभक निकट-पाठकेँ प्राथमिकता दैत २००८ केर कोसी-बाढ़क ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पर्यावरणीय न्याय, प्रतिरोधात्मक काव्य-वाणी, संवादात्मकता आ प्रतीक-विधानक सापेक्ष संग्रहक मूल्यांकन कएल गेल अछि। अध्ययनक मुख्य तर्क ई अछि जे 'अम्बरा'क सर्वाधिक सशक्त क्षण ओतए प्रकट होइत अछि जतए अमूर्त नैतिक शिक्षा ठोस दृश्य, विरोधाभास आ पीड़ित मनुष्यक आवाजमे परिणत भऽ जाइत अछि। 'बाढ़िक चित्र'क बहुदृश्यात्मक संरचना, 'चीड़ीक जाति'क करुण-राजनीतिक प्रतीक, 'त्रिशंकु'क अन्तर्जातीय विवाह-संकट आ 'रंगक खोज'क श्रम-निर्धनता एहि प्रवृत्तिक प्रतिनिधि उदाहरण थिक। संगहि, संग्रहक उपदेशप्रधान समापन, सरल तुकबन्दीक पुनरावृत्ति, प्रतीकक असमान विस्तार आ किछु स्त्री-पात्रक सीमित आत्मकथनक आलोचनात्मक जाँच कएल गेल अछि। निष्कर्षतः 'अम्बरा'क साहित्यिक महत्त्व ओकर सामाजिक सरोकारक घोषणामात्रमे नहि, बरु सरोकारकेँ संवेदनात्मक रूप देबाक सफल-असफल प्रक्रियाक द्वन्द्वमे निहित अछि।

बीजशब्द: अम्बरा; राजदेव मण्डल; समकालीन मैथिली कविता; कोसी-बाढ़; जाति-विमर्श; पर्यावरणीय न्याय; नारी-अनुभव; लोकभाषा; व्यंग्य; काव्यशिल्प

१. प्रस्तावना: कविताक सामाजिक भूमि आ अध्ययनक प्रश्न

मैथिली कविताक आलोचनामे 'लोक' शब्द बहुत बेर कोनो अमूर्त सांस्कृतिक गौरवक पर्याय बनि जाइत अछि। मुदा लोकक यथार्थ केवल गीत, पर्व, रंग अथवा माटिक भावुक स्मृति नहि थिक; ओहिमे आजीविकाक असुरक्षा, देहपर पड़ैत प्रहार, प्रशासनिक उदासीनता, जातिक अपमान, पारिवारिक बँटवारा आ नारीक दैनन्दिन संघर्ष सेहो सम्मिलित अछि। राजदेव मण्डलक 'अम्बरा' एहि कठिन, असुविधाजनक लोकजीवनक संग अपन काव्यसम्बन्ध स्थापित करए चाहैत अछि। कवि अपन पाठककेँ कोनो आदर्शीकृत ग्राम्य-दृश्य नहि, बरु दरकैत सामाजिक व्यवस्था आ ओहिसँ जूझैत व्यक्तिक अनेक दृश्य देखबैत छथि।

संग्रहक पहिल संस्करण २०१० मे प्रकाशित भेल। लेखकक लघु आत्मकथ्य 'अंजलि भरि साहित्य सुमन' रचनाकेँ पाठकक निर्णयक समक्ष रखैत अछि; एतए आत्मप्रशंसा अथवा उपलब्धिक विस्तृत विवरण नहि, पाठकीय परखक आग्रह बेसी प्रमुख अछि। आरम्भिक टिप्पणीमे गजेन्द्र ठाकुर मैथिली कवितामे भाषिक-सांस्कृतिक आधार आ स्थानीय सामाजिक-आर्थिक जीवनक अनिवार्यतापर बल दैत छथि। हुनकर तीव्र मूल्यनिर्णयकेँ तथ्यात्मक साहित्यिक क्रमवारी नहि, तत्कालीन आलोचनात्मक पक्षधरता बुझबाक चाही। एहि कारणें प्रस्तुत अध्ययन संग्रहक गुणक संग ओकर सीमा सेहो स्वतन्त्र रूपेँ जाँचैत अछि।

मुख्य प्रश्न पाँच अछि: कविता अपन सामाजिक अभिप्रायकेँ अनुभूतिमय रूप कोना दैत अछि; स्थानीय घटना आ सार्वभौम मानवीय चिन्ताक बीच कोन सम्बन्ध निर्मित होइत अछि; जाति, लिंग आ श्रमक असमानता कतेक गहिराइ धरि खुलैत अछि; प्रकृति कखनो दृश्य, कखनो जीवित सहचर आ कखनो संकटग्रस्त संरचना कोना बनैत अछि; आ अन्ततः संग्रहक लय, छन्द, बिम्ब, संवाद आ उपदेशात्मक कथन

काव्यात्मक प्रभावक कोन रूप गढ़ैत अछि। ई प्रश्न कवितासभकेँ केवल विषयवस्तुक आधारपर श्रेष्ठ घोषित करबाक बदला ओकर संरचनात्मक संगतिक आलोचनाक दिशा दैत अछि।

२. पाठ-विधि: निकट-पाठ, सामाजिक सन्दर्भ आ आलोचनात्मक सावधानी

अध्ययनक आधार सम्पूर्ण संग्रहक कवितासभ, लेखकक आत्मकथ्य आ आरम्भिक आलोचनात्मक प्रस्तावना अछि। निकट-पाठक प्रक्रियामे कथनकर्ता, सम्बोधित व्यक्ति, शब्द-चयन, दृश्य-क्रम, रूपक, पुनरावृत्ति, ध्वनि, व्यंग्यात्मक मोड़ आ अन्तिम पंक्तिक कार्य-प्रणालीकेँ परस्पर जोड़ि पढ़ल गेल अछि। एतए कविता न तँ ऐतिहासिक प्रतिवेदनक विकल्प अछि, न कोनो समाजशास्त्रीय सर्वेक्षणक आँकड़ा; ओ अनुभवक काव्यरूप थिक। तथापि बाढ़जकाँ निर्दिष्ट घटनाक ऐतिहासिक सन्दर्भ स्वतन्त्र विश्वसनीय अभिलेखसँ जाँचल जा सकैत अछि।

पर्यावरणीय आलोचनाक सन्दर्भमे लॉरेन्स ब्यूएल प्रकृतिक साहित्यिक प्रतिनिधित्वपर विचार करैत छथि, तँ रॉब निक्सन धीरे-धीरे घटैत पर्यावरणीय हिंसाक अदृश्य प्रभावकेँ आलोचनाक केन्द्रमे अनैत छथि। ‘अम्बरा’ पर ई अवधारणा यथावत आरोपित नहि कएल गेल अछि; ओकर उपयोग एतेक लेल अछि जे आकस्मिक प्रलयक दृश्य आ दीर्घकालिक सामाजिक असुरक्षा—दुनूकेँ अलग-अलग चिन्हल जाए। एहिना बाख्तिनक संवादात्मकताक विचारसँ कवितामे बहुवाचिकता देखल जा सकैत अछि; तथापि कवितामे अनेक पात्रक आवाज होएब मात्रसँ ओकरा पूर्ण ‘बहुस्वर’ कहि देब असावधान सामान्यीकरण होएत।

जाति-सम्बन्धी पाठमे आंबेडकरक जाति-विनाशक वैचारिक आग्रह पृष्ठभूमि दैत अछि, किन्तु संग्रहक प्रत्येक पीड़ित पात्रकेँ बिना पाठीय प्रमाण कोनो विशेष जातिक प्रतिनिधि मानि लेब अनुचित होएत। एही तरहे नारी-अनुभवक विवेचनमे स्त्रीक कथन आ पुरुष कथनकर्ताक दृष्टि अलग राखल गेल अछि। ई भेद आलोचनाकेँ कविक

आशय अनुमान करबाक बदला प्रकाशित रचनाक उत्तरदायित्व जाँचबाक अवसर दैत अछि।

३. शीर्षक, संरचना आ संग्रहीत अनुभवक विस्तार

'अम्बरा' शीर्षकमे ऊर्ध्वता आ व्यापक आकाशक आभास भेटैत अछि; मुदा संग्रहक कवितासभ बारम्बार पाठककेँ धरतीपर उतरबैत अछि—कीचड़, घाम, देह, भूख, रक्त, गाछ, नदी, दफ्तर, राहत-शिविर आ घरक सीमामे। एहि विरोधाभासकेँ अर्थगर्भित मानल जा सकैत अछि: आकांक्षाक आकाश ओहने धरतीपर टिकि सकैत अछि जतए मनुष्यक जीवन-मूल्य सुरक्षित हो। तथापि शीर्षकक ई अर्थ व्याख्यात्मक प्रस्ताव थिक, कविक घोषित अभिप्राय नहि।

संग्रहक आरम्भ 'आह' सँ होइत अछि; करुणा आ 'वाह-वाह'क एक-दोसरसँ भिड़न्त एतए समाजक प्रशंसालोलुप संस्कारक आलोचना बनैत अछि। अगिला 'ज्ञानक झंडा' विज्ञानक विजयघोष आ 'ओहन जन-मन'क अनुपस्थितिक अन्तर खोजैत अछि। तत्पश्चात 'झाँपल अस्तित्व', 'रहब अहाँ सभक संग', 'नदीक माछ', 'बाट-बटोही' आ 'सीमा परक झूला' परस्पर भिन्न ढंगसँ मनुष्यक स्वतन्त्रता, सामूहिक शक्ति आ अनिश्चित भविष्यपर प्रश्न करैत अछि। ई क्रम संग्रहकेँ केवल विषयगत विविधता नहि, आरम्भिक वैचारिक दिशा सेहो दैत अछि।

मध्यभागमे 'हथियारक सभा', 'ऑफिसक भूत', 'महत्त्वाकांक्षाक गाम', 'रूसल धीया', 'अढ़ाइ हाथक साँगि', 'हम पुनः उठब एकबेर' आ 'रंगक खोज' यथार्थक पृथक् स्तर खोलैत अछि। उत्तरार्धमे 'परिवारक गाछ', 'त्रिशंकु', बालकविता-द्वय, 'नेहाइपर लेखनी', 'गाछक बलिदान', 'गाछक हिस्सा', 'अन्हारक खेल' आ 'आँखिक प्रतीक्षा' काव्यविधा आ भावक्षेत्रक विस्तार करैत अछि। अन्तिम प्रेमकविता पाठककेँ स्मरण करबैत अछि जे कवि मनुष्यकेँ केवल आन्दोलनकारी अथवा पीड़ित प्राणी नहि, प्रतीक्षारत प्रेमी सेहो बुझैत छथि।

ई विस्तार संग्रहक शक्ति सेहो अछि आ चुनौती सेहो। दू-चारि पंक्तिक तीक्ष्ण सामाजिक कविता, कथात्मक-नाटकीय दीर्घ रचना आ निजी प्रेमभावक गेय अभिव्यक्ति एके संकलनमे एलासँ शैलीक एकरूपता टूटैत अछि। मुदा किछु स्थाने एही विषमता कविक स्वरक असमान विकासकेँ प्रकट करैत अछि: स्पष्ट नैतिक निष्कर्ष पर टिकैत पद्य आ अर्थक अनेक सम्भावना खोलैत बिम्बात्मक कविता समान स्तरपर सफल नहि भऽ पबैत अछि।

४. 'बाढ़िक चित्र': कोसीक प्रलय आ मानवीय साक्ष्यक काव्यरूप

संग्रहक केन्द्रस्थ दीर्घ कविता 'बाढ़िक चित्र' २००८ केर कुसहा-कोसी बाँध टूटलाक घटनासँ सम्बद्ध अछि। १८ अगस्त २००८ केँ नेपालक कुसहा लग पूर्वी कोसी तटबन्धमे भेल भंगसँ बिहारक अनेक जिलामे व्यापक जलप्रलय आएल छल। ऐतिहासिक विवरणक ई तथ्य कविताक परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करैत अछि; कवितामे उपस्थित प्रत्येक दृश्यकेँ अलग-अलग दस्तावेजीकृत घटना मानि लेबाक आधार नहि अछि। रचनाक सत्य ओकर मानवीय-संवेदनात्मक संरचनामे अछि।

'बाढ़िक चित्र' एक रैखिक कथानकक बदला छह क्रमिक दृश्य रचैत अछि। पहिल दृश्यमे बाँधक टूटब, कोसीक गर्जन, घर-दुआरि आ जान-मालक बहि जाएब, आ लोकक बचबाक आर्तनाद सामूहिक भयक भाषा बनैत अछि। दोसर दृश्यमे मातृदेह आ दू बरखक शिशुक करुण संयोग जीवन-मृत्युक सामान्य भेदकेँ अस्थिर करैत अछि। तेसर दृश्यमे गाछपर टिकल वृद्धा आ पोताक स्थिति विपत्तिक बहुस्तरीय घेरा बनबैत अछि—नीचाँ जलधार, ऊपर सर्प, चारूकात मृत्यु। ई केवल प्राकृतिक आपदाक चित्र नहि; जीवनक नाजुक सम्बन्ध टूटबाक लाक्षणिक दृश्य थिक।

चारिम दृश्यमे जीवित बचल स्त्रीक नितान्त असुरक्षित देहक पास 'रक्षक'क रूपमे पहुँचल 'भक्षक' नव प्रकारक हिंसाक आशंका उपजाबैत अछि। एतए कविता महत्त्वपूर्ण नैतिक प्रश्न ठाढ़ करैत अछि: विपत्तिसँ बचि जाएब स्त्रीक लेल स्वतः सुरक्षा नहि होइत अछि। पाँचम दृश्यमे आठ बरखक बच्चीक अनाथपन आ विस्थापनक प्रश्न—

कहाँ जाएब, कतए रहब, की खाएब—राहत-संरचनाक अपर्याप्तताकेँ बालस्वरमे उद्घाटित करैत अछि। छठम दृश्यमे सतुआ, बीमार शिशु आ राहतक प्रतीक्षामे प्रशासनिक भाषा आ भुखायल जनजीवनक बीचक दूरी अत्यन्त तीव्र भऽ उठैत अछि।

छठम दृश्यक भोजन-संकटकेँ बारीकीसँ पढ़बाक आवश्यकता अछि। सतुआ राहतक प्रतीक मात्र नहि, समयक माप सेहो बनि जाइत अछि: बचल भोजनक परिमाणसँ जीवित रहबाक सम्भावना आँकल जाइत अछि। अधिकारीक पूछताछ आ प्रभावित स्त्रीक प्रत्युत्तर एके घटनाक दू असमान भाषिक जगत खोलैत अछि। कविताक अन्तमे 'सरकार दुःखकेँ नापि रहल अछि' सन व्यंग्यात्मक निष्कर्ष प्रशासनिक गणना आ मानवीय दुःखक अगणनीयताक अन्तर उघारैत अछि। एहि तरहें कविता करुणासँ सत्ताक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि।

रचनाक कलात्मक सफलताक मूल कारण दृश्य-विशिष्टता अछि। बकौल आलोचनात्मक पर्यावरण-विमर्श, आपदाकेँ केवल एक क्षणक विकराल दृश्यसँ परिभाषित कएलासँ ओकर बादक असमानता ओझराए सकैत अछि। 'बाढ़िक चित्र' विशेषतः अन्तिम तीन दृश्यक माध्यमसँ विपत्तिक बाद जीवित लोकक असुरक्षाकेँ सोझाँ अनैत अछि। तथापि किछु दृश्य अत्यधिक आवेगपूर्ण आ असह्य घटनाक लगातार संचय करैत अछि; एहन ठाम करुणाक तीव्रता आ संवेदनाक विश्वसनीय दूरीक बीच तनाव उपजैत अछि। ई सीमा रचनाक सामाजिक महत्त्वकेँ निरस्त नहि करैत, ओकर प्रस्तुति-विधानक आलोचनात्मक मूल्यांकन माँगैत अछि।

५. नदी, माछ आ गाछ: पर्यावरणक देह आ जीवनक संकट

'नदीक माछ' आ 'बाउल परक माछ'केँ एक-दोसरक संग पढ़लासँ संग्रहक प्रकृति-बिम्बक द्वन्द्व स्पष्ट होइत अछि। पहिल कवितामे माछ जलक परिचित जगत छोड़ि पवन-दुनियाँक खोजमे उछलैत अछि; अन्वेषणक उत्साह ओकरा नूतन जीवन सम्भावनाक दिस घींचैत अछि। बारम्बार विफलताक बादो ओकर प्रयास रुकैत नहि।

एतए नदी बन्धन मात्र नहि, सुरक्षा आ सीमा दुनू अछि, आ माछ नवज्ञानक जोखिम उठबएबला आकांक्षी जीवन।

'बाउल परक माछ'मे स्थिति उलटि जाइत अछि। रेतपर फड़फड़ाइत माछक लेल जल जीवनक अनिवार्य शर्त अछि। ओकर छटपटाहट अनुग्रहक अपेक्षा नहि, अपन मूलाधारसँ जबरन विस्थापित कएल गेल प्राणीक पीड़ा थिक। दुनू कविताक संगतिसँ एक सूक्ष्म अन्तर निकलैत अछि: स्वेच्छाक जोखिम आ बलात् विस्थापन एक नहि। पहिल माछ अनजान संसारक खोजमे बाहर जाइत अछि, दोसरकेँ जालक हिंसासँ बाहर खींचल गेल अछि। एहि कारणें दुनूकेँ एके 'स्वतन्त्रताक रूपक' कहब पाठक सरलीकरण होएत।

'गाछक बलिदान'मे आगि रोकैत गाछक भूमिका मानवसमाजक उपकारक प्राकृतिक संरचनाक रूपमे उभरैत अछि। दू घर जरैत अछि, मुदा गाछसभक कारण पूरा गाम बचि जाइत अछि; कविताक वक्ता ईश्वरकेँ धन्यवाद देबाक पहिने गाछक योगदानकेँ चिन्हबाक माँग करैत अछि। एहि उलटबाँसीमे पर्यावरणीय नैतिकताक सार अछि: प्रत्यक्ष सामाजिक रक्षा केनिहार जैविक उपस्थितिक श्रेय अदृश्य दैवी कारणकेँ देब अनुभवक अवमूल्यन थिक। 'गाछक हिस्सा'मे सम्पत्तिक बँटवारा गाछक शाखा धरि पहुँचि जाइत अछि; पंचायतक हस्तक्षेप स्वामित्वक हिंसक तर्ककेँ परस्पर निर्भर जीवनक तर्कसँ चुनौती दैत अछि।

'परिवारक गाछ'मे घामसँ भीजल स्त्री माथपर गाछ उठा कऽ जाइत अछि आ ओकरा परिवार, शिक्षा आ सन्ततिक विकासक रूपमे चिन्हबैत अछि। एतए गाछ सम्पत्तिक रूपक नहि, भविष्यक पोषण आ श्रमक सजीव रूप अछि। वातावरण, परिवार आ स्त्री-श्रमक ई संयोग कविक पर्यावरण-बोधकेँ कोनो सुन्दर प्राकृतिक दृश्यसँ आगाँ लऽ जाइत अछि। एहि पाठकेँ रेमण्ड विलियम्सक ग्राम्यजीवन सम्बन्धी आलोचनात्मक दृष्टिक सापेक्ष पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे प्रकृति सामाजिक सम्बन्धसँ निरपेक्ष कोनो सजावटी पृष्ठभूमि नहि।

संग्रहक पर्यावरणीय चेतना वैज्ञानिक व्याख्याक रूपमे व्यवस्थित नहि; ओकर भाषा प्रत्यक्ष संकट, जनानुभव आ नैतिक आह्वानक अछि। तथापि 'बीखक घैल'क विषाक्त धरती, 'घातक गन्ध'क श्वास-संकट आ 'मिझाइत दीया'क समाप्त होइत ऊर्जा जीवन-संरचनाक व्यापक क्षय दिस संकेत करैत अछि। सभ बिम्बकेँ शाब्दिक पर्यावरणीय घटना मानब ठीक नहि, मुदा ई सभ पाठककेँ देह, स्थान आ जीविका बीचक सम्बन्धपर फेर विचार करबैत अछि।

६. जाति, अपमान आ प्रतिरोधक बदलैत व्याकरण

'जाति' कविता आश्चर्यजनक रूपसँ संक्षिप्त अछि। कथनकर्ता नाम, गाम आ काम बता कऽ अपन परिचय देबए चाहैत अछि, मुदा प्रश्नकर्ता फेर जाति पूछैत अछि। एतए 'परिचय'क अर्थ एकाएक सामाजिक पदानुक्रममे बदलि जाइत अछि। कविताक अन्त कथनकर्ताक आन्तरिक दुःखक संग होइत अछि; ओ अपमानक पूरा भाषण नहि दैत, चुप्पीक असुविधा पाठक लेल छोड़ैत अछि। एहि अल्पकथनमे रचनाक सौन्दर्य अछि: कहबाक बदला नबुझल गेल पीड़ाक दृश्य निर्मित होइत अछि।

'चीड़ीक जाति'मे घायल पक्षी, अपरिचित बच्चा, शिकारी आ तराजूक चित्र मातृत्व, हिंसा आ गणनाक क्रूर राजनीति एके दृश्य-क्षेत्रमे रखैत अछि। चिड़ै अपन नहि होइतहुँ बच्चाकेँ अपन नेहसँ जोड़ैत अछि। एतए 'जाति' शब्द जीववैज्ञानिक अर्थ, संवेदनात्मक समुदाय आ सामाजिक बहिष्कारक व्यंजना बीच चलैत अछि; एकरा एकमात्र निश्चित जातीय पहचानमे बाँधि देब अर्थक समृद्धिकेँ घटाएत। अन्तिम आशंकित प्रश्न सामूहिक अस्तित्वक भयक रूपमे गूँजैत अछि।

'हम पुनः उठब एकबेर'मे अस्वस्थ, उपेक्षित आ 'नीच कुल' सँ चिह्नित देहक रूपक अधिक प्रत्यक्ष सामाजिक तीक्ष्णता लऽ लैत अछि। यम आ धर्मराजक घृणा-भयक उलटबाँसी सत्ता-प्रतिष्ठानक नैतिक विफलता देखबैत अछि; जे देह जिअत अवस्थामे तिरस्कृत अछि, ओकर प्रतिरोध मृत्युक प्रतीक धरि भय उत्पन्न करैत अछि।

रचना पीड़ितकेँ निष्क्रिय दयापात्र नहि रहए दैत; ओकर उठब सामूहिक भयक समक्ष स्वाभिमानक पुनरुत्थान बनैत अछि।

'त्रिशंकु' एहि विमर्शकेँ पारिवारिक-धार्मिक स्तरपर लऽ जाइत अछि। अन्तर्जातीय विवाह केने दम्पती गाम लौटैत अछि; स्वप्नमे मृत पिताक भयावह उपस्थिति, कुलदेवताक क्रोध, सामाजिक निष्कासनक धमकी आ पत्नी दिस देखैत भयभीत पति—ई सभ एकटा आन्तरिक नाटक रचैत अछि। रचनाक शक्तिशाली बिन्दु ई अछि जे अन्तर्जातीय प्रेमक विरोध केवल बाहरक पुलिस अथवा गामक लोक नहि, भीतर बसल पितृसत्तात्मक-सांस्कृतिक भय बनि जाइत अछि। शीर्षक 'त्रिशंकु' ओकरा दुनू जगतक बीच अटकल अस्तित्वक नाम दैत अछि।

तथापि संग्रहक जाति-विमर्श एकसमान तीक्ष्ण नहि। 'जाति'क मौन, 'चीड़ीक जाति'क रूपक, 'हम पुनः उठब'क घातक बहिष्कार आ 'त्रिशंकु'क भय एक-दोसरसँ भिन्न विधि अपनबैत अछि। आंबेडकरक जाति-सम्बन्धी विश्लेषणक आलोकमे ई स्पष्ट होइत अछि जे व्यक्तिगत सहिष्णुता पर्याप्त नहि; सम्बन्ध, विवाह, सम्मान आ सामाजिक संरचनाक प्रश्न केन्द्रमे अनिवार्य अछि। 'अम्बरा' एहि संरचनात्मक प्रश्नक अनेक दृश्य दैत अछि, मुदा संगठन, सम्पत्ति आ संस्थागत परिवर्तनक विस्तृत चिन्तन कम विकसित करैत अछि।

७. स्त्री, प्रेम, मातृत्व आ घरेलू संरचनाक टकराव

'रूसल धीया'मे सासुरसँ घुरल बेटीपर 'लाज' आ कुल-मानक दबाव अछि। प्रारम्भिक सामाजिक उपदेशक विपरीत बेटी अपन दैनन्दिन उत्पीड़नक कथा सोझाँ रखैत अछि—सासुक उलाहना, पतिद्वारा हिंसा, ससुरक असंवेदनशीलता आ घरक भीतर जेलसदृश जीवनक अनुभव। 'पहिने बचत जान, तबने राखब कुलक मान'क भाव कविता-कथनक नैतिक केन्द्र अछि। एतए स्त्रीक जीवनकेँ परिवारक प्रतिष्ठासँ नीचाँ राखबाक रूढ़ मूल्य पर चोट अछि।

‘परेमक अधिकार’मे प्रेम सम्बन्धक भीतर पुरुषक कायरता आ सामाजिक दबावक आलोचना स्त्री-पात्रक कथनसँ उभरैत अछि। प्रश्न ई नहि रहि जाइत अछि जे प्रेम भावुक रूपसँ कतेक गहिर छल, बरु ई जे सामाजिक परिणाम सहबाक साहसक अभावमे प्रेमक दावाक नैतिक मोल कतेक अछि। ‘मनोवांछित चान’ आ ‘मिलन-बिछुड़न’मे सम्बन्धक कोमलता आ निजी व्यथा प्रधान अछि; ई प्रेमकविता सभ सामाजिक विमर्शमे बिसरल मानवीय अन्तरंगताकेँ पुनः उपस्थित करैत अछि, यद्यपि रूढ़ प्रकृति-उपमानक कारण सर्वदा नवीन बिम्बात्मक उपलब्धि नहि दैत।

‘मुनियाँक चिन्ता’ विशेष महत्त्वक बालकविता अछि। घरमे बेटाक जन्मपर उत्सव मनेबाक बीच नन्हि मुनियाँक चिन्ता अछि जे आब ओकरा कोरा आ मायकेँ दूध के देत। बच्चीक वाणी नाटकीय हास्य रचैत अछि, मुदा एकरा केवल चुहल कहि देब अनुचित होएत: बेटाक आगमनक सामूहिक उत्सव आ बेटीकेँ कम ध्यान देबाक आशंका दुनू एके क्षणमे उपस्थित अछि। कविताक अन्तक हँसी पाठककेँ सोचबाक लेल छोड़ैत अछि जे मुनियाँक चिन्ता वास्तवमे केकरा लेल हास्यास्पद अछि।

‘परिवारक गाछ’क मेहनती स्त्रीक आवाज स्त्रीकेँ पोषणकर्ता मात्र नहि, परिवारक भावी ज्ञान-सम्पदाक नियोजक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। ‘बाढ़िक चित्र’क असुरक्षित स्त्री आ ‘रूसल धीया’क प्रतिरोधी बेटी सँ ओकर अन्तर ध्यानयोग्य अछि। तथापि बहुतेक रचनामे स्त्रीक भूमिका मातृत्व, पत्नीपन अथवा परिवारक परिधिमे घेरल रहि जाइत अछि; स्त्रीक आर्थिक स्वतन्त्रता, इच्छाक बहुलता आ सार्वजनिक निर्णयाधिकारक प्रश्न अपेक्षाकृत अल्प अछि। कविक सदाशयता आ पात्रक पूर्ण स्वायत्तता एके बात नहि—एहि भेद पर आलोचना सजग रहबाक चाही।

८. श्रम, निर्धनता, देह आ सामाजिक दृश्यता

‘रंगक खोज’मे फाटल वस्त्र सीबैत व्यक्तिक सुइया अपन हाथमे गड़ि जाइत अछि; रक्तक स्वाद, चिथराक रंग आ हँसैत नजरि अभावकेँ देहक प्रत्यक्ष अनुभव बना दैत अछि। कविता नायकक लाजकेँ केवल मानसिक दोष नहि कहैत; ओकरा निर्धनता आ

सामाजिक अवमाननाक बीच रखैत अछि। सभ चिथरा एकरंग करबाक इच्छा केवल वस्त्रसुधार नहि, मनुष्यतापर लगाओल भेदकारी दृष्टिकेँ बदलबाक आकांक्षा बनि उठैत अछि। एतए रंग वर्ग-अनुभव आ सामाजिक सम्मानक जटिल प्रतीक अछि।

'बदलैत बाट'मे दरपनपर वर्तमान, भूत आ भविष्यक आकृति बनैत अछि, मुदा 'जठराग्नि' बढ़ितहि कथनकर्ता अपन आत्मनिरीक्षण छोड़ि रोटीक खोजमे भनसाघर दिस मुड़ि जाइत अछि। देहक भूख अमूर्त दार्शनिक चिन्तनपर यथार्थक प्राथमिकता स्थापित करैत अछि। 'महत्त्वाकांक्षाक गाम'मे रथ, घोड़ा, कोड़ा आ अन्ततः स्वयं जुआमे कान्ह लगबैत वक्ता सफलता लेल श्रमक विडम्बना रचैत अछि; सत्ता-प्रदत्त हिंसा आ स्वयं परिश्रमक सीमा एके गतिमे भिड़ैत अछि।

'अढ़ाइ हाथक साँगि'मे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सम्पत्तिक विभाजन आ घरेलू कलहक पुनरावृत्ति देखाओल गेल अछि। बाप पर बरखौ पूर्व उठाओल आरोप बेटा सँ स्वयं वक्ताक विरुद्ध घुरि अबैत अछि। एहि वृत्ताकार समयमे पाठक एक व्यंग्यात्मक सामाजिक नियम देखैत अछि: व्यक्तिगत दुःख जँ विवेकमे नहि बदलए, तँ अगिला पीढ़ीमे हूबहू दोहराएत। 'ऑफिसक भूत'मे कुर्सी आ मुख बदलैत अछि, मुदा जनसाधारणक दुःख कायम रहैत अछि; सत्ता-संस्थानक निरन्तरता एक प्रायः लोककथात्मक प्रतीकसँ व्यंग्यात्मक बनैत अछि।

श्रमक कविता सभमे नैतिक आशावाद प्रबल अछि, मुदा आर्थिक संरचनाक पूरा विश्लेषण नहि भेटैत। एकटा कथनकर्ता मेहनत, एकता अथवा नेक नियतिसँ बाधा दूर करबाक विश्वास प्रकट करैत अछि। ई विश्वास सामुदायिक ऊर्जा जगा सकैत अछि, किन्तु जमीन, संसाधन, मजदूरी अथवा नीतिगत विषमताक जटिलता मात्र सदाचारसँ हल होएत—एहन निष्कर्ष निकालब अनुचित होएत। कविता ई दूरी कखनो देखाबैत अछि, कखनो ओही दूरीकेँ त्वरित आशावादसँ भरि दैत अछि।

९. सत्ता-विरोधी व्यंग्य, नैतिकता आ सामूहिक प्रतिरोध

'हथियारक सभा'मे पाषाण, लाठी आ अणुबम जकाँ हिंसाक साधन आपसमे महानताक दावेदारी करैत अछि। निर्णायक पंचायत ओहिकेँ श्रेष्ठ मानैत अछि जे रक्त बहेने बिना मनपर प्रभाव स्थापित करए; अन्तिम विजेता अहिंसक विचारक सम्भावना अछि। हिंसाक उपकरणकेँ मानवीय मंचपर बैठेबाक एहि रूपकेँ केवल सीधा उपदेश नहि कहि सकैत छी: वस्तुक मानवीकरण स्वयं हिंसक सभ्यताक विडम्बना उघारैत अछि। तथापि उपसंहारमे नैतिक परिणाम स्पष्ट घोषित होइतहि बिम्बक खुलापन घटैत अछि।

'बाट-बटोही'मे पहाड़ बनि ठाढ़ बाधा सामूहिक जनबलक आगमनसँ हटैत अछि। 'बसातक धुजिनी'मे निर्बल कीड़ाक निरन्तर फँसबाक बीच आँधीक आशंका मकड़जालक टूटबाक सम्भावना जगबैत अछि। 'सुनगैत चिनगी'मे छाउरमे दबायल चिनगी सत्ताक रक्तरंजित महलकेँ चुनौती देबाक स्वप्न देखैत अछि। तीनू रचनामे निराशासँ मुक्ति व्यक्तिगत सद्भाव मात्र नहि, सामूहिक परिवर्तनक कल्पनाक माध्यमसँ अबैत अछि। मुदा 'चिनगी'क आगि नव विनाशक शक्ल सेहो धारण कऽ सकैत अछि; एहि प्रतीकक दुधारी अर्थ आलोचनामे खुला रखबाक चाही।

'अन्हारक खेल'मे सार्वजनिक मनोरञ्जनक स्थान भाषणक मंच बनि जाइत अछि; राशनक बदला आश्वासन भेटैत अछि आ दर्शकक देह भूखसँ कंकाल-सदृश होइत अछि। राजनीतिक वाणी आ भौतिक आवश्यकताक विरोध कविताकेँ तीक्ष्ण व्यंग्यक क्षमता दैत अछि। 'हित-अहित'मे वृद्धक एकान्तिक स्वार्थ-सूत्रकेँ पड़ोसियाक घरमे आगि लगलापर परस्पर निर्भर जोखिमक तर्कसँ चुनौती देल जाइत अछि। एतए नैतिकता सदाचारक प्रवचन नहि, जीवनक परस्पर सम्बन्धक व्यावहारिक ज्ञान थिक।

'बघनखा'मे प्रतारणा सर्वत्र देखैत कथनकर्ता अन्ततः पूछैत अछि जे कहीं ओकर अपन आँखिये बघनखा तँ नहि बनि गेल! ई आत्म-प्रतिप्रश्न संग्रहक बेसी परिपक्व व्यंग्यात्मक क्षणमे सँ एक अछि। सामाजिक दोषक सर्वग्रासी आलोचना जखन अपन

दृष्टि पर फेरैत अछि, तखन कविता प्रचारात्मक घोषणासँ बचि जाइत अछि। 'लाज' आ 'नाचक बिखाद'मे सेहो आत्म-निरावरणक रूपक सामाजिक पाखण्डक संग कथनकर्ताक आत्मविसंगतिकेँ जोड़ैत अछि।

१०. लोकवाणी, संवाद, ध्वनि आ शिल्पगत प्रयोग

'अम्बरा'क भाषा औपचारिक साहित्यिक पदावली आ जीवित बोलचालक मैथिलीक बीच गति करैत अछि। 'हे रौ', 'कियौ भाय', 'जाउ', 'आब' सन सम्बोधन-सूत्र, पात्रक परस्पर संवाद, लोकोक्तिक भावविस्तार आ दैनन्दिन वस्तुक नाम कवितामे संवादात्मक ऊर्जा लबैत अछि। बाख्तिनक संवादात्मक साहित्य-दृष्टिसँ तुलना करबाक अर्थ एतए ई नहि जे संग्रह उपन्यासक बहुवाचिकता अपनबैत अछि; बरु ई जे पात्रक टकरबैत मूल्य-भाषा बीच अर्थ जन्म लैत अछि।

ध्वन्यात्मकता ओकर एक प्रमुख औजार अछि: 'सट-सट-सटाक', 'धड़-धड़-धड़ाक', 'झन-झनाक', 'कट-कट' सन ध्वनि तनाव आ गति बढ़बैत अछि। 'बाढ़िक चित्र'मे तीव्र गति, विराम आ दृश्य-निर्देशक संकेत एक मंचित अनुभव रचैत अछि; 'सिर विहून धड़'मे विवाहक परिचित विधिक बीच असम्भव शारीरिक दृश्य लोकहास्य, भय आ सामाजिक व्यंग्यक मिश्रित प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। रचनाक दृश्यात्मकता सामान्य मुक्तछन्द सँ अलग ओकर नाट्य-सम्भावना देखबैत अछि।

अन्यत्र कवि लघु-पंक्ति, तुकान्त आ ध्वनि-पुनरावृत्तिपर बेसी भरोसा करैत छथि। छोट पंक्ति मात्र आधुनिकता नहि; काव्यात्मक विशिष्टता बिम्बक अर्थ-संकुचन, अनपेक्षित सम्बद्धता आ ध्वनिक नियोजनसँ उपजैत अछि। 'आह'मे 'आह' आ 'वाह-वाह'क ध्वनि-समानता सामाजिक संवेदनहीनताक तीक्ष्ण विरोध रचैत अछि; मुदा किछु कवितामे क्रमिक तुक मिलाबैत चलबाक प्रवृत्ति विचारकेँ आगू नहि बढ़बैत, केवल कथन दोहरबैत अछि। एहन स्थाने कविता निबन्धात्मक टिप्पणी अथवा नैतिक सूक्तिक निकट पहुँचि जाइत अछि।

‘एकटा चुप्पी’मे छाया-सदृश मौन साक्षी, ‘कुहेसक परदा’मे अपन छायाक भूत बनि ठाढ़ होएब, ‘कांध परक मुरदा’मे मरल परम्पराक जीवित देहपर बोझ आ ‘नेहाइपर लेखनी’मे कलमकेँ कोदारीमे बदलबाक संकल्प प्रतीकक नूतन सम्भावना खोलैत अछि। विशेषतः अन्तिम कविता साहित्यिक कर्म आ सामाजिक श्रमक दूरीकेँ प्रश्नांकित करैत अछि; लेखनीकेँ नेहाइपर राखब लेखनक परित्याग मात्र नहि, औजारक रूपान्तरक कठोर इच्छा रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

११. विज्ञान, अन्धविश्वास आ आधुनिकताक द्वैध

‘ज्ञानक झंडा’मे आविष्कार, विज्ञान आ अन्धविश्वासक अवसानक उल्लास अछि; तथापि अन्तिम प्रश्न ‘ओहन जन-मन’क कमीकेँ प्रकाशमे अनैत अछि। टेक्नोलॉजीक सफलता जँ जीवनक नैतिक परिष्कारसँ पृथक् रहए, तँ विज्ञानक विजय अधूरा रहैत अछि। कवि आधुनिकताक अन्धानुकरण नहि, मानवकेन्द्रित उपयोगिता खोजैत छथि। ‘झाँपल अस्तित्व’मे ज्ञान आ आन्तरिक संघर्ष एक-दोसरक विरोधी नहि, आत्मपरिचयक कठिन सम्बन्धमे ठाढ़ देखाइत अछि।

‘कठुआएल रूप’मे पूजा-वस्तुक निष्क्रियतासँ निराश पात्र ओकरा तोड़ि दैत अछि; ई दृश्य सहज अन्धविश्वास-विरोधक प्रतीक भऽ सकैत अछि। मुदा तहिपर तुरन्त कोनो एकरेखीय वैज्ञानिकतावादी निष्कर्ष आरोपित नहि करबाक चाही, कारण कविता मूर्तिपर विश्वास, अपेक्षा, प्रतिशोध आ भयक आन्तरिक नाटक सेहो रचैत अछि। ‘त्रिशंकु’मे कुलदेवताक भय स्वप्नक रूपमे लौटैत अछि। एहि विरोधसँ स्पष्ट अछि जे मिथकीय विश्वास कविक संसारमे केवल बाहरी ‘गलत विचार’ नहि, सामाजिक स्मृति आ भावनात्मक नियन्त्रणक औजार सेहो अछि।

संग्रहक आधुनिकता-बोधक मूल तनाव एही अछि: तर्क, विज्ञान, नवमार्ग आ नवसमाजक आग्रह निरन्तर अछि, मुदा नवसमाजक मार्गमे भीतरी भय, पारिवारिक संस्कार, आर्थिक निर्भरता आ सत्ता-संस्थानक जटिलता आबि ठाढ़ होइत अछि। जे

कविता एहि टकरावकेँ दृश्य आ पात्रमे रूपान्तरित करैत अछि ओ बेसी टिकाऊ बनैत अछि; जे केवल विजयघोष करैत अछि ओ अपेक्षाकृत सपाट रहि जाइत अछि।

१२. बालकविता आ पीढ़ीगत शिक्षाक राजनीतिक अर्थ

'मुनियाँक चिन्ता' आ 'कथीक गाछ'केँ संग्रहमे पृथक् बालकविताक रूपमे चिन्हित कएल गेल अछि। पहिल कवितामे बच्चीक व्यक्तिगत प्रश्न परिवारक लैंगिक उत्सवक रीतिकेँ विचलित करैत अछि। दोसरमे पाँचम बालकक ज्ञानी बनबाक अभिनय, वास्तविक जानकारीक कमी आ मित्रक सीधा प्रत्युत्तरक माध्यमसँ ज्ञान आ दम्भक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। ई दुनू रचना बालककेँ निष्क्रिय श्रोता नहि, प्रश्नकर्ता बनबैत अछि।

बालकविताक शिक्षात्मकता स्वतः दोष नहि; ओकर वास्तविक कसौटी ई अछि जे शिक्षा अनुभवक भीतरसँ जन्म लेइत अछि कि बाहरसँ थोपरल उपदेश बनि रहैत अछि। 'मुनियाँक चिन्ता'मे बच्चीक स्वर उपदेशसँ अधिक प्रभावकारी अछि, कारण ओकर आशंका सहज मानवीय आ नाटकीय अछि। 'कथीक गाछ'मे अन्तक प्रत्यक्ष नैतिक सूत्र सीख स्पष्ट करैत अछि, मुदा पाठककेँ स्वतन्त्र अर्थग्रहणक अवसर किछु घटा दैत अछि। एहि अन्तरसँ संग्रहक समग्र काव्यसमस्या छोट रूपमे देखल जा सकैत अछि।

१३. काव्यात्मक सीमा: उपदेश, पुनरुक्ति आ अर्थक अकाल समापन

संग्रहक आलोचनात्मक मूल्यांकनमे ओकर सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ पर्याप्त गुण मानि लेब आसान अछि; मुदा नैतिक शुद्धता आ सौन्दर्यात्मक सिद्धि अलग कसौटी अछि। बहुतेक रचनाक अन्तमे 'नूतन भोर', 'जय', 'सफलता', 'एकता', 'सत्कर्म' अथवा 'नीक राह'क निश्चित उद्घोष भेटैत अछि। जँ दृश्य पूर्वहि सँ जटिल नैतिक द्वन्द्व खोलि चुकल अछि, तँ एहन सुनिश्चित समापन पाठकक विचारक बहुविकल्प घटा दैत अछि। 'हथियारक सभा'क निर्णय आ 'गाछक हिस्सा'क पंचायत एहि प्रवृत्तिक

उदाहरण अछि; तुलनामे 'जाति'क अनुत्तरित अपमान आ 'बघनखा'क आत्म-प्रश्न अधिक देर धरि विचारमे बनल रहैत अछि।

दोसरी सीमा प्रतीकक असमान निर्वाह अछि। गाछ, छाया, आगि, भूत, नदी, माछ, रक्त आ अन्हार अनेक स्थाने सशक्त रूप लैत अछि, मुदा कखनो एकहि प्रतीक पर इतेक नैतिक अर्थ लादल जाइत अछि जे ओकर जीवित दृश्यात्मकता कम भऽ जाइत अछि। 'सुनगैत चिनगी'क प्रतिरोध-ऊर्जा दोसर दिस विनाशक आगिक आशंका सेहो उत्पन्न करैत अछि, जकर प्रश्न कविता स्पष्ट नहि करैत। 'मिझाइत दीया' अन्हारक विजय आ नवप्रभातक आशाकेँ संग राखैत अछि, किन्तु एहि संक्रमणक आन्तरिक प्रक्रिया संक्षिप्त रहि जाइत अछि।

तेसर सीमा स्त्री-अनुभवक पूर्ण स्वाधीनतासँ जुड़ल अछि। 'रूसल धीया' स्त्रीक कथनकेँ नैतिक केन्द्र दैत अछि, मुदा किछु रचनामे नारीक अस्तित्व प्रेमिका, माए, पत्नी अथवा परिवार-पोषिका परिचयमे सीमित रहैत अछि। एहिना जाति-विरोधक ऊर्जाक बावजूद अनेक कवितामे सामाजिक परिवर्तनक संस्थागत पद्धति विस्तारसँ विकसित नहि होइत अछि। ई आलोचनात्मक प्रश्न उठायब कविताक पक्षधरता कमजोर करब नहि, बरु सामाजिक सरोकारक कलात्मक गहिराइक माँग करब थिक।

चौथी सीमा छन्द-लयक संगतिसँ सम्बन्धित अछि। बोलचालक सहज तुकबन्दी कखनो जनपाठीयता बढ़बैत अछि, मुदा दीर्घ कविता आ भावात्मक लघुपद्य दुनूमे जँ एके प्रकारक समतुकान्ति तथा समान पदान्त दोहराए, तँ शब्दक नूतन तनाव मन्द पड़ैत अछि। मुक्तछन्दक अर्थ तुकक निषेध नहि, बरु लयक आवश्यकतानुसार गढ़न थिक। एहि सन्दर्भमे 'बाढ़िक चित्र'क दृश्य-आधारित गति आ 'आह'क ध्वनि-उलटाव पुस्तकक काव्यशिल्पक अधिक सफल उदाहरण अछि।

१४. मैथिली साहित्यिक परिप्रेक्ष्य आ संग्रहक विशिष्ट स्थान

'अम्बरा'केँ मैथिली आधुनिकताक कोनो एकरेखीय क्रममे अति-आत्मविश्वाससँ स्थापित करब कठिन होएत। संग्रहक तत्कालीन प्रस्तावनामे काव्यभाषाक सार्वजनिक

संकट, मिथिलाक आर्थिक-सांस्कृतिक आधार आ स्थानीय अनुभवक अपरिहार्यतापर जे बल देल गेल अछि, ओ पढ़बाक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक प्रसंग अवश्य अछि। मुदा एकहि संग्रहक मूल्यांकनसँ समस्त समकालीन मैथिली कविताक श्रेणीकरण सिद्ध नहि होइत अछि। एहि दृष्टिसँ हुनकर प्रस्तावनाक तीक्ष्ण प्रशंसा आ कवितासभक वास्तविक उपलब्धि बीच आलोचनात्मक दूरी रखबाक आवश्यकता अछि।

मैथिलीक भाषिक इतिहासक अध्ययन देखबैत अछि जे भाषा, लिपि, मुद्रण आ सामाजिक प्रतिष्ठाक सम्बन्ध जटिल रहल अछि। आधुनिक शोधमे जाति आ मुद्रण-संस्कृतिक सम्बन्धपर उठाओल प्रश्नकेँ 'अम्बरा'क पाठ पर यान्त्रिक रूपसँ नहि लगाओल जा सकैत अछि; तथापि 'जाति', 'माय' आ 'त्रिशंकु'मे भाषिक पहचान आ सामाजिक अपमानक संगति देखबाक लेल ई व्यापक परिप्रेक्ष्य उपयोगी अछि। विशेषतः मैथिलीकेँ केवल उच्चवर्गीय सांस्कृतिक प्रतीक बनाबैक बदला जनजीवनक बहुस्तरीय स्वरकेँ ग्रहण करबाक आग्रह संग्रहक एक मौलिक नैतिक बल बनैत अछि।

काव्येतिहासमे राजदेव मण्डलक स्थान निर्धारित करबाक लेल हुनकर अन्य संग्रह, समकालीन रचनाकारसभ आ तत्कालीन पाठकीय स्वीकृतिक तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक होएत। उपलब्ध एकल संग्रह सँ कविक सम्पूर्ण विकासयात्रा अथवा कोनो निश्चित 'प्रथम' स्थानक दावा करब प्रमाणातीत होएत। मुदा 'अम्बरा'क भीतर कोसी-बाढ़क बहुदृश्यात्मक चित्रण, अन्तर्जातीय विवाह-संकटक आन्तरिक नाटक, जातिगत अपमानक लघु दृश्य, श्रमक देहगत भाषा आ गाछक माध्यमसँ पर्यावरणीय न्याय—ई सभ मिलि एक विशिष्ट सामाजिक-सौन्दर्यात्मक संवेदनाक्षेत्र निश्चय निर्मित करैत अछि।

१५. निष्कर्ष: संवेदनाक विश्वसनीयता आ प्रतिरोधक साहित्यिक मोल

राजदेव मण्डलक 'अम्बरा'क केन्द्रीय उपलब्धि ई अछि जे समाजक उपेक्षित क्षण —आवाज नहि सुनल जाएब, जाति पूछल जाएब, घरक भीतर हिंसा सहब, राहतक प्रतीक्षामे भूखल रहब, फाटल वस्त्र सीबैत रक्त बहब, गाछ कटबाक आशंकामे जीब

—कविताक वैध विषय बनैत अछि। एहि संग्रहमे सामाजिक नैतिकता ऊपरी उपदेश रहि गेलासँ बेसी प्रभावशाली ओतए होइत अछि जतए ओकर सामना कोनो असुरक्षित देह, ठोस वस्तु अथवा उलझल सम्बन्धसँ होइत अछि।

'बाढ़िक चित्र' दया सँ आगू बढ़ि जिम्मेदारीक प्रश्न ठाढ़ करैत अछि; 'चीड़ीक जाति' अपनत्व आ जीवित रहबाक अधिकारक प्रश्न गढ़ैत अछि; 'जाति' सामाजिक परिचयक क्रूर सीमाकेँ छोट दृश्यमे उजागर करैत अछि; 'त्रिशंकु' प्रेमक अन्तरंग क्षेत्रमे जाति-व्यवस्थाक भय देखबैत अछि; 'रंगक खोज' सम्मानक इच्छाकेँ श्रमिक देहक घावसँ जोड़ैत अछि; 'गाछक बलिदान' जीवनक प्रत्यक्ष रक्षक प्रकृतिक श्रेय मांगैत अछि। ई सभ रचना एक-दोसरक नकल नहि, सामाजिक अनुभूतिक अलग-अलग औपचारिक समाधान प्रस्तुत करैत अछि।

आलोचनाक स्तरपर संग्रह पूर्णतः समान बलक नहि: नैतिक निश्चय, पुनरुक्त तुक, प्रत्यक्ष भाषण आ शिल्पक असमानता अनेक स्थाने अर्थक विस्तार रोकैत अछि। तथापि एहि सीमाक बीच कविता जखन अपमानक मौन, बच्चीक चिन्ता, घायल पक्षीक भय अथवा बाढ़ग्रस्त जनक भूखकेँ प्रत्यक्ष अनुभव बनबैत अछि, तखन ओकर साहित्यिक मूल्य निष्कर्षक नारा सँ स्वतन्त्र होइत अछि। 'अम्बरा'केँ ताहि लेल सामाजिक सरोकारयुक्त कविताक मात्र उदाहरण नहि, बरु सरोकार आ काव्यरूपक बीच सतत् संघर्षक प्रतिनिधि संग्रह रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही। ई संघर्षे ओकर स्थायी आलोचनात्मक प्रासंगिकता अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव। अम्बरा। पहिल संस्करण। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१०। ISBN 978-93-80538-30-3।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'प्रस्तावना'। राजदेव मण्डलक अम्बरा मे, पृ. ६–८। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१०।

आंबेडकर, भीमराव रामजी। Annihilation of Caste। १९३६। शैक्षणिक पाठ-संस्करण: Columbia University, https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/about.html।

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist. Translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. Austin: University of Texas Press, 1981.

Buell, Lawrence. The Environmental Imagination: Thoreau, Nature Writing, and the Formation of American Culture. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1995.

Kumar, Lalit. "Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print." Society and Culture in South Asia 12, no. 1 (2026): 82-99. https://doi.org/10.1177/23938617251337694.

Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Cambridge, MA: Harvard University Press, 2011. https://doi.org/10.4159/harvard.9780674061194.

Paiker, Ufaque. "Shadings of Languages: A Study of Maithili Marsīya in Nineteenth-Century Bihar." Asian Ethnology 85, no. 1 (2026). https://doi.org/10.18874/ae.85.1.04.

Williams, Raymond. The Country and the City. New York: Oxford University Press, 1973.

बिहार सरकार, जल संसाधन विभाग। Flood Management Improvement Support Centre। "History of Flood," २००८ विषयक विवरण। https://www.fmiscwrdbihar.gov.in/fmis/historyFlood.aspx।

अध्याय 2

बसुंधरा : धरती, देह आ प्रतिरोध

राजदेव मण्डलक 'बसुंधरा'क समाज-समीक्षात्मक, पर्यावरणीय आ काव्यशास्त्रीय अध्ययन

सार

राजदेव मण्डलक 'बसुंधरा' आधुनिक मैथिली कविताक ओहन संग्रह अछि, जतए धरती केवल प्राकृतिक सौन्दर्यक उपादान नहि, बल्कि उपार्जन, अधिकार, शोषण, प्रेम आ प्रतिरोधक साझा भूमि बनैत अछि। प्रस्तुत अध्ययनक केन्द्रीय प्रतिपाद्य ई अछि जे संग्रहक किसान-जीवन, विस्थापन, मजदूरक अदृश्य श्रम, स्त्री-विरोधी सामुदायिक हिंसा आ नैतिक आत्मालोचन अलग-अलग विषय नहि रहि कऽ परस्पर सम्बद्ध सामाजिक अनुभव बनि जाइत अछि। 'अकाल', 'नँगरा मजदूर', 'कटैत गाछ', 'बीआ', 'बलात्', 'जुलुसक पछुआ' आ सात खण्डक 'डोलनी डाइन'क निकट पाठक आधार पर कविता सभक कथात्मक विन्यास, वक्ता-स्थिति, संवाद, बिम्ब, पुनरुक्ति आ लोकभाषिक लयक विवेचन कएल गेल अछि। पर्यावरणीय आलोचना, अधीनस्थक प्रतिनिधित्व आ लैंगिक हिंसाक सम्बन्धमे उपलब्ध शोधक उपयोग तुलनात्मक विश्लेषणक औजारक रूपमे भेल अछि, कविक घोषित प्रेरणाक प्रमाणक रूपमे नहि। अध्ययन देखबैत अछि जे संग्रहक सर्वाधिक समर्थ क्षण ओ अछि जतए वैचारिक आग्रह मूर्त घटना आ पात्रक आवाजमे परिणत होइत अछि; कमजोर क्षण ओ, जतए पूर्वनिर्धारित उपदेश बिम्बक बहुअर्थी सम्भावनाकेँ संकुचित करैत अछि। एही अन्तर्विरोधक भीतर 'बसुंधरा'क साहित्यिक महत्त्व आ आलोचनात्मक चुनौती दुनू निहित अछि।

बीजशब्द : राजदेव मण्डल, बसुंधरा, मैथिली कविता, किसान, श्रम, डाइन-आरोप, स्त्री-अस्मिता, पर्यावरणीय न्याय, लोकभाषा, सामूहिक उत्तरदायित्व

१. प्रस्तावना : धरतीक नाम, मनुष्यक प्रश्न

'बसुंधरा' शीर्षक पाठककेँ प्रथम दृष्टिमे मातृभूमि, हरियर धरती आ जीवनदायिनी प्रकृतिक ओर उन्मुख करैत अछि। मुदा संग्रहक भीतर प्रवेश करिते धरतीक एहि भावात्मक रूपक संग एकटा असुविधाजनक यथार्थ जुड़ैत अछि : खेतमे बीआ सूखि रहल अछि, किसान पर करजा चढ़ल अछि, मकान बनौनिहार मजदूर ओहि मकानक दुआरसँ अपमानित भऽ घुरा देल जाइत अछि, आ एकटा स्त्रीकेँ सामूहिक भयक नाम पर अपन गाम छोड़बाक विवशता बनैत अछि। कवि भू-दृश्यकेँ निरपेक्ष दृश्य नहि बनबैत; ओ मनुखक देह, सम्बन्ध आ जीविकाक भितरे धरतीक अर्थ खोजैत छथि। संग्रहक सर्वप्रमुख काव्य-प्रश्न एहीसँ निर्मित होइत अछि : जे धरती सबकेँ पाले, ताहिपर ककर अधिकार, ककर श्रम आ ककर आवाज सुनाइ पड़ैत अछि?

संग्रहकेँ केवल 'जनवादी', केवल 'प्रकृतिपरक' अथवा केवल 'आत्मपरक' कहब ओकर बहुस्तरीय अनुभवकेँ छोट करब होयत। कविक स्वर कखनो किसानक सामूहिक 'हम', कखनो घायल मजदूरक एकल विनती, कखनो उत्पीड़ित स्त्रीक प्रतिवाद, कखनो अपन अपराधमे फँसल आत्मक स्वीकारोक्ति आ कखनो अन्धकारसँ जूझैत दीपकक प्रतीक बनैत अछि। एही स्वर-परिवर्तनक कारण संग्रहमे प्रश्नक केन्द्र निश्चित रहैत अछि, मुदा ओकर नैतिक उत्तर एक्के रूपमे नहि अबैत अछि। एहि अध्ययनमे कविताक अर्थ ओकर घटना-संरचना, भाषा, छन्दात्मक प्रवाह आ अन्तर्विरोध सभकेँ एक संग पढ़ि निर्मित कएल जा रहल अछि।

ग्रामीण जीवनक साहित्यिक निरूपणमे रमणीय ग्राम-कल्पना आ वास्तविक श्रम-संघर्षक बीच अन्तर महत्त्वपूर्ण रहल अछि। रेमण्ड विलियम्स ग्राम-नगर सम्बन्धक सांस्कृतिक अध्ययनमे ग्रामीण जीवनकेँ स्थिर, निर्दोष अतीतक रूपमे देखबाक प्रवृत्तिक आलोचना करैत छथि। 'बसुंधरा'क ग्रामीण संसारमे सेहो प्रकृति आ परम्परा

अपने-आप नीक नहि अछि : खेत पोषणक स्थल अछि तँ अभावक सेहो, आ गाम सामुदायिक निकटताक स्थान अछि तँ क्रूर बहिष्कारक सेहो। ई साम्य एकटा विवेचनात्मक सम्बन्ध अछि; कवि पर विलियम्सक प्रत्यक्ष प्रभाव मानबाक कोनो आधार नहि बनैत अछि।

२. संग्रहक रचना-सन्दर्भ आ संरचनात्मक बहुरूपता

संग्रहक प्रथम संस्करण २०१३ मे श्रुति प्रकाशन, दिल्ली सँ प्रकाशित भेल। कविक संक्षिप्त परिचयमे पूर्ववर्ती कविता-संग्रह 'अम्बरा' (२०१०) आ उपन्यास 'हमर टोल' (२०१३) सूचीबद्ध अछि। 'दू शब्द' नामक आरम्भिक वक्तव्यमे कवि अपन लेखनकेँ अविराम 'अन्वेषण' कहैत छथि : मंजिल निश्चित नहि, यात्रा निरन्तर; पाठकसँ भेंटकेँ पुष्प-समर्पणक विनम्र भावमे ग्रहण करैत छथि। ई आत्मघोषणा संग्रहक अनेक कवितामे लौटैत अनिश्चितता, प्रश्न, आत्मसंशोधन आ आगू बढ़बाक इच्छाकेँ बुझबाक उपयोगी कुंजी अछि।

रचना-विन्यास एकसमान नहि अछि। 'अकाल' जकाँ अपेक्षाकृत विस्तृत सामाजिक कविता, 'घरक आँखी', 'हाथ' आ 'दिलक आवाज' जकाँ संक्षिप्त चिन्तनमूलक कविता, 'मूँछक लड़ाइ' जकाँ व्यंग्यात्मक विस्तार, सात खण्डमे विभाजित कथात्मक 'डोलनी डाइन', नौ खण्डक 'डायरीक पन्ना' आ छोट-छोट गीतांशक 'कनेक सुनू'—ई सभ रूप एकहि संग्रहमे उपस्थित अछि। एहिसँ कवि एकटा स्थिर 'लिरिकल' मुद्रा पर आश्रित नहि रहैत छथि। तथापि लयक साधन प्रायः अन्त्यानुप्रास, दोहरान आ बोलचालक आवेग अछि; जटिल छन्दानुशासन ओकर प्राथमिक आग्रह नहि देखाइत अछि।

आरम्भक समर्पण उपेक्षित रहितो कर्म-साधनामे लीन रहनिहार लोककेँ सम्बोधित अछि। एहि समर्पणक अर्थ केवल भावुक आदर नहि; 'नँगरा मजदूर', 'अकाल' आ 'जय हे किसान' पढ़लापर ई स्पष्ट होइत अछि जे 'कर्म' कविता-संसारमे अदृश्य समाज-निर्माणक केन्द्र अछि। समर्पण आ कविता सभक बीच एहि अर्थगत संवादसँ संग्रहक नैतिक आधार बनैत अछि।

३. 'अकाल' : भूख, जल आ विकासक असमान राजनीति

'अकाल' संग्रहक आरम्भिक विस्तृत कविता अछि। ई अकालकेँ केवल बरखा नहि होयबाक दैवी दुर्घटना नहि मानैत अछि। सूखल बीआ, फाटल धरती, दूब खोजैत मवेशी, उघार खेत, पुरान करजा, महँग अन्न, बेटी-बेटाक पढ़ाइ आ विवाहक चिन्ता—एक-एक दृश्य मिलि अकालक सामाजिक आयाम बनबैत अछि। कविता मौसम-विज्ञानक जानकारी देबाक अपेक्षा मानवीय संकटक अर्थनिर्माण करैत अछि। 'असुर अकाल'क रूपक संकटकेँ मूर्त करैत अछि, मुदा पाठककेँ असुरसँ बेसी व्यवहारिक संस्थाक विफलता देखाइत अछि।

किसानक संकटमे तीन परत एक संग उपस्थित अछि : प्राकृतिक जलाभाव, उत्पादन आ बाजारक संस्थागत कठिनाइ, तथा संकटसँ जन्मल प्रवासनक भय। किसान करजासँ दबल अछि; अगिला खेतीक बीआ नष्ट भऽ रहल अछि; अन्नक दाम, सिंचाइ, बाजार आ भंडारणक प्रश्न ओकर जीवन-योजनाकेँ तोड़ैत अछि। परदेशमे जाइत श्रमिककेँ रोग, खराब भोजन-निवास आ उपार्जनक असुरक्षाक आशंका सतबैत अछि। ई क्रम देखबैत अछि जे अकालक पीड़ा धानक खेतमे आरम्भ भेलापर सेहो घर, शिक्षा आ देह धरि फैलैत अछि।

कविता गाछ काटबाक मनुष्यक कृत्यकेँ जल-संकटक संग जोड़ैत अछि आ सरकारसँ जल-प्रबन्ध, नलकूप आ धार-नदीक उपाय माँगैत अछि। एतय पर्यावरणीय जिम्मेवारी आ प्रशासनिक उत्तरदायित्वक एक साझा रूपरेखा बनैत अछि। मुदा जल-संकटक समाधानकेँ केवल तटबन्धक निर्माणमे समेटब पर्याप्त नहि; कविता स्वयं जे बहुआयामी संकट उजागर करैत अछि, ओकर भीतर जल-नियोजनक सामाजिक न्याय, रख-रखाव आ वितरणक प्रश्नो निहित अछि। ई सीमाकेँ रचनाक विरुद्ध नहि, ओकर भीतर उत्पन्न आलोचनात्मक सम्भावनाक रूपमे देखबाक चाही।

रॉब निक्सनक 'धीरे-धीरे घटित हिंसा'क अवधारणा पर्यावरणीय क्षति आ निर्धन लोकक जीवनपर ओकर दीर्घकालिक प्रभाव बुझबाक उपयोगी सैद्धान्तिक सन्दर्भ

अछि। 'अकाल'मे हिंसा केवल एक दिनक घटना नहि : ऋण, सूखल बीआ, शिक्षा-हानि आ भविष्यक असुरक्षा ओकर समयकेँ लम्बा करैत अछि। तथापि कविताक स्थानीय विवरणकेँ निक्सनक तर्कक केवल उदाहरण बनायब उचित नहि; अंचलविशेषक कृषि-शब्दावली ओकर अपन ज्ञान-व्यवस्था बनबैत अछि।

४. 'नँगरा मजदूर' : निर्मित मकान आ विस्थापित निर्माता

'नँगरा मजदूर'मे एकटा मजदूर ओहि सातमहला मकानकेँ देखबाक इच्छा लऽ अबैत अछि, जकर निर्माणमे ओकर श्रम लागल छल। निर्माण-कार्यक दुर्घटनाक बाद टाँग कटौलासँ ओकर जान बचल; सहोदरक मृत्यु भेल; तैयो मजदूरक स्मृतिमे निर्माणक अभिमान बचल अछि। दरबान ओकरा मालिकक विशेषाधिकारवला स्थानसँ घुड़कि दैत अछि। एहने कथात्मक स्थिति कविता-भाषाक सम्पूर्ण नैतिक तनाव उत्पन्न करैत अछि : सम्पत्तिक स्वामित्व जकर नहि, निर्माणक सच्चा इतिहास तकर देहमे लिखल अछि।

मजदूरक आत्मकथनमे आत्मसम्मान आ विवशता दुनू अछि। ओ भीख, चोरी अथवा बेइमानीक आरोप नकारैत अछि; अपन श्रमकेँ परिचयक प्रमाण मानैत अछि। दरबानक वाणी एतय केवल व्यक्ति-विशेषक क्रूरता नहि, वर्ग-संरचनाक भाषायी रूप अछि। "ई जगह अछि विशिष्ट लोकक लेल"—एहि अर्थक आदेश श्रम आ उपभोगक बीच दीवार ठाढ़ करैत अछि। दीवार ईंटक नहि, पहचान आ प्रवेश-अधिकारक अछि। कविता पाठककेँ प्रश्न करैत अछि जे 'विशिष्ट' के? निर्माणक स्वामी, ओकर रक्षक, अथवा अपन देहक अंश दऽ निर्माण करनिहार?

एहि कविताक कलात्मक सफलता उपदेशसँ नहि, दृश्य-विपर्याससँ अबैत अछि। मजदूर अपन निर्मित उँचाइक सोझाँ स्वयं समाजक निम्नतम दर्जामे राखल जाइत अछि। सातमहला भवनक ऊर्ध्वगामी रेखा आ घायल श्रमिकक लाचार देहक विपरीतता एकटा तीक्ष्ण बिम्ब बनैत अछि। अन्तमे मजदूरक चुप्पीक भीतर दूर धरि

पहुँचैत आवाजक संकेत अछि; कविता न्याय-प्राप्तिक सफल कथा नहि गढ़ैत, बल्कि अपमानक अनुगूँज छोड़ि दैत अछि।

५. बीआ, गाछ आ बसुंधरा : जीवित प्रकृतिक नैतिक उपस्थिति

'बीआ'मे कवि बीजकेँ निस्पन्द वस्तु नहि, भविष्यमुखी जीवनक केन्द्र मानैत छथि। माटि, पानि, हवा आ प्रकाश ओकर विकासक शर्त अछि; बीआक भीतर गाछक सम्भावना लुकाएल अछि। एहि बिम्बक विशेषता कारण-क्रम अछि : सूक्ष्म बीजसँ अंकुर, अंकुरसँ गाछ, गाछसँ प्राणवायु आ फैलैत जीवन। कविक दृष्टिमे छोट वस्तुक महत्त्व ओकर वर्तमान आकारमे नहि, ओकर सम्बन्धक विस्तारमे अछि। एहि प्रकार प्रकृति मानव-लाभक साधन होइतहुँ अपन आन्तरिक सक्रियताक संग उपस्थित अछि।

'कटैत गाछ'मे स्थिति उलटि जाइत अछि। गाछकेँ बोलबाक अधिकार भेटैत अछि; ओ मनुष्यसँ पुछैत अछि जे सेवा, फल-फूल आ पोषण देलाक बदला ओकरा प्राणदण्ड किएक भेटल। एतय मानवीकरण केवल अलंकार नहि, प्रकृतिक पक्षमे न्यायिक गवाही बनैत अछि। गाछ अपन कर्मकेँ 'उपकार' आ मनुष्यक आचरणकेँ 'शोषण' नाम दैत अछि। कवि पर्यावरण-विनाशकेँ नैतिक असमानताक भाषामे अनूदित करैत छथि। 'बीआ' जीवनक आशा अछि तँ 'कटैत गाछ' ओहि आशाक असमय हत्या।

'नमन'मे धरतीक प्रति कृतज्ञताक उद्गार अछि। शीर्षक आ कविताक सम्बोधन कृतज्ञताक धार्मिक-सांस्कृतिक भाषा चुनैत अछि, मुदा संग्रहक अन्य भागमे धरती एकटा निर्मम भौतिक परिस्थिति सेहो अछि। एहि द्वैतकेँ भूलि केवल 'धरती-माता'क स्तुतिक पाठ कएल जाए तँ संग्रहक मूल तनाव नष्ट भऽ जायत। 'अकाल'क फाटल धरती आ 'नमन'क सुमन-उपजौनिहार बसुंधरा एक-दोसरक विरोध नहि, एकहि जीवन-निर्भरताक दू परिस्थिति अछि।

लॉरेन्स ब्यूएल प्रकृतिसँ सम्बन्धित साहित्यिक कल्पनाक सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थपर बल दैत छथि। एहि परिप्रेक्ष्यसँ 'बीआ', 'खसैत बुन्द', 'पसरैत शाखा' आ 'नमन'क प्रकृतिचित्र पढ़लापर देखाइत अछि जे मौसम, वनस्पति आ स्मृति एकटा

साझा अर्थ-परिसर बनबैत अछि। एकटा सीमा सेहो अछि : कखनो-कखनो प्रकृतिप्रेमक सार्वत्रिक सम्बोधन ओकर ठोस पारिस्थितिक सम्बन्धकेँ अपेक्षाकृत सरल बना दैत अछि।

६. 'पोसा परबा' : मनुष्यक प्रेम आ उपभोगक भयावह संगति

'पोसा परबा'क कथा एकटा पालतू परबाक घरक सदस्य बनि जाएबाक स्नेहमय विवरणसँ आरम्भ होइत अछि। दाना, परिचय, माथ-हाथपर बैसब आ बाल-बच्चाक खेल—ई सभ विवरण अपनापनक संसार बनबैत अछि। मुदा पाहुनक स्वागतमे मांसक चाह उठिते पोसल पक्षी मारल जाइत अछि। अन्तिम घटनामे प्रकृति आ मनुष्यक सम्बन्धक असमानता उद्घाटित होइत अछि : जकरा पोसल गेल, वैह भक्षणक वस्तु बनि गेल। एहिमे हिंसाक आकस्मिकता नहि, घरेलू उपयोगितावादक निरन्तरता अछि।

एहि रचनाकेँ केवल शाकाहारक प्रचार बुझब ओकर साहित्यिक विडम्बना छोट करब होयत। कविता जखन घरेलू स्नेह आ अतिथि-सत्कारकेँ एकहि घरमे हिंसाक विरुद्ध खड़ा करैत अछि, तखन पाठक अपन दैनिक नैतिकताक असंगतिसँ टकराइत अछि। 'कटैत गाछ'मे उपकारक बदला दण्ड भेटैत अछि; 'पोसा परबा'मे पोषणक बदला वध। दुनू कविता मिलि मनुष्यक आत्मकेन्द्रित नैतिकता पर प्रश्न खड़ा करैत अछि।

७. 'डोलनी डाइन' : अफवाहसँ प्रतिरोध धरि सात खण्डक कथायात्रा

'डोलनी डाइन' संग्रहक सर्वाधिक विस्तृत आ संरचनागत दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण काव्यकथा अछि। सात क्रमिक खण्ड मिलि डोलनी नामक स्त्रीक पारिवारिक त्रासदी, सामाजिक कलंक, पंचायतक हिंसक भूमिका आ अन्ततः ओकर प्रतिरोधक विकास देखबैत अछि। एतय 'डाइन' कोनो सिद्ध अलौकिक सत्ता नहि; गामक सामूहिक कल्पनामे बनाओल आरोप अछि। कथाक शुरुआत घास काटैत स्त्रीसभक फुसफुसाहटसँ होइत अछि। अफवाह लोकक साक्ष्य नहि, भयक सामूहिक विनिमयसँ 'सत्य' बनैत

अछि। एहि आरम्भमे कथाकार प्रत्यक्ष उपदेश देबाक बजाय आरोप जन्मबाक प्रक्रिया देखबैत छथि।

पहिल खण्डक घसबाहिन सभ डोलनीक एकल चाल, दुपहरियाक सुनसान समय आ मृत सन्तानक स्मृतिक अंश जोड़ि निष्कर्ष बनबैत छथि। डोलनीक दुःखक वास्तविक इतिहास सुनेबाक पहिने ओकर आचरणकेँ जंतर-मंतरक लक्षण मानि लेल जाइत अछि। दोसर खण्डमे एहि गपक विस्तार होइत अछि : अलग-अलग स्वर अपन-अपन रंग चढ़बैत अछि, आ 'जाँच'क शब्द तथ्यमूलक प्रक्रियाक बजाय पूर्वनिर्धारित दोष-निर्णयक औपचारिकता बनि जाइत अछि। पंचक कठोर दण्डक माँग आरोपकेँ सामाजिक संस्थाक अधिकार दैत अछि।

तेसर खण्ड घटनाक सामाजिक पृष्ठभूमि दैत अछि : सासु-ससुरक मृत्यु, परिवारक बिखराव, झगड़ा, पतिक बीमारी आ लगातार श्रमक बोझ। अपनेमे गप करनिहार थाकल स्त्रीक व्यवहारकेँ लोक 'डाइन'क पहचान मानैत छथि। ई प्रसंग मार्मिक एहि कारणसँ अछि जे थकान, अकेलापन आ शोक जकाँ सामान्य अनुभवकेँ स्त्रीक अपराधक चिह्न बनाओल जाइत अछि। डोलनीक मानवीय असुरक्षा सामुदायिक भयक ईंधन बनि जाइत अछि।

चारिम खण्डमे दीर्घ प्रतीक्षाक बाद जन्मल पुत्रक मृत्यु आ ओकर अन्तिम दर्शनक इच्छासँ कथा गहिराइत अछि। बालकक देह लऽ जेनिहार लोक डोलनीक विनती नहि सुनैत; टूटल खिड़कीसँ देखैत माएक छवि जीवित मातृत्वकेँ सामाजिक निर्णयसँ बाहर राखबाक संकेत बनैत अछि। एतय मातृत्वक पीड़ा जेना कथाक मूल साक्ष्य अछि, समाज ओकरा सुनबामे असमर्थ अछि। ई असुनल आवाज आगूक कथा बुझबाक कुंजी बनैत अछि।

पाँचम खण्डमे एकटा अन्य बालकक मृत्युक बाद आरोप घातक बनैत अछि। बीमारी आ उपचारक विफलताक तथ्य भीड़क प्रतिशोधक ज्वालामे दबि जाइत अछि। फनका नामक व्यक्ति डोलनी पर हत्याक आरोप लगा कऽ ओकरा मारबाक धमकी दैत अछि; पंचायत वैचारिक अविवेकक सुधार करबाक बजाय हिंसाकेँ संस्थागत स्वर दैत

अछि। सामूहिक आदेशक समयमे असहमतिक आवाज दुर्बल पड़ि जाइत अछि। एहि घटना-क्रममे 'गाम' एकटा भौगोलिक इकाइ नहि, हिंसाक अनियन्त्रित जनमत बनैत अछि।

छठम खण्ड विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण पहिल बेर डोलनी अपन कर्मक व्याख्या स्वयं दैत अछि। ओ मृत पुत्रकेँ एक बेर देखबाक लेल ओकर देह निकालल, सजा-सँवारि देखल आ पुनः गाड़ि देल—एहि घटनाक ओकर स्वकथन अफवाहक सम्पूर्ण संरचनाकेँ उलटि दैत अछि। जकरा गामक लोक अभिचारक प्रमाण मानि रहल छल, से मातृत्वक असह्य विरहक क्रिया छल। पतिक विश्वासक सेहो डगमगायब आ पुनः ओकर संग भागबाक निर्णय—ई दुनू कथा-क्षण विवाहक भीतर विश्वासक संकट आ मानव-सहयोगक सम्भावना एक साथ राखैत अछि।

सातम खण्डमे भागैत दम्पतीक सोझाँ आगूओ संकट आबि ठाढ़ होइत अछि। डोलनीक हाथक हँसुआ, जे कथा-आरम्भमे घास काटबाक श्रमिक औजार छल, अन्तमे आत्मरक्षाक प्रतीक बनैत अछि। ई बिम्ब-परिवर्तन अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि : श्रमक उपकरण प्रतिरोधक उपकरण बनि जाइत अछि। डोलनी पुरुष-प्रधान समाजक अन्यायकेँ चिन्हैत अछि आ अपन अस्तित्वक रक्षाक प्रतिज्ञा करैत अछि। अन्तिम दृश्य पूर्ण सुरक्षा अथवा न्याय-प्राप्तिक घोषणा नहि करैत; ओ नूतन कथाक सम्भावनाकेँ उघाड़ैत अछि। एहि अपूर्णतामे रचनाक नैतिक सच्चाइ अछि—प्रतिरोध संघर्षक आरम्भ अछि, व्यवस्थाक स्वतः सुधार नहि।

'डोलनी डाइन'क कथा आरम्भमे सामूहिक वार्ता, बीचमे आरोपक औपचारिकता आ अन्तमे पीड़िताक स्वकथन द्वारा विकसित होइत अछि। एहि क्रमकेँ 'ककर बोली प्रमाण मानल जाए?' प्रश्नक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक अधीनस्थ स्त्रीक प्रतिनिधित्व सम्बन्धी बहस एहि पाठक संग उपयोगी संवाद स्थापित करैत अछि : स्त्री बोलैत छथि, मुदा ओकर बोल समाज द्वारा विश्वासयोग्य मानल नहि जाइत अछि। डोलनीक अन्तिम प्रतिवाद एहि असमान श्रवण-व्यवस्थाकेँ चुनौती दैत अछि। एतय सैद्धान्तिक समानता प्रत्यक्ष लेखकीय प्रभावक प्रमाण नहि अछि।

भारतीय प्रसंगमे डाइन-आरोप पर केन्द्रित अध्ययन सभ देखबैत अछि जे बीमारी, दुर्भाग्य, सम्पत्तिक तनाव, पितृसत्तात्मक नियंत्रण आ सामूहिक बहिष्कार एहन घटनाक महत्त्वपूर्ण तत्व भऽ सकैत अछि। 'डोलनी डाइन'मे देखल गेल बीमारी आ मृत्युकेँ प्रतिशोधक प्रमाण बनायबाक प्रक्रिया एहि व्यापक शोधसँ तुलनीय अछि। मुदा कवितामे डोलनीक जाति, भूमि-स्वामित्व अथवा कानूनी परिणामक निश्चित जानकारी नहि देल गेल अछि; तेँ एहि विशिष्ट पात्रक सम्बन्धमे एहन निष्कर्ष जोड़ब पाठक सीमा लाँघब होयत।

८. 'बलात्' आ 'असल मरद' : देहपर हिंसा आ पुरुषत्वक विडम्बना

'बलात्'मे घटना घटलाक बादक सामाजिक प्रक्रिया केन्द्रमे अछि। पंचायत, दण्ड, जुर्माना आ थाना—ई सभ संस्था उपस्थित अछि, मुदा पीड़िता एहीसँ आतंकित अछि जे ओकरा सभक सोझाँ अपन ऊपर भेल हिंसाक विवरण फेर-फेर कहय पड़त। कविता कानूनी न्यायक आवश्यकता नकारैत नहि; ओ केवल ई देखबैत अछि जे पीड़िताक अनुभवक संवेदनशील सुनवाइक बिना लोकप्रदर्शित न्याय स्वयं एकटा दोसर पीड़ा भऽ सकैत अछि। पुनरावृत्त बयानक भय, लाजक बोझ आ भीड़समक्ष असहायता एतय स्त्रीक दृष्टिसँ सामाजिक प्रक्रियाक परीक्षण करैत अछि।

'असल मरद' अति संक्षिप्त कविता होइतहुँ गम्भीर व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि। घरेलू विवादमे अपन गलती नहि माननिहार, क्रोधमे गरजनिहार पुरुष अपन हिंसक मुद्रा पर 'मरद' होयबाक गर्व करैत अछि। अन्तिम उच्चारण आत्मस्वीकृतिक प्रशंसा नहि, उलटा आत्म-उपहासक सम्भावना खोलैत अछि। जकरा समाज साहस कहि सकैत अछि, कवि ओकरा असंयम, क्रोध आ उत्तरदायित्वहीनताक रूपमे देखबैत छथि। एहि कारण 'बलात्' आ 'असल मरद' स्त्री-विरोधी हिंसाक दू अलग संस्थागत रूप—सार्वजनिक सुनवाइक असंवेदनशीलता आ घरक अधिकारवादी पुरुषत्व—उजागर करैत अछि।

‘डोलनी डाइन’मे स्त्रीकेँ बोलबाक अवसर देबाक संरचना जतय विस्तृत अछि, ओतय ‘बलात्’मे पीड़िताक पीड़ा सीमित पंक्तिमे आ जाइत अछि। एतेक भिन्न आकारक बावजूद दुनूमे एक साझा प्रश्न अछि : सामूहिक नैतिकता स्त्रीक अनुभवकेँ सुनैत अछि अथवा अपन पूर्वनिर्धारित निर्णय ओकरापर थोपैत अछि? ई संग्रहक स्त्री-संवेदनाक सर्वाधिक सुसंगत सूत्र अछि।

९. परिवार, सम्पत्ति आ पीढ़ीक नैतिक दूरी

‘उलहन’मे अकालसँ पीड़ित व्यक्ति अपन भायसँ सहायता माँगैत अछि; उत्तरमे उपेक्षा आ तानाक अनुभव करैत अछि। ‘बाबाक बखारी’ आ अपन हिस्सा पर अधिकारक संकेत परिवारकेँ भावनात्मक संस्था संग-संग संसाधन-वितरणक स्थल बना दैत अछि। सामाजिक संकटमे रिश्ताक पुरान भाषा बाँचल रहैत अछि, मुदा भोजन आ अधिकारक व्यवहारमे ओ खाली पड़ि सकैत अछि। एतय अकाल केवल खेतक नहि, सहोदर सम्बन्धक सेहो अछि।

‘कामना’मे बुजुर्ग व्यक्तिक इच्छासँ कथा शुरू होइत अछि : पुत्रसभ जुआन भेल, घरक भार उठा लेलक, आब शान्तिपूर्वक जीवन बिताएब। मुदा पोताक कथनसँ सम्पत्ति-विवाद, पारिवारिक स्वार्थ आ वृद्धक असुरक्षा सामने अबैत अछि। ऋतुक परिवर्तनक आशाक भीतर पिताक अस्तित्व पर मँडरबैत खतरा बनि जाइत अछि। कविता विशेष रूपसँ प्रभावकारी एहि कारण अछि जे कथा बच्चाक वाणी सँ विचित्र सत्य उघाड़ैत अछि; ओकर सरल बोल वृद्धक भविष्यक असह्य राजनीतिक अर्थ पैदा करैत अछि।

एहि दू रचनामे स्त्री-पुरुष अथवा बूढ़-युवाक स्थिर नैतिक विभाजन नहि, बल्कि सम्पत्ति-संसाधनक आसपास बनैत मानव व्यवहारक संकट प्रमुख अछि। परिवारक भीतर सहानुभूतिक भाषा अधिकारक लेन-देन सँ कटि सकैत अछि—ई संग्रहक गृहस्थ-यथार्थक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक प्रतिपादन अछि। बीना अग्रवालक ग्रामीण दक्षिण एशियामे भूमि-अधिकार आ सामाजिक स्थितिक सम्बन्ध पर अध्ययन एहन

पारिवारिक संसाधन-संघर्षक व्यापक पृष्ठभूमि बुझबाक सहायक अछि; मुदा कविता-विशेषक पात्रक सम्पत्ति-अधिकारक अघोषित विवरण स्वयं जोड़ब उचित नहि।

१०. 'जुलुसक पछुआ' : भीड़क अपराध आ नैतिक सह-अपराधिता

'जुलुसक पछुआ' संग्रहक एकटा विशिष्ट राजनीतिक-नैतिक कविता अछि। हजार-हजार टाँग-हाथ होइतहुँ एकटा 'माथ' होयबाक बिम्ब भीड़क निजविवेक नष्ट भऽ जाएबाक स्थितिक तीक्ष्ण संक्षेप अछि। जुलुसमे सम्मिलित लोक एक जनाक विरोध-संकेतकेँ हिंसक अपराधमे बदलि दैत छथि; हत्या भेलाक बाद भीड़ बिना रुके आगू बढ़ि जाइत अछि। एहिमे क्रान्तिक घोषणाक भाषाक आ भीड़क वास्तविक आचरणक बीच अन्तर उद्घाटित होइत अछि।

कविताक पहिल व्यक्ति वक्ता अपनाकेँ जुलुसक केवल पछुआरी अंश मानैत अछि, मुदा अन्तमे ओ भीड़क अपराधसँ मुक्त होयबाक दावा नहि करैत। ओकर आत्मप्रश्न—जखन हम भीड़क अंग छी, तखन अपराधक हिस्सा हमरोपर किएक नहि?—संग्रहक नैतिक जटिलताकेँ ऊँच स्तरपर लऽ जाइत अछि। इमानदार राजनीतिक कविता केवल शत्रुकेँ दोषी नहि बनबैत, अपन उपस्थितिकेँ सेहो प्रश्नांकित करैत अछि। एतय कवि 'क्रान्ति' शब्दक उत्सव नहि, विवेकहीन सामूहिकताक परिणति देखबैत छथि।

'देश गीत'मे सामूहिक एकता, स्वतन्त्रता आ देशक उन्नतिक आवाहन अछि; 'जुलुसक पछुआ'मे सामूहिकताक हिंसक सम्भावना। एहि विपरीत रचनाक सहअस्तित्व संग्रहमे विचारक महत्त्वपूर्ण द्वन्द्व पैदा करैत अछि। एकता नैतिक मूल्य तखने अछि जखन ओ व्यक्तिक जिम्मेदारीकेँ समाप्त नहि करए। एहि दृष्टिसँ 'जुलुसक पछुआ' राष्ट्र-भावना अथवा जनसंघर्षक अन्धस्वीकृतिक विरुद्ध आन्तरिक सावधानीक कविता अछि।

११. पंचायत, नेता आ सार्वजनिक जीवनक व्यंग्य

'मूँछक लड़ाइ'मे प्रतिष्ठाक छोट प्रतीक अनावश्यक टकरावक आधार बनैत अछि। मूँछक आकार, रंग आ चाल अनेक, मुदा सामाजिक सम्मानक दम्भ एके जकाँ अछि; परिणाममे परस्पर लड़ेवाला पक्षक घर-परिवार आ जीविकापर संकट अबैत अछि। हास्यात्मक गणना आ बारम्बार उच्चरित 'मूँछ' अन्ततः सामाजिक आत्मनाशक व्यंग्य बनि जाइत अछि। प्रतीकक गाम-गौरवसँ सम्बन्ध राजनीतिक स्वार्थक लघुरूप सेहो बनैत अछि।

'हएत अगारी'क समूह पहिने बिखरल, फेर नेता-केन्द्रित एकता बनबैत अछि; अन्तमे नेता स्वयं लोभक जालमे फँसि जाइत अछि। कविता जनसमूहक आशा आ नेतृत्वक विफलताक बीच अस्थिर सम्बन्ध रेखांकित करैत अछि। 'मनुखदेवा'मे मनुष्यकेँ देवता बनाओलाक बाद ओकर मानवीय कमजोरी उजागर होइत अछि, मुदा पूजकक प्रवृत्ति सहजहि समाप्त नहि होइत। दुनू कवितामे व्यक्ति-पूजा एकटा आलोच्य वस्तु अछि—असाधारण बना देल व्यक्तिसँ यथार्थक जवाबदेही कठिन भऽ जाइत अछि।

'बाबा केर लाठी'मे उत्तराधिकारमे भेटल लाठी सामाजिक धाक आ पुरान अधिकारक चिह्न बनैत अछि। मित्रक संवाद समान अधिकार आ नव बाटक आवश्यकता पर जोर दैत अछि। पीढ़ीक बदलैत मानदण्ड एतय वैचारिक तकरारक रूपमे प्रकट अछि। 'डोलनी डाइन'क पंच, 'हएत अगारी'क नेता आ 'बाबा केर लाठी'क उत्तराधिकार—तीनू प्रसंगमे कविता वैधताक स्रोत पूछैत अछि : परम्परा, पद अथवा जनशक्ति मात्रसँ कोनो निर्णय न्यायसंगत भऽ जाइत अछि की?

१२. आत्मालोचनक कविता : 'ठक', 'चोरि', 'इमानदारी' आ 'झूठक गियान'

'बसुंधरा'क नैतिक दृष्टि केवल बाहरी दोषारोपण पर आधारित नहि। 'ठक'मे वक्ता अपन ठगीक व्यवहार स्वीकार करैत अछि आ स्वयं ठकल जायलापर दोसरा लोकक

पीड़ा बुझैत अछि। एहिमे अनुभवजन्य आत्मज्ञानक महत्त्व अछि : जतय उपदेश पहिने नहि पहुँचल, ओतय चोट पहुँचैत अछि। कविताक आत्मदोषक मुद्रा सामाजिक आलोचनाकेँ उपदेशक एकतरफा स्थानसँ हटबैत अछि।

'चोरि'मे चोर बनल व्यक्ति किछु समयमे प्रतिष्ठा पबैत अछि, मुदा भीतर अपराधबोधक शोर चलैत अछि। 'इमानदारी'मे मूल्यक बजारू दाम, शहरी-देहाती प्रतिष्ठाक अन्तर आ बेइमानीक सामाजिक सम्मान पर कटाक्ष अछि। 'झूठक गियान'मे पिता अपन सन्तानकेँ अवसरवादक शिक्षा दैत अछि; से शिक्षा पलटि ओकरा अपने विरुद्ध खड़ा करैत अछि। एहि तीनू रचनामे भ्रष्टाचार एकटा व्यक्तिक खराब आदत मात्र नहि, सामाजिक सम्बन्धमे फेरफार करनिहार संचारी प्रवृत्ति बनैत अछि।

कवितासभक एहन समष्टि पढ़लापर एकटा द्वन्द्व स्पष्ट होइत अछि। कखनो कवि ईमानदार-अनैतिक, प्रकाश-अन्धकारक साफ विरोध बनबैत छथि; कखनो 'हमहूँ'क स्वीकारोक्ति सँ ओहि विरोधक रेखा अस्थिर करैत छथि। दोसर प्रकार अधिक प्रभावकारी अछि, कारण ओ पाठककेँ अपन नैतिक स्थितिक असुविधासँ सामना करबैत अछि।

१३. 'डायरीक पन्ना' : आत्मकथ्य, सत्ता आ आत्मसुधारक श्रृंखला

नौ खण्डक 'डायरीक पन्ना' एकटा लम्बा एकरेखीय कथानक नहि; ई मनःस्थितिक बदलैत स्वरूपक क्रमिक लघु-टिप्पणी अछि। पहिल पन्नामे महल आ पाइक खनखनाहट शान्तिक विपरीत स्थितिमे अछि। दोसर पन्नामे सचक समर्थन लेल प्रमाणक आवश्यकता, तेसरमे अपन इतिहास आ अपन विफलताक स्वामित्व, चारिममे स्वसुधारक अनिवार्यता व्यक्त होइत अछि। खण्ड सभकेँ साथ पढ़लापर 'अपन' शब्द नित नूतन अर्थ ग्रहण करैत अछि : अपनेक धन, अपन पक्षक सच, अपन इतिहास आ अपन भूल।

पाँचम पन्नामे सबकेँ परास्त करनिहार वक्ता अपनासँ हारि जाइत अछि। छठममे 'कुरसी' देहक पीठमे गड़ल भार बनैत अछि; ओकरा हटौने बिना सीधा ठाढ़ होयब

सम्भव नहि। राजनीतिक सत्ताक प्रतीक आ मानसिक दासत्वक संकेत एकहि बिम्बमे मिलैत अछि। सातम पन्नामे सर्वोत्तम मित्र अपन भीतर भेटैत अछि। एहि क्रममे बाह्य विजयसँ आत्मपराजय, पद-सत्तासँ मुक्तिक चाह आ आत्मसंवादक सम्भावना धरि यात्रा बनैत अछि।

आठम पन्ना निर्भय माननिहार मनुष्यक भयग्रस्त भऽ जाएबाक क्षण देखबैत अछि; नवम सामूहिक फुलवाड़ी, भिन्न-भिन्न फूलक सुवास आ सहअस्तित्वक गीत बनैत अछि। एहि समापनमे एकान्त आत्मालोचन सामूहिक जीवनक ओर खुलैत अछि। मुदा श्रृंखलाक सभ खण्ड समान कलात्मक घनत्व नहि रखैत अछि : किछुमे घटना आ दृश्य सघन अछि, किछुमे नैतिक सूत्र पूर्वानुमेय बनि जाइत अछि। एहि विषमता सहित श्रृंखला संग्रहक आत्मपरीक्षणक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक दस्तावेज बनैत अछि।

१४. अन्तःकरणक रूपक : नदी, छाँह, अँहार आ दर्पण

'दूटा धारा'मे मनक भीतरक विरोधी धारासभ एकाकार नहि भऽ सकबाक कारण यात्रा अवरुद्ध अछि। नदी एतय वास्तविक जलप्रवाहक स्थान पर भीतरी संशयक रूपक अछि। 'अभ्यास'मे अगाध पानिमे अटकल मनुष्य पूर्वतैयारीक अभाव बुझैत अछि; 'हेलवार'मे संकट आएलापर असल तैराक होयबाक कसौटी सामने अबैत अछि। एहि तीनू कवितामे जल मनोवैज्ञानिक अनिश्चितता आ व्यवहारिक साहसक संयुक्त प्रतीक अछि।

'छाँहक रूप'मे अपन छायासँ भागैत व्यक्ति अन्ततः बुझैत अछि जे छाया देहसँ पृथक नहि भऽ सकैत अछि। 'असल रूप'मे दर्पणक सोझाँ भय उत्पन्न होइत अछि; आत्मदर्शन अपनेसँ बचबाक चाह जगबैत अछि। 'मनक मोड़'मे मनक तलवारसँ भीतरी आसक्तिकेँ काटब जकाँ हिंसक कल्पना अबैत अछि। एहि रचना सभमे कवि बाहरी खलनायकसँ हटि भीतरक भय, अस्वीकार आ आत्मविभाजनक बिम्ब बनबैत छथि। एही स्तर पर 'बसुंधरा'क समाज-चिन्ता आत्म-चिन्तासँ अलग नहि रहैत अछि।

अँहार-इजोतक प्रतिपक्ष 'छीपपर दीप', 'इजोतक वस्त्र' आ 'मनक दुआर'मे बारम्बार उपस्थित अछि। दीपक अपन देह जरा कऽ बाट देखबैत अछि; आँचर तर बचल दीया दोसरक भीतर नूतन उजास जगबैत अछि; बन्द मनक किवाड़ खोलब संवादक प्राथमिक शर्त बनैत अछि। प्रकाश एतय धर्मोपदेशक सामान्य चिह्न होइतहुँ सामाजिक संचार आ असमानताक विरोधमे नैतिक कर्मक संकेत बनैत अछि। 'छीपपर दीप'मे रंग, रूप आ जातिक भेद नहि देखबाक कल्पना विशेष उल्लेखनीय अछि।

१५. प्रेम, प्रतीक्षा आ स्वरक स्मृतिशास्त्र

समाज-केन्द्रित कविता सभक बीच 'घरक आँखी', 'चिर प्रतीक्षा', 'गीतक पूर्व संगीत' आ 'स्वरक चेन्ह' व्यक्तिगत भावभूमिक निर्माण करैत अछि। 'घरक आँखी'मे अनुपस्थित व्यक्ति स्मृतिक भीतर एतेक बसि गेल अछि जे बाहरी दृष्टि आ भीतरी छवि एकाकार होयबाक प्रश्न उठैत अछि। 'चिर प्रतीक्षा' घर-दुआरक सजावट, सोलहो शृंगार आ टुटैत निद्राक माध्यमसँ प्रतीक्षाक समयकेँ देहक अनुभव बनबैत अछि। एहि कविता सभमे शब्दावली ग्रामीण घरेलू जीवनसँ आयल अछि, मुदा विषादक अनुभव व्यापक अछि।

'गीतक पूर्व संगीत' श्रव्य संकेतक माध्यमसँ अनुपस्थित प्रियक स्मृति जगबैत अछि; 'स्वरक चेन्ह'मे आवाज पहचानक आधार बनैत अछि, जे खेत-खरिहान, नदी-नाला आ देश-कोस पार कऽ मिलनक आशा राखैत अछि। 'दग्ध सुर'मे कली-पिकक संवाद राग-विरागक दारुण क्षण सृजित करैत अछि। एतय प्रेमक भाव केवल नेह नहि, समय, दूरी, गलतफहमी आ मौनक भीतर बनैत अर्थ अछि। तखनहुँ कतिपय पंक्तिमे प्रचलित रूपक—फूल, शूल, कोयल, मधुमास—एतेक दोहराइत अछि जे अनुभूतिक नवता अपेक्षाकृत कमि जाइत अछि।

१६. भाषा-संरचना : लोकबोलक लय आ तर्कक आग्रह

संग्रहक भाषाक सबसँ प्रभावकारी विशेषता संवादमुखरता अछि। ‘किएक’, ‘केना’, ‘कहू’, ‘सुनू’, ‘यौ’, ‘गै’ जकाँ सम्बोधन आ प्रश्न पाठककेँ कवितासँ बाहरक श्रोता नहि रहय दैत; ओ लोकविवादक प्रतिभागी बनि जाइत अछि। ‘अकाल’मे किसान, ‘डोलनी डाइन’मे घसबाहिन-पंच-पति-डोलनी, ‘नँगरा मजदूर’मे मजदूर-दरबान आ ‘कामना’मे बाबा-पोता—एहि सभमे बोलचाल काव्यक घटना-संरचनाकेँ आगू बढ़बैत अछि। गामक बोली भाषिक अलंकरण नहि, सामाजिक शक्ति-सन्तुलनक माध्यम बनैत अछि।

अन्त्यानुप्रासक सहज विन्यास, छोट पंक्ति, एके शब्दक पुनरावृत्ति आ ध्वनि-अनुकरणक प्रयोग संग्रहकेँ श्रव्य बनबैत अछि। ‘खसैत बुन्द’क बून-बून, गुन-गुन आ झुन-झुनक अनुक्रम वर्षाक बिम्बक ध्वनिक शरीर बनबैत अछि। ‘जय हे किसान’मे ध्रुवपद लोकगायनक सामूहिक उच्चारणक सम्भावना जगबैत अछि। ‘मूँछक लड़ाइ’मे अतिशय सूचीकरण व्यंग्यक गति दैत अछि। अल्प पंक्तिक ‘कनेक सुनू’मे सूक्ति-जकाँ संक्षिप्तता भेटैत अछि। शब्दक अर्थ पंक्तिक ध्वनि-गति संग बदलैत अछि।

एहि भाषामे प्रचलित देसी शब्द—बीआ, चास, बथान, खलिहान, घसबाहिन, हँसुआ, घूर, परती, कादो—कविताकेँ मिथिलाक कृषिजन्य लोकानुभवसँ जोड़ैत अछि। काव्य-भाषाक प्रतिष्ठा एतय संस्कृतनिष्ठ कठिन पदावलीसँ नहि, स्थानीय जीवनक जटिलताकेँ व्यक्त करबाक क्षमतासँ निर्धारित अछि। मुदा एके ध्वनि-साम्यक पाछू बहुत दौड़लासँ कखनो वाक्य स्वाभाविक गतिक बदला तुकक अधीन भऽ जाइत अछि। कविताक सामर्थ्य ओकर लोकलय अछि, ओकर जोखिम सेहो ओहीमे अन्तर्निहित अछि।

१७. कथात्मकता, दृष्टिबिन्दु आ काव्यात्मक दृश्य

‘बसुंधरा’मे कथा आ कविताक बीचक विभाजन सदा स्पष्ट नहि। ‘डोलनी डाइन’ घटनाक अनुक्रम, वक्ता-परिवर्तन आ दृश्यगत तनावसँ विकसित होइत अछि; ‘नँगरा

मजदूर’ एकटा घटनाक माध्यमसँ वर्गसम्बन्धक पूरा चरित्र खोलैत अछि; ‘कामना’ अन्तिम पलटलासँ मनःस्थिति बदलैत अछि; ‘पोसा परबा’ घरेलू आत्मीयतासँ अन्तिम हिंसाक टकराव बनबैत अछि। एहि रचनासभक ‘काव्य’ होयबाक शर्त केवल तुक नहि, घटनाकेँ बिम्ब आ आवाजसँ सघन बनायब अछि।

विशेषतः ‘डोलनी डाइन’क पहिल खण्डमे लोकक कथन पाठककेँ भ्रमित कऽ सकैत अछि, मुदा आगूक खण्ड स्त्रीक अनुभव सामने आनि पहिल कथनकेँ अविश्वसनीय साबित करैत अछि। एहि दृष्टिबिन्दु-परिवर्तनसँ पाठक स्वयं सेहो आरोप सुनि निर्णय कऽ लेबाक प्रवृत्ति पर पुनर्विचार करैत अछि। ‘जुलुसक पछुआ’मे अपराधी भीड़क भीतर स्थित प्रथम पुरुष वक्ता बाहर ठाढ़ नैतिक न्यायाधीश नहि; ओ स्वयं प्रश्नक कटघरामे अछि। ई दू रचना संग्रहक कथात्मक प्रयोगक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

काव्यात्मक दृश्य निर्माणक एकटा सिद्ध उपाय वस्तु-प्रतीकक पुनःअर्थांकन अछि। डोलनीक हँसुआ श्रमसँ प्रतिरोध धरि जाइत अछि; मजदूरक निर्मित मकान अधिकारहीनताक प्रमाण बनैत अछि; कुरसी प्रतिष्ठाक जगह बोझ बनैत अछि; दीपक अपन देहक क्षयसँ लोकप्रकाश बनबैत अछि। एहि वस्तुसभमे विचार प्रत्यक्ष उपदेशसँ अधिक सघन आ स्मरणीय बनैत अछि।

१८. ‘जय हे किसान’ : श्रमक स्तुति आ विरोधाभासक स्मृति

संग्रहक अन्तिम कविता ‘जय हे किसान’ श्रमक चक्रक रूपरेखा बनबैत अछि। परती तोड़ब, ढेप फोड़ब, कादो करब, रोपनी, माघक कनकनी आ वैशाखक घाम—कृषि श्रमक कालक्रम ध्रुवपदसँ जुड़ि सामूहिक आदरक गीत बनैत अछि। किसानकेँ देशक अभिमान कहल गेल अछि, मुदा ओ निरन्तर अपमान सेहो सहैत अछि। एहि विरोधाभासक कारण गीत साधारण प्रशस्ति नहि रहि सामाजिक प्रश्न बनैत अछि।

‘अकाल’ आ ‘जय हे किसान’केँ संग्रहक आरम्भ आ समापनक वैचारिक संवादक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। पहिल कविता अभावक ठोस विवेचना करैत अछि; अन्तिम कविता श्रमक गरिमा उजागर करैत अछि। एकटा अन्यायक विवेचन, दोसर

श्रमिकक सार्वजनिक सम्मान। मुदा सम्मानक नारा ओहि आर्थिक समस्या स्वतः दूर नहि करैत, जकर विवरण ‘अकाल’मे अछि। एही कारण गीतकेँ आरम्भिक कविता संग पढ़लापर ओकर भावप्रवणता समृद्ध होइत अछि आ ओकर सीमित समाधान-वृत्ति सेहो देखाइत अछि।

१९. उपलब्धि आ सीमा : प्रत्यक्ष कथन बनाम बहुअर्थी काव्य

संग्रहक पहिल उपलब्धि सामाजिक रूपसँ उपेक्षित पात्रकेँ काव्यक केन्द्रमे अनबाक साहस अछि। मजदूरक अपने निर्मित मकानसँ निष्कासन, डोलनीक ममत्वक डाइन-आरोपमे विकृति, किसानक करजा-मजूरीक मार्मिकता आ जुलुसक पछुआ सदस्यक अपराध-बोध—ई सभ अनुभव मैथिली कवितामे सामान्यीकृत नैतिक उद्घोषक बदला घटनात्मक सत्यक रूपमे उपस्थित अछि। कविताक भाषा लोकजीवनक वस्तु आ सम्बोधनसँ जुड़ल रहैत अछि; एतय वैचारिकता जीवनसँ पृथक विमर्श नहि बनैत।

दोसर उपलब्धि कविक ‘हम’क बदलैत प्रकृति अछि। जँ ‘अकाल’क ‘हम’ किसानक वर्गीय अनुभव व्यक्त करैत अछि, तँ ‘ठक’क ‘हम’ अपराध स्वीकार करैत अछि, ‘जुलुसक पछुआ’क ‘हम’ भीड़क सह-अपराधी बनैत अछि, आ ‘छाँहक रूप’क ‘हम’ अपन अस्तित्वसँ भागैत अछि। एहिमे बहुतेक रचनाक अन्तर्निहित आत्मालोचनात्मक मूल्य देखाइत अछि। एतय पाठक सँ सहमति केवल माँगल नहि जाइत; कखनो ओकरा असहमति आ आत्मप्रश्नक स्थितिमे सेहो राखल जाइत अछि।

कलात्मक सीमाक पहिल रूप व्याख्यात्मक अधिकता अछि। किछु कवितामे बिम्बक स्वायत्तता विकसित होयबाक बाद कवि ओकर नैतिक निष्कर्ष स्वयं कहि दैत छथि, जाहिसँ पाठकक अर्थ-सृजनक स्थान घटि जाइत अछि। प्रकाश-अन्धकार, सत्य-झूठ, फूल-काँट जकाँ द्विपदी विरोध कखनो संकीर्ण अर्थक काज करैत अछि। खास तौर पर लघु कवितामे अन्त्यानुप्रासक कारण अनुभव अपेक्षाकृत सामान्य सूत्रमे परिणत भऽ जाइत अछि। ई सीमा विषयक महत्त्व कम नहि करैत, मुदा कविता आ घोषणापत्रक बीच भेद बनेबाक आवश्यकता देखबैत अछि।

द्वितीय सीमा संग्रहक संरचनात्मक असमतलता अछि। सात-खण्डक ‘डोलनी डाइन’ विस्तृत चरित्र-परिवर्तन प्रस्तुत करैत अछि, जखन कि अन्य अनेक कविता सभ एके विचार अथवा एक बिम्ब पर समाप्त भऽ जाइत अछि। एहि बहुरूपताकेँ मात्र दोष मानब अनुचित; तथापि भिन्न रचनाक कलात्मक स्तर समान नहि अछि। प्रेमक कवितामे परम्परित सौन्दर्य-संकेतक पुनरावृत्ति आ विचारप्रधान कवितामे निष्कर्षक पूर्वानुमेयता जँ कठोर सम्पादनसँ कसल जा सकित, तँ समग्र संग्रहक प्रभाव आर अधिक तीक्ष्ण बनित।

तेसर आलोचनात्मक प्रश्न प्रतिनिधित्वक अछि। ‘डोलनी डाइन’मे पीड़ित स्त्रीक आवाज अन्ततः प्रभावकारी बनैत अछि, मुदा ओकर कथाक मर्म बुझबाक पहिने विस्तृत समय सामुदायिक पुरुष-वर्चस्वक निर्णयक भीतर बितैत अछि। एहि विलम्बक कलात्मक प्रयोजन अछि—अफवाहक निर्माण देखायब—मुदा पाठककेँ ई सेहो पूछबाक चाही जे स्त्रीक सत्य मान्य करबाक अधिकार आखिर ककर हाथमे रहैत अछि। संग्रह एहि प्रश्नक सम्पूर्ण समाधान नहि, मुदा ओकरा तीक्ष्ण बनबैत अछि।

२०. निष्कर्ष : ‘बसुंधरा’क साहित्यिक अवदान

‘बसुंधरा’क मूल उपलब्धि एहि बातमे अछि जे ओ धरतीकेँ भौगोलिक पृष्ठभूमिसँ सामाजिक न्याय, स्मृति, श्रम आ प्रतिरोधक जीवित सम्बन्धमे बदलैत अछि। कवि गाछकेँ बोलबैत छथि, किसानकेँ ओकर अभावक इतिहास सहित देखैत छथि, मजदूरकेँ निर्माणक इतिहासक वाहक बनबैत छथि, आ डोलनीकेँ भीड़क ‘डाइन’क आरोपसँ बाहर अपन कथा कहबाक अधिकार दैत छथि। संग्रहक नैतिक भूगोलमे अधिकार आ अपमान, जीवन आ विनाश, प्रेम आ हिंसा एक्के धरती पर सहअस्तित्व रखैत अछि।

काव्य-मूल्यांकनक दृष्टिसँ ‘डोलनी डाइन’क कथात्मक संरचना, ‘नँगरा मजदूर’क दृश्यात्मक विरोधाभास, ‘जुलुसक पछुआ’क आत्म-आरोप, ‘पोसा परबा’क तीक्ष्ण अन्तिम मोड़ आ ‘कटैत गाछ’क पर्यावरणीय मानवीकरण विशेष स्मरणीय अछि। ई

रचना सभ प्रमाणित करैत अछि जे कविक सभसँ समर्थ भाषा तखन निकलैत अछि जखन विचार पात्रक स्थिति, वस्तुक रूप आ अनुभवक आन्तरिक तनावमे रूपान्तरित होइत अछि। जतय कविता सीधे निष्कर्षक उद्घोष बनि जाइत अछि, ओतय साहित्यिक बहुअर्थिता कमजोर पड़ैत अछि।

अतः 'बसुंधरा'कैं न सर्वथा निर्दोष जनकाव्यक आदर्श बनायब उचित अछि, न ओकर प्रत्यक्ष लोकलयकैं शिल्पक अपर्याप्तताक नाम पर अस्वीकार करब। एहि संग्रहक मूल्य ओकर उद्बोधित प्रश्न सभमे अछि : श्रमक स्वामी के, समुदाय ककर गवाही सुनैत अछि, भीड़क भीतर व्यक्तिक दोष कतय शुरू होइत अछि, आ पृथ्वीक जीवनदायिनी उपस्थिति मनुष्यक व्यवहारमे न्याय किएक नहि बनि पबैत अछि? एहि प्रश्न सभक संग 'बसुंधरा' आधुनिक मैथिली कविताक सामाजिक संवेदना आ काव्यात्मक आत्मालोचनक महत्त्वपूर्ण पाठ बनि उपस्थित रहैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव। बसुंधरा। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१३।

Agarwal, Bina. A Field of One's Own: Gender and Land Rights in South Asia. Cambridge: Cambridge University Press, 1994.

Baruah, Chitralekha, and Mini Bhattacharyya Thakur. "Accusing Women as Witches: A Gendered Outlook." The Oriental Anthropologist 19, no. 2 (2019): 208-218. https://doi.org/10.1177/0972558X19862397.

Buell, Lawrence. The Environmental Imagination: Thoreau, Nature Writing, and the Formation of American Culture. Cambridge, MA: Harvard University Press, 1995.

Kelkar, Govind, Sarika Sinha, and Dev Nathan. "Witch Hunts in India: The Nexus with Forms of Exclusion." In Social

Exclusion and Policies of Inclusion, 93–112. Singapore: Springer, 2022. https://doi.org/10.1007/978-981-16-9773-9_6.

Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Cambridge, MA: Harvard University Press, 2011. https://doi.org/10.4159/harvard.9780674061194.

Spivak, Gayatri Chakravorty. “Can the Subaltern Speak?” In Marxism and the Interpretation of Culture, edited by Cary Nelson and Lawrence Grossberg, 271–313. Urbana: University of Illinois Press, 1988.

Williams, Raymond. The Country and the City. London: Chatto & Windus, 1973.

अध्याय 3

हमर टोल : टोलक सामाजिक शरीर आ प्रतिरोध

सारांश

राजदेव मण्डलक 'हमर टोल' मिथिलाक ग्रामीण जीवनक एहन आख्यान अछि जाहिमे एकटा टोलक छोट-छोट घटनासभ जाति, श्रम, लिंग, धर्माधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आ चुनावी राजनीतिक व्यापक संरचनासँ जुड़ैत अछि। एहि अध्ययनक केन्द्रीय प्रतिपाद्य ई अछि जे उपन्यासक वास्तविक नायक कोनो एकल व्यक्ति नहि, अपितु परस्पर टकराइत आवाज, संस्थान आ सम्बन्धसँ बनल टोलक सामूहिक जीवन अछि। अजय आ शीलाक प्रेम, निर्मलाक निःसन्तानतासँ उपजल अपमान, खेलावन भगतक धार्मिक सत्ता, भोज-पंचैतीक दबाव आ सामूहिक हिंसा परस्पर स्वतन्त्र प्रसंग नहि रहि, एक-दोसराक अर्थ खोलैत अछि। लेखमे निकट पाठ-पठनक संग बहुवाचिकता, आख्यान-दृष्टि, स्थानक सामाजिक उत्पादन, प्रभुत्व-प्रतिरोध आ स्त्रीक क्षमता सम्बन्धी चयनित सैद्धान्तिक अवधारणाक आलोचनात्मक प्रयोग कएल गेल अछि। लोकगीत, भगैत, राजा सलहेसक नाच, बोलचालक विडम्बना तथा गाछ, अन्हार, इजोत, आगि आ पानिक बिम्ब उपन्यासक अर्थ-रचनामे सक्रिय देखल गेल अछि। निष्कर्षतः 'हमर टोल' रूढ़िक प्रतिरोधक पक्षधर होइतहुँ सुधारवादी व्यक्तिनायकक सीमा, सामूहिक विवेकक विफलता आ हिंसक सामाजिक यथार्थक जटिलता कैँ एकत्र उपस्थित करैत अछि; एकर अन्त आशा आ संकट—दुनूक सम्भावना खुला राखैत अछि।

बीज-शब्द : हमर टोल; राजदेव मण्डल; मैथिली उपन्यास; धनुकटोली; जाति; स्त्री-अस्मिता; लोकसंस्कृति; बहुवाचिकता; सामाजिक प्रतिरोध

१. प्रस्तावना : टोलक भीतर समूच समाज

मैथिली उपन्यासक ग्रामीण संसारक मूल्याङ्कन केवल गामक दृश्य, लोकबोली अथवा रीति-रिवाजक सूची बनबैत नहि होइछ। साहित्यिक प्रश्न ई अछि जे रचना गामक भीतर अधिकारक बँटवारा कोना देखबैत अछि, ककर आवाज सुनबा योग्य मानल जाइत अछि आ ककर श्रम तथा जीवनक पीड़ा सामाजिक नियमक नामपर अदृश्य कऽ देल जाइत अछि। राजदेव मण्डलक 'हमर टोल' एहि प्रश्नक एक विशिष्ट उत्तर प्रस्तुत करैत अछि। एहि रचनामे टोल ठाम-मात्र नहि, सम्बन्धक जाल, स्मृतिक भण्डार, सामूहिक निर्णयक मंच आ हिंसाक सम्भावित क्षेत्र अछि। 'हमर' सर्वनाम आत्मीयताक संकेत अवश्य करैत अछि, मुदा कथानक क्रमशः देखबैत अछि जे एहि आत्मीयताक भीतर स्वार्थ, निषेध, बहिष्कार आ प्रतिरोधक अनेक परत उपस्थित अछि।

उपन्यासक प्रकाशन-विवरण अनुसार प्रथम संस्करण २०१२ मे श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। कथानक एकटा धनुकटोलीक जीवनक मध्यसँ विकसित होइत अछि। आरम्भमे रहस्य-छविसँ उभरैत टोल, आगू धार्मिक आयोजन, विवाह, श्राद्ध-भोज, घरेलू कलह, खेती, पलायन, अनौपचारिक शिक्षा, स्थानीय न्याय आ मतदानक विविध दृश्यसभक केन्द्र बनि जाइत अछि। एहि घटनासमूहक बीच अजयक सुधारक चेतना आ शीलाक संग ओकर प्रेम एकटा महत्त्वपूर्ण कथा-रेखा बनबैत अछि; तथापि एकरे सम्पूर्ण उपन्यास मानि लेब टोलक अन्य आवाजक उपेक्षा होयत।

एहि समीक्षाक मूल प्रश्न तीन अछि : सामुदायिक निकटता सत्ता-संरचनामे कोना परिवर्तित होइत अछि; विश्वासक भाषामे चलैत दमनक प्रतिरोध स्त्री आ युवा पात्र सभ कोना करैत अछि; आ कथावस्तुक विखण्डित, संवादप्रधान रूप कोना सामाजिक यथार्थक जटिलता कैँ सँभालैत अछि। ई अध्ययन मूल्याङ्कनक क्रममे उपन्यासक उपलब्धि आ सीमा दुनू कैँ बराबर महत्त्व दैत अछि।

२. पाठ-पठनक दृष्टि आ आलोचनात्मक आधार

अध्ययनक आधार उपन्यासक आरम्भसँ अन्त धरि उपस्थित घटनाक परस्पर सम्बन्ध, पात्रक संवाद, कथावाचकक हस्तक्षेप आ आवर्तित प्रतीकक निकट पठन अछि। सैद्धान्तिक अवधारणा कृतिपर आरोपित तैयार साँचा नहि, अपितु पाठमे देखाइत घटनाक स्पष्ट व्याख्या करबाक उपकरण रूपमे प्रयुक्त अछि। बाख्तिनक बहुवाचिकता सामाजिक बोलीक संघर्ष बुझबाक सुविधा दैत अछि; जेनेटक आख्यान-विश्लेषण वर्णन, संवाद, दृष्टि आ समय-संचालनक भेद देखबैत अछि; रेमंड विलियम्सक ग्राम-चिन्तन ग्रामीण जीवनक आदर्शीकरणसँ बचबैत अछि।

सामाजिक सम्बन्धक विवेचनमे बुरदियूक अभ्यास आ प्रतीकात्मक प्रतिष्ठाक विचार, जेम्स सी. स्कॉटक प्रभुत्व आ प्रतिरोधक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष स्वर, तथा नुसबामक स्त्री-क्षमता सम्बन्धी तर्क उपयोगी सन्दर्भ प्रदान करैत अछि। एहि विद्वान सभक वैचारिक पृष्ठभूमि अलग-अलग अछि; तें हुनकर अवधारणा एक-दोसराक पर्याय नहि। उपन्यासक प्रमाण जे सीमा धरि अनुमति दैत अछि, विवेचन ओतबे धरि राखल गेल अछि।

३. पूर्वरूप : स्वप्न, जल आ टोलक उत्पत्ति

कथाक पूर्वरूपमे विशाल जलराशि, धनुकटोलीक विचित्र आकृति, शंखनाद, बाबाजी आ रक्तरञ्जित दृष्टिक बीच एकटा छोट टोल उभरैत अछि। 'सपना' आ 'सत्य'क अन्तर स्वयं कथावाचक प्रश्नरूपमे राखैत अछि। एहि आरम्भक महत्त्व केवल रहस्योत्पादन नहि। जाहि टोलक जन्म देखबाक दावा कएल जाइत अछि, ओ स्थिर भूगोल नहि; जलसँ उभरैत, अनेक लोक-वस्तु समेटैत, पुनः परिवर्तित होइत सामाजिक आकृति अछि।

एहि आरम्भमे धार्मिक शब्दावली आ अतियथार्थ दृश्य एकसंग उपस्थित अछि। ई पाठक कैँ संकेत दैत अछि जे अगिला कथामे विश्वासक संसारकैँ सरलतासँ खारिज नहि कएल जा सकत; ओकर आकर्षण, भय, लोकानुभूति आ दमनकारी प्रयोग सभ

एकहि सांस्कृतिक संरचनामे भेटत। उपन्यासक अन्तमे आगिक बीच पानिमे आश्रय लैत प्रेमी-द्वयक दृश्य एहि प्रारम्भिक जल-बिम्बसँ अर्थपूर्ण सम्बन्ध बनबैत अछि। पहिल दृश्य टोलक निर्माणक प्रश्न खोलैत अछि, अन्तिम दृश्य ओकर नैतिक पुनर्निर्माणक सम्भावना।

४. टोल : सामूहिक नायक आ सामाजिक स्थान

'हमर टोल'क कथास्थान घर, गहवर, चौबटिया, पीपरक गाछ, आड़ि, पोखरि, खेत, विद्यालय आ मालिक-टोलक बीच लगातार फैलैत-सिकुड़ैत अछि। कोनो स्थल तटस्थ नहि। गहवर धार्मिक प्रतिष्ठाक केन्द्र अछि, मुदा ओहि ठाम स्त्रीक देहपर नियन्त्रणक अनुष्ठान सेहो होइत अछि। चौबटिया भेटघाटक खुला स्थान अछि, मुदा अफवाह, निर्णय आ भीड़क दिशानिर्देशनक माध्यमो बनि जाइत अछि। पीपरक छाँह अध्ययनक सम्भावित विद्यालय बनैत अछि, जखन कि स्थापित विद्यालयक लाभ परम्परागत प्रभुत्वशाली टोलमे सीमित रहबाक प्रसंग सुनाओल जाइत अछि।

स्थानक एहन विभाजन सम्पत्ति आ मान-सम्मानक असमान वितरणसँ जुड़ल अछि। एक समूहक पूजा वा भोज दोसर समूहक अनिवार्य दायित्व भऽ जाइत अछि। विद्यालयक स्थान बदललासँ ज्ञानक पहुँच बदलैत अछि। श्रद्धा-सम्मत गाछक स्वामित्व दोसरक नाम दर्ज भेलासँ ओकर फल, छाँह आ लकड़ीक उपयोग बदलि जाइत अछि। लेफेब्रक 'सामाजिक रूपेँ उत्पादित स्थान'क विचार एहि बिन्दुपर सुसंगत अछि : भौतिक दूरी स्वयं सामाजिक शक्ति द्वारा अर्थवान बनाओल जाइत अछि।

टोलक पात्र सभ परस्पर चिन्हाइत छथि, तथापि 'सभ एक-दोसरक दुःख बुझैत अछि' एहन निष्कर्ष कथामे समर्थन नहि पबैत। संकटमे लोक एकत्र होइत अछि, मुदा ई जमघट कखनो सहानुभूति आ कखनो तमाशा अथवा उत्पीड़न बनि जाइत अछि। सामाजिक एकजुटताक एहि द्वैधमे उपन्यासक मूल आलोचनात्मक ऊर्जा अछि।

५. अजय : शिक्षित प्रतिरोध आ ओकर अन्तर्विरोध

अजय कॉलेजक पढ़ाइ पूरा कऽ गाम लौटैत अछि; उपयुक्त नौकरी नहि भेटबाक अनुभव ओकरा बेरोजगार शिक्षित युवाक असुरक्षासँ जोड़ैत अछि। अजयक पिता झटकलाल ओकर शिक्षामे अधिक खर्च करबाक स्वप्न पालने छलाह। गाममे लौटला पर अजय कैँ शहरी अध्ययन आ स्थानीय शक्ति-संरचना बीचक दूरी चुभैत अछि। ओ समाजक 'जड़ता' बदलबाक, बच्चा सभ कैँ पढ़ेबाक, रूढ़ि-समर्थित अन्याय रोकबाक संकल्प करैत अछि। एहि रूपमे ओ नायक-अधिकारक वारिस नहि, अपितु बाधित सामाजिक उन्नतिक एक असहज प्रतिनिधि अछि।

अजयक शिक्षा ओकरा व्यवहारमे मूर्त होइत अछि : ओ आमक गाछ काटबाक विरोध करैत अछि; सर्पदंशसँ पीड़ित मनमा कैँ चिकित्सालय पहुँचाबबाक आग्रह करैत अछि; गाछ तर पढ़ाइ प्रारम्भ करैत अछि; मृत्युभोजक बाध्यता नकारैत अछि; चुनावमे मतदान करबाक लेल लोक कैँ प्रेरित करैत अछि; आ निर्मलाक देहपर भगतक आक्रमण देखिकैँ हस्तक्षेप करैत अछि। केवल विचारक घोषणा नहि, एहेन कार्रवाईक बहुलता अजय कैँ रचनाक मुख्य प्रेरक शक्ति बनबैत अछि।

तथापि ओ सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान उद्धारक नहि। मनमाक मृत्यु चिकित्सा-सुविधाक अनुपलब्धताक संगहि अजयक तर्कक सामाजिक अस्वीकृतिक प्रसंग बनैत अछि। बच्चा सभक आपसी जातीय झगड़ा ओकर विद्यालयमे पहुँचि जाइत अछि। मृत्युभोज नकारला पर ओकर विरुद्ध सामाजिक विरोध बढ़ैत अछि, मुदा एक क्षणमे कोनो वैकल्पिक सामुदायिक संस्था खड़ा नहि कऽ पबैत। एहि विफलता सभसँ पात्र अधिक मानवीय बनैत अछि : व्यक्तिगत साहस आवश्यक अछि, पर्याप्त नहि।

६. निर्मला अथवा धर्मडीहीवाली : देह, मातृत्व आ स्वायत्तता

जगेसरक पत्नी अपन जन्मनाम 'निर्मला' छोड़ि सासुरक दृष्टिमे 'धर्मडीहीवाली' बनि जाइत अछि। एहि नामान्तरणमे स्त्रीक स्वतन्त्र पहचानक स्थानपर ओकर नैहरक भूगोल आरोपित अछि। निःसन्तानताक दोष एकतरफा ओकर देहपर राखल जाइत

अछि; पति दोसर विवाहक विचार करैत अछि; पड़ोसी ओकरा विषये अश्लील टिप्पणी करैत अछि; आ पंचायतक निर्णय ओकर वैवाहिक अस्तित्व कैँ बचबैतहुँ मातृत्वक अनिवार्यता बदलि नहि पबैत।

निर्मला निष्क्रिय पीड़िता नहि। प्रारम्भिक अनुष्ठानमे खेलावन भगतक अनुचित स्पर्शपर ओ प्रतिकार करैत अछि। पतिक प्रहारक दृश्यमे सेहो ओ विरोधक भाषा बोलैत अछि; कखनो प्रत्यक्ष हाथ उठबैत, कखनो समाजक सोझाँ न्याय मँगबाक घोषणा करैत अछि। मुदा सामाजिक संरक्षणक अभाव ओकर विकल्प सीमित करैत अछि। आरोग्य, आर्थिक साधन, सुरक्षित आवागमन आ वैवाहिक सम्मान सभ कमजोर पड़ला पर ओ फेर भगतक शरणमे पहुँचैत अछि। एहिमे व्यक्तिक तथाकथित 'अतार्किकता'सँ अधिक विवशता आ संरचनागत अभाव देखब आवश्यक अछि।

निर्मलाक देहपर भूत उतारबाक दावामे खेलावन भगतक अधिकार धीरे-धीरे यौन-अधिकारक दावामे बदलैत अछि। चौबटियाक एकान्त अनुष्ठान, अज्ञात पेयक सेवन आ वस्त्र हटेबाक प्रयास स्त्रीक समर्पण प्राप्त करबाक हिंसक प्रयत्न अछि; एहि प्रसंग कैँ श्रद्धाक चमत्कार अथवा प्रेम-प्रसंगक रूपमे पढ़ब पाठकक प्रति अन्याय होयत। अजयक हस्तक्षेप शारीरिक आक्रमण रोकैत अछि, मुदा उपन्यासक बादक प्रसंग दर्शबैत अछि जे समुदाय भगतक दावापर संशय करबाक बदला ओकर पक्षमे विश्वास राखि सकैत अछि।

अन्तिम संकटमे निर्मलाक हँसुआ उठब स्वतन्त्र स्त्री-स्वरक पुनर्प्रत्यावर्तन अछि। ओ केवल 'बचाओल गेल' पात्र नहि रहैत; अपन देहसँ सम्बन्धित अनुभव कैँ सामूहिक प्रतिरोधक क्रियामे रूपान्तरित करैत अछि। नुसबामक क्षमता-दृष्टिसँ ई प्रसंग देखलापर स्पष्ट होइत अछि जे सम्मानजनक जीवन मात्र निजी इच्छाशक्तिसँ नहि, वास्तविक विकल्प आ सामाजिक अवसरसँ बनैत अछि।

७. खेलावन भगत : धार्मिक पूँजीक अर्थनीति

खेलावन भगत भय, वंशपरम्परागत विशेषज्ञता, पूजा-सामग्री आ चेलाक संगठित उपस्थिति द्वारा अधिकार प्राप्त करैत अछि। सन्तान, रोग, सर्पदंश, भूत-प्रेत अथवा अशुभ घटनाक व्याख्या एकहि अनुष्ठानिक व्यवस्थामे देल जाइत अछि। उपचारक असफलता, सरकारी सुविधाक कमी आ निर्धनताक कारण लोक ओकर शरण जाइत अछि। एहि निर्भरता कैँ मात्र 'अज्ञानी जनताक भूल' मानि छोड़ब उपन्यासक सामाजिक तीक्ष्णता कम कऽ देत।

मनमाक अस्वस्थताक प्रसंगमे भगतक झाड़फूँक आ अजयक चिकित्सालयक आग्रहक टकराव विशेष अर्थपूर्ण अछि। लोक चिकित्सालयक दूरी, सड़कक अभाव आ वाहनक अनुपलब्धताक उल्लेख करैत अछि। असल विफलता चमत्कार-विश्वास आ सार्वजनिक संरचनाक अनुपस्थिति दुनूक संयोग अछि। मनमाक मृत्यु उपन्यासक सुधारवादी पक्षमे एक कटु बाधा अछि : सही ज्ञान जखन संस्थागत सहारासँ वञ्चित हो, तखन ओ अपने बलपर जीवन नहि बचा पबैत।

भगतक नाटकीय 'भूत-संघर्ष'क बाद लोकक ओकरापर विश्वास करबाक प्रसंग ज्ञान-विवादक निर्णायक मोड़ अछि। चोटग्रस्त भगत अपन चोट कैँ लोकहितमे भेल अलौकिक युद्धक प्रमाण रूपमे पेश करैत अछि। प्रमाणक अर्थक ई उलटाव महत्त्वपूर्ण अछि : जे घटना ओकर अनैतिकता उजागर करबाक चाही, ओ सामुदायिक कथा कहबाक शक्ति द्वारा फेर प्रतिष्ठाक साधन बनि जाइत अछि। स्कॉटक प्रभुत्व-विमर्शसँ प्रेरित दृष्टिमे ई 'ककर व्याख्या सार्वजनिक सत्य बनत' तकर संघर्ष अछि।

८. जाति, पंचैती आ न्याय-वितरणक विडम्बना

जगेसर-निर्मलाक विवादपर बैसल पंचायत सामाजिक न्याय नहि, जातीय अनुशासन, पुरुष-स्वार्थ आ लेन-देनक अस्थिर गठजोड़ रूपैँ सोझाँ अबैत अछि। पंच सभक भाषा देवतासमान निर्णयक दावा करैत अछि, मुदा तिनकर व्यक्तिगत लाभ, भोज, भुस्सा, धोती आ जमीनपर नजरि सेहो कथामे उजागर होइत अछि। निर्णय

पत्नीक प्रति मारपीटक आलोचना करैतहुँ निःसन्तानता पर दोसर विवाहक विकल्प वैध मानि लैत अछि; अर्थात् अन्याय रोकबाक नामपर लैंगिक असमानता कैँ कायम राखैत अछि।

अकलू मड़रक परिवारक जातीय बहिष्कार श्राद्धभोजक असमर्थतासँ जुड़ल अछि। खेती-बाड़ी, अकाल आ रोजी-रोटीक संकटकैँ ध्यानमे राखबाक बदला समाज 'आगि-पानि बन्द' करैत अछि। बेटी लीलाक विवाहक अवसरपर बहिष्कार सामाजिक संसाधनक अभाव रूपमे पुनः उभरैत अछि। स्त्री सभक गीत गाबय आबब, परस्पर आश्रय आ सामाजिक मर्यादाक बीचक तनातनी दिखबैत अछि जे बहिष्कार सम्पूर्ण मानवीय सम्बन्ध कैँ समाप्त नहि कऽ पबैत।

अजयक पिताक निधनक बाद भोज करबाक माँग पुनः उठैत अछि। परिवारक रोगावस्थाक समय सहायता नहि देबयवाला लोक मृत्युक बाद अनिवार्य आतिथ्य चाहैत अछि। एहि प्रसंगमे संस्कारक सामुदायिक अर्थ आ आर्थिक दण्डक वास्तविकता अलग कऽ देखाओल गेल अछि। भोजन अथवा श्राद्ध अपनेमे आलोचनाक विषय नहि; निर्धन परिवारपर प्रतिष्ठा रक्षार्थ थोपल गेल अनिवार्य खर्च आलोचनाक लक्ष्य अछि।

उपन्यासक एक विशेष उपलब्धि ई अछि जे उत्पीड़न कैँ केवल 'ऊपरक जाति बनाम नीचाँक जाति'क एकरेखीय प्रतिद्वन्द्वमे समेटि नहि दैत। धनुकटोलीक भीतरक गुटबाजी, एकहि समुदायमे भिन्न स्तरक स्वार्थ, बाह्य प्रभुत्वसँ मिलीभगत आ स्त्री-विरोधी मूल्य ई स्पष्ट करैत अछि जे अधिकारक असमानता अनेक सम्बन्धक बीच संचरित होइत अछि। जातीय गौरवक भाषण अस्मिताक ऊर्जा तँ दैत अछि, मुदा कखन-कखन आत्मालोचन कैँ दबा सेहो सकैत अछि।

९. श्रम, प्रवास आ ग्रामीण अर्थनीतिक अदृश्य आधार

धान रोपैत स्त्री सभक गीत तथा पंजाब-दिल्ली कमाइब गेल पुरुषक उल्लेख ग्रामजीवनक आर्थिक ढाँचाक संक्षिप्त, मुदा सघन उद्घाटन करैत अछि। खेतमे स्त्रीक श्रम मात्र घरेलू सहायक भूमिका नहि, कृषि उत्पादनक प्रत्यक्ष आधार बनि उठैत

अछि। तथापि पंचायत, पूजा आ समाजक औपचारिक निर्णयमे तिनकर समान अधिकार स्थापित नहि अछि। श्रमक केन्द्र आ प्रतिष्ठाक केन्द्रक बीच एहि दूरीमे उपन्यासक संरचनात्मक लैंगिक आलोचना निहित अछि।

प्रवासक कथा एकर दूहरा फल देखबैत अछि : बाहरी दुनियासँ आमदनी आ नव जानकारीक बाट खुलैत अछि, मुदा गामक प्रभुत्वशाली सम्बन्ध स्वतः समाप्त नहि होइत। शिक्षित अजयक बेरोजगारी, मजदूरीक असुरक्षा, कर्ज, उपेक्षित सड़क आ स्वास्थ्य-सुविधाक कमी विकासक असमान गति दिखबैत अछि। एहि स्थितिमे 'परम्परा बनाम आधुनिकता'क सरलीकृत द्वैत अपर्याप्त अछि; आधुनिक सार्वजनिक संस्थान नाममात्र रहबाक कारण पुरना नियन्त्रण अधिक टिकाउ भऽ सकैत अछि।

बरद, खेत, आमक गाछ, भोजक खर्च, चन्दा आ मजदूरीक सूक्ष्म प्रसंग सभ उपन्यासकेँ आर्थिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि। कतहु गाछ दानक अधिकारक माध्यम बनैत अछि; कतहु मृत्युभोजक दबाव खेत-जमीनक हस्तान्तरणक सम्भावना खोलैत अछि; कतहु विद्यालयक शिक्षकक अनियमित उपस्थिति साक्षरताक अवसर छीनैत अछि। वस्तु सभ केवल चित्रण नहि, सम्बन्धक वास्तविक विनिमय-माध्यम अछि।

१०. विवाह, लोकगीत आ स्त्री-जीवनक सामाजिक पाठ

लीलाक विवाहक विस्तृत प्रसंग उपन्यासक स्वरमे विशिष्ट बदलाव अनैत अछि। बरात, बाजा, भोजन, साज-सज्जा, अपहरणक आशंका, वरक विलम्ब, डकैतीक वृत्तान्त, देहाती हास्य आ स्त्रीक गीत एक-दोसरासँ जुड़ैत अछि। विवाहक मंगलमय उत्सवक भीतर खर्चक भय, जातीय बहिष्कारक छाया आ कन्याक भविष्यक असुरक्षा निरन्तर सक्रिय अछि। ई दृश्य लोकसंस्कृतिक मनोहारी प्रदर्शन मात्र नहि; रस, भय, श्रम आ संसाधनक समकालिक जीवन अछि।

गीतमे पोती कैँ डुमरीक फूल, घर-छोड़बाक वेला, सोना-पिंजराक रूपक आ दहेजक प्रश्नसँ जोड़ल जाइत अछि। 'सोना पिंजरा'क छविमे स्नेहक उपहार आ स्त्रीक सीमित गतिक कटु विरोधाभास उपस्थित अछि। राजा सलहेसक नाच कथामे

सामुदायिक सांस्कृतिक स्मृति खोलैत अछि। लोकगीतक अर्थ केवल कथानक रोकिकँ प्रस्तुत कएल विवरण नहि; ई ओहि सामूहिक अनुभूतिक आवाज अछि जे पात्रक व्यक्तिगत कथनसँ बड़का अछि।

रामरती मड़रक वंशसम्बन्धी हास्यक प्रसंगमे बालविवाह, अल्पवयस्क कन्याक सासुर भेजबाक दबाव आ प्रसवसम्बन्धी त्रासदी जुड़ैत अछि। कथाकार लोकक चुटकीदारीक भीतर बालिकाक असहमतिक प्रश्न घुसा दैत अछि। किछु ठाम रचना हास्यक लयमे पीड़ाक तीव्रता कम कऽ दैत अछि; मुदा अन्तर्निहित कथा स्त्रीक इच्छाक उपेक्षा पर कठोर आरोप सेहो बनैत अछि।

११. शिक्षा, चिकित्सा आ सार्वजनिक संस्थानक अपूर्ण प्रवेश

अजय पीपरक नीचाँ पाठशाला शुरू करैत अछि, कारण टोलक सरकारी विद्यालय उपयोगी ढंगसँ उपस्थित नहि। बच्चा सभक बीच जातीय बहिष्कारक भाषा तुरन्त घुसि अबैत अछि; अतएव शिक्षा समाजसँ अलग निष्पाप क्षेत्र नहि। शिक्षकक अनियमित उपस्थिति आ विद्यालयक स्थल-चयन देखबैत अछि जे संस्थागत नाम रहलासँ अधिकारक वास्तविक उपलब्धि सुनिश्चित नहि होइत।

चिकित्साक प्रसंगमे वैज्ञानिक उपचारक वकालत आ इलाज धरि पहुँचबाक भौतिक बाधा एकसंग अछि। मनमाक प्राणरक्षाक प्रयास असफल रहैत अछि, तखन अजयक नैतिक तर्क सामाजिक स्मृतिमे पराजित बुझाइत अछि; लोक कहि सकैत अछि जे भगतक अनुष्ठान बीचमे रोकल गेल। एहि दृश्यक मूल्य आत्ममुग्ध विज्ञानवादमे नहि, सार्वजनिक स्वास्थ्यक अभाव प्रति प्रत्यक्ष प्रश्नमे अछि। विकासक अर्थ जनताक नामपर योजना बनब नहि, ओकरा सड़क, शिक्षा, उपचार आ सुरक्षा वास्तविक रूपेँ भेटब अछि।

अमर्त्य सेनक स्वतन्त्रता-केन्द्रित विकास-चिन्तनक सन्दर्भमे देखल जाए तँ सामाजिक बन्धन आ सार्वजनिक अभाव—दुनू मानवक विकल्प संकुचित करैत अछि।

तथापि उपन्यास नीति-प्रतिवेदन नहि; ओ ठोस पात्रक संकटक माध्यमसँ एहि अभावकेँ अनुभवसिद्ध बनबैत अछि।

१२. प्रकृति : गाछक स्वर, जलक स्मृति आ पर्यावरणीय विवेक

आमक गाछ काटबाक दृश्य उपन्यासक एक महत्त्वपूर्ण कलात्मक मोड़ अछि। गाछक वेदना स्वयं कथन-समान व्यक्त होइत अछि; फल, छाँह, शुद्ध हवा आ पक्षीक आश्रय देनिहार जीवकेँ 'दान-दक्षिणा'क कारण काटल जा रहल अछि। अजयक आपत्ति दानक धार्मिक विधान, सम्पत्तिक नियन्त्रण आ पर्यावरणीय विवेक बीच टकराव उत्पन्न करैत अछि। पिता झटकलाल अपन दानपालनमे धर्म मानैत छथि; पुत्र जीवित गाछ काटबाकेँ नैतिक अपराध कहैत अछि। एहि तर्क-वितर्कमे दुनूक मूल्य-विश्व दृष्टिगत भेदक रूपमे उद्घाटित अछि।

पीपरक गाछ सीमा-बोध, स्मृति, शरण आ शिक्षाक स्थान बनैत अछि; कथावाचक कखनो गाछक दृष्टिसँ लोकजीवन देखबैत अछि। अतएव प्रकृति केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि, संवेदनात्मक साक्षी अछि। गाछक तले बालक पढ़बैत अजयक प्रयास आ गाछ काटबाक दृश्य एक-दोसरक अर्थ बढ़बैत अछि—ज्ञानक पोषण आ जीवनक नाशक बीचक विरोध रचनाक मूल प्रतिमानमेसँ एक अछि।

अन्तिम भागक आगि-पानि प्राकृतिक विपर्यय मात्र नहि। हिंसक भीड़ काश-पटेरक वनमे आगि लगा दैत अछि; पक्षी, कीड़ा आ अन्य जीव सेहो विनाशमे फँसैत अछि। अर्थात् मनुष्यक सामाजिक हिंसा मानवेतर संसारकेँ सेहो ग्रसैत अछि। आगिक भीतर पानि दम्पतिक सम्भावित जीवनाश्रय बनैत अछि, मुदा ओकरा पूर्ण सुरक्षित मुक्ति मानब जल्दबाजी होयत। जल रक्षा आ अनिश्चितता दुनूक रूपक बनैत अछि।

१३. पंचैतीसँ मतदान धरि : लोकतन्त्रक अपहरण

पंचैतीमे उपस्थित दबाव, पक्षपात आ खरीद-फरोख्तक तर्क चुनावक दृश्य धरि विस्तारित होइत अछि। धर्मानन्द बाबूक दुआरपर महाभारतक कथा, भोज आ

मतदानक दिन एकसाथ उपस्थित होइत अछि। एक दिस द्रौपदीक पराजय आ सम्भावित चीरहरणक कथा सुनाओल जाइत अछि; दोसर दिस गरीब टोलक मतदाता भोजनक मोह आ विलम्बमे अटकि जाइत छथि। विद्यालय मालिक-टोलमे पड़ल अछि; मतदानक समय पहुँचला पर किछु लोक कैँ पूर्वमे मत पड़ि चुकल हेबाक आरोपसँ रोकल जाइत अछि, आ मारपीट-पुलिसक लाठी चलैत अछि।

ई संयोजन साधारण व्यंग्यसँ अधिक अर्थपूर्ण अछि। धार्मिक महाकथाक न्याय-भाषा आ समकालीन नागरिक-अधिकारक हननक बीच तीव्र विरोध बनैत अछि। द्रौपदीक अपमानक कथासँ सामाजिक मनोरंजन लेनिहार समाज स्वयं अपन लोकक राजनीतिक आवाज छीनबाक घटना देखैत अछि। इएह विरोध निर्मलाक देहपर अनुष्ठानक नाममे आक्रमणक प्रसंगसँ सेहो जुड़ैत अछि।

मतदानक घटना शिक्षा-विवेचनक पुनरावृत्ति सेहो अछि : अजय अधिकारक जानकारी दैत अछि, मुदा सूचना मात्र संस्थागत हिंसाक सम्मुख पर्याप्त नहि। लोकक राजनीतिक उदासीनता पूर्ण स्वाभाविक नहि; बारम्बार वञ्चना, रिश्वत, डर आ आशाभंगक इतिहास ओकर पृष्ठभूमि अछि। रचना एहना सामाजिक परिस्थिति निर्मित करैत अछि जतए ‘मतदान करब’ एक सामान्य प्रशासनिक काम नहि, अधिकारक संघर्ष अछि।

१४. बहुवाचिकता, हास्य आ सामाजिक बोलीक टकराव

कथाक विस्तृत दृश्य सभमे अनेक पात्रक छोट-छोट टिप्पणी, टोका-टोकी, व्यंग्य, लोकोक्ति आ ऊँच-नीच आवाज एक साथ सुनाइत अछि। नारी, पुरुष, बच्चा, भगत, पंच, युवा, बुजुर्ग आ मालिक-समर्थक व्यक्तिक बोली सभ एकहि अर्थसँ संचालित नहि। कखनो एकटा वाक्य उत्तरवर्ती वाक्यमे उलटि जाइत अछि। उदाहरणार्थ पंच कैँ भगवान कहबाक भाषा तुरन्त ओकर अन्याय आ स्वार्थक संकेतसँ टकराइत अछि। एहि तात्कालिक उलटावमे सामाजिक हास्य मात्र नहि, अधिकृत कथनक वैधतापर प्रश्न अछि।

बाख्तिनक अर्थमे उपन्यासात्मक बहुभाषिकता अलग-अलग शब्दक सूची नहि, मूल्यवान सामाजिक स्वरक परस्पर संघर्ष अछि। 'हमर टोल'मे लोक-गप्पक स्वर कखनो धार्मिक प्रचारकेँ सहारा दैत अछि, कखनो ओकरा व्यर्थ सिद्ध करैत अछि; स्त्री सभक खुसुर-फुसुर सार्वजनिक निषेधक भीतर प्रतिरोधक छोट स्थान बनबैत अछि; युवा सभक संवाद आत्मालोचना आ सुधारक आलोचना दुनूक मंच बनैत अछि।

उचितवक्ता एहि बहुवाचिक संरचनाक एक रोचक पात्र अछि। ओकर त्वरित टिप्पणी कखनो अन्याय पर प्रश्न करैत अछि, कखनो उपहासक अतिरेकसँ विषयक गम्भीरता हेराइत अछि। ओ कथानकक पूर्ण नैतिक प्रतिनिधि नहि; सामाजिक हँसीक सम्भावना आ सीमाक द्योतक अछि। लेखक पात्रक सम्पूर्ण स्वर केँ एकटा शिक्षाप्रद निष्कर्षमे विलीन नहि करैत—ई उपन्यासक जीवित संवादशीलता अछि।

तथापि किछु प्रसंगमे कथावाचक अजयक सुधारवादी तर्क केँ अधिक स्पष्ट समर्थन देनाय चाहैत अछि; फलतः बहुवाचिक तनाव कखनहुँ विवेचनात्मक एकस्वरमे बदलि जाइत अछि। ई कलात्मक सीमा नोंधब आवश्यक अछि, कारण अनेक जीवित सामाजिक आवाज उपस्थित रहलासँ प्रत्येक ठाम समान स्वतन्त्रता स्वतः सिद्ध नहि होइत।

१५. आख्यानकाल, प्रसंगविन्यास आ दृष्टिक परिवर्तन

कथा प्रारम्भमे स्वप्न-सदृश पूर्वरूप लैत अछि; तखन गहवरक घनी दृश्यावली, पति-पत्नीक कलह, पंचैती, अजयक गाम-प्रत्यावर्तन, विवाह, उपचार-संकट, विद्यालय, श्राद्ध आ चुनावक प्रसंग क्रमशः जुड़ैत अछि। बीच-बीचमे पात्रक स्मृति, सुनल कथा, पीढ़ीक इतिहास आ लोकोक्तिमय प्रसंग मुख्य घटनाधाराक गति रोकि अर्थक अतिरिक्त स्तर खोलैत अछि। जेनेटक आख्यान-समयक शब्दावलीमे कहब तँ कथा-समय आ कथन-समयक अनुपात लगातार बदलैत अछि : कखनो एक क्षणक विस्तृत संवाद, कखनो वर्षक संक्षिप्त विवरण।

दृष्टिक केन्द्र सेहो स्थिर नहि। निर्मलाक आत्मकष्ट, जगेसरक असुरक्षा, अकलूक विवाहव्ययक चिन्ता, अजयक आन्तरिक प्रश्न, घरोघरक गप्प आ भीड़क भय—सभ एकहि कथामे परिवर्तित केन्द्र बनबैत अछि। एहि कारणे उपन्यास एकाध नायकक आत्मकथा नहि बनि पबैत; टोलक समष्टिगत मनोवृत्तिक रूपरेखा बनबैत अछि।

एक सीमा ई जे कतिपय घटना तीव्र गतिसँ एक-दोसराक बाद अवतरित होइत अछि, जकरा कारण पात्रक अन्तःपरिवर्तनक मध्यवर्ती प्रक्रिया पूर्ण विस्तार नहि पबैत। विशेषतः विश्वाससँ प्रश्न करबाक सामाजिक सम्भावना, परिवर्तनक सामूहिक संगठन, आ हिंसामे भाग लेनिहार व्यक्तिगत लोकक मनोवैज्ञानिक प्रेरणा ओतेक खोलि नहि देखाओल गेल अछि जतेक अजयक नैतिक वक्तव्य। मुदा एहि विखण्डनक पक्षमे ई तर्क सेहो अछि जे टोलक यथार्थ अनवरत व्यवधान आ परस्पर प्रतिस्पर्धी घटनासँ बनल अछि।

१६. व्यंग्यक प्रभाव आ ओकर नैतिक जोखिम

लेखकक एक विशेष गुण अछि—कटु सामाजिक आलोचनाकेँ स्थानीय बोलचालक चुहलसँ जोड़ब। पंचक स्वार्थ, धार्मिक चमत्कारक आर्थिक गणना, विवाहक अव्यवस्था, आपसी प्रतिष्ठा-प्रतिस्पर्धा आ नाच-पार्टीक संवादमे व्यंग्य कथाकेँ सजीव बनबैत अछि। पाठक केवल नैतिक उपदेश नहि सुनैत; ओकरा समाजक आचरण स्वयं हास्यास्पद देखाइत अछि।

मुदा सभ हँसी समान रूपेँ मुक्तिदायी नहि। स्त्रीक देहपर टिप्पणी, निःसन्तानता पर उपहास, अपंग अथवा अशिक्षित व्यक्तिक हँसीक पात्र बनब—ई सभ कखनो पात्रक सामाजिक क्रूरता उद्घाटित करबाक युक्ति, कखनो पाठकीय मनोरंजनक जोखिम रखैत अछि। व्याख्याकार केँ कथावाचकक दृष्टि, पात्रक कथन आ अन्तर्निहित आलोचनाक स्तर अलग करबाक चाही। एहि भेद बिना पात्रक अपमानजनक भाषा केँ लेखकक स्वीकृत मूल्य मानि लेब सम्भव अछि, जखन कि दृश्य बहुधा ओकर विकृत सामाजिक प्रसार उजागर करबाक लेल रचल गेल अछि।

१७. अजय–शीला : प्रेम, बहिष्कार आ हिंसाक अन्तिम रूप

अजय आ शीलाक सम्बन्ध बचपनक निकटता, युवावस्थाक विछोह आ पुनर्भेटसँ विकसित होइत अछि। शीला अनाथ छथि; काका-काकीक संरक्षणमे शारीरिक कठोरता आ भावनात्मक उपेक्षा सहैत छथि। जातीय बहिष्कार, भोजक सामाजिक नियम आ प्रेमपर सामुदायिक निगरानी हुनकर निजी जीवन सीमित करैत अछि। प्रेम एहि ठाम केवल व्यक्तिगत आकर्षण नहि, जाति-नियन्त्रित सम्बन्धक विरुद्ध विकल्पक कल्पना अछि।

अन्तिम प्रसंगमे प्रभुत्वसँ लाभान्वित आ अजयसँ क्षुब्ध विभिन्न व्यक्ति सभ शीलाक संग ओकर भेट कँ सामूहिक आक्रमणक बहाना बनबैत छथि। हथियारबन्द भीड़ काश-पटेरक वन घेरि आगि लगा दैत अछि। अजय घायल होइत अछि; शीला आ अजय एक-दोसर कँ नहि छोड़बाक संकल्प दोहरबैत छथि। रक्तक सिन्दूर, कपड़ामे लगल आगि आ नग्न देह सामाजिक विधानसँ बाहर प्रेमक चरम असुरक्षा आ एक-दोसरापर निर्भर आत्मीयताक दृश्य बनबैत अछि।

एकटा महत्त्वपूर्ण बात : एहि अन्तमे लेखक प्रेमी-द्वयक मृत्युक स्पष्ट, अपरिवर्तनीय घोषणा नहि करैत छथि। दुनू पानिमे कूदि जीवित रहबाक यत्न करैत छथि; फेर आलिंगनक आकाशाभिमुख, प्रतीकसमृद्ध छविसँ आख्यान समाप्त होइत अछि। तें अन्तक अर्थकँ सरल 'शहीद प्रेमी' अथवा निश्चिन्त 'सुखान्त'मे बाँधब अनुचित होयत। वास्तविक संकट, भविष्यक अनिश्चितता आ 'परिवर्तन आ विकास'क आशाक एकसंग उपस्थिति ओकर विशिष्टता अछि।

अन्तिम क्षणमे निर्मलाक हँसुआ उठाय दौड़ब उल्लेखनीय अछि। जकर देह प्रारम्भमे भगतक अनुष्ठान आ पतिव्रत-नियमनक केन्द्र छल, वैह स्त्री सामूहिक हिंसाक प्रतिरोधमे सक्रिय होइत अछि। एहि क्रियाक संग शीर्षकक 'हमर' अन्ततः नव अर्थ ग्रहण करैत अछि : टोल केवल दमनकारी भीड़ नहि, ओकर भीतर विरोधक सम्भावित गठबन्धन सेहो अछि।

१८. साहित्यिक उपलब्धि, आलोचनात्मक सीमा आ मूल्याङ्कन

उपन्यासक पहिल उपलब्धि एकटा सीमित भूगोलसँ बहुस्तरीय सामाजिक संरचनाक व्याख्या अछि। धार्मिक-सांस्कृतिक व्यवहार, जातीय प्रतिष्ठा, आर्थिक निर्भरता, स्वास्थ्य-अभाव आ लिंग-नियन्त्रण अलग विभाग नहि, परस्पर उत्पन्न करणिहार शक्ति रूपेँ सामने अबैत अछि। दोसर उपलब्धि बोलचालक बहुवाचिक ऊर्जा अछि। लोकगीत, मिथकीय संकेत, चुटकीदारी, अफवाह आ सार्वजनिक बहस कथाभूमिक विश्वसनीयता कैँ संवेद्य बनबैत अछि। तेसर उपलब्धि निर्मलाक परिवर्तनशील भूमिका, शीलाक कष्टपूर्ण जीवन आ कृषि-श्रमक स्त्री-संसार मार्फत घरक भीतरक असमानता कैँ सार्वजनिक न्यायक प्रश्न बनाय देब अछि।

चौठ उपलब्धि प्रकृतिक सक्रिय उपस्थिति अछि। गाछक कथन, अन्हार-इजोतक आवृत्ति, आ अन्तक आगि-पानि ग्रामीण यथार्थवादकैँ प्रतीकात्मक गहराइ दैत अछि। पाँचम उपलब्धि लेखकक असुविधाजनक प्रश्नसँ नहि घबराएब : अजय चिकित्सा-सहायता पहुँचबामे असफल रहैत अछि; समाज भगतक कथा फेर मानि लैत अछि; शिक्षाक आरम्भमे जातीय हिंसा आबि जाइत अछि; मतदानक अधिकार कागजपर रहि सकैत अछि। एहि सभ कारण उपन्यास सरलीकृत विजयगाथा नहि बनैत।

सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि। अजयक विचार कखनो प्रत्यक्ष सुधारवादी उद्घोषणा बनि कला-संगत तनाव घटबैत अछि। कतिपय स्त्री-पात्रक भीतरी स्वायत्त इच्छा, तिनकर व्यक्तिगत भविष्य आ पुरुष हिंसाक दीर्घकालिक प्रभाव अपेक्षाकृत कम उभरैत अछि। जटिल संरचनागत बदलावक स्थान पर साहसी व्यक्तिक हस्तक्षेप कखनो अनुपातसँ अधिक कथानक-भार वहन करैत अछि। कतेको प्रकरणक व्यंग्यात्मक लय पाठकक संवेदना आ पीड़ित पात्रक असहायता बीच दूरी पैदा करबाक जोखिम सेहो रखैत अछि।

तथापि एहि सीमा सभकैँ कृतिक ऐतिहासिक-सामाजिक आकांक्षासँ काटि देखब अनुचित होयत। लेखक ग्रामीण समाजक ‘बुराइ’क एकटा सूची नहि बनबैत; ओ

देखबैत छथि जे प्रत्येक अन्याय अपन औचित्यक कथा रचैत अछि। आलोचकक काज एहि कथाक भीतर उपस्थित विरोधाभास, हास्य, स्वप्न आ हिंसाक साथैँ पढ़ब अछि।

१९. निष्कर्ष

'हमर टोल'क केन्द्रीय उपलब्धि ई अछि जे ई टोल कैँ असमान सम्बन्धसँ बनल जीवित सामाजिक शरीर रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। परम्पराक उज्ज्वल लोकसांस्कृतिक रूप आ ओकर दमनकारी उपयोग अलग-अलग खेमामे नहि रहैत; प्रायः एकहि अनुष्ठान, गीत, बैठक वा पारिवारिक सम्बन्धक भीतर दुनू उपस्थित अछि। अजयक विवेक प्रतिरोधक महत्त्वपूर्ण माध्यम अछि, मुदा ओकर सीमासभ देखबैत अछि जे सामाजिक परिवर्तनक आधार केवल एक नायक नहि भऽ सकैत। निर्मलाक असहमति, शीलाक प्रेम, बालक सभक शिक्षा, श्रमिक स्त्रीक कार्य आ युवा सभक विचार-विनिमय—ई सभ सम्भावित परिवर्तनक अलग-अलग बीज अछि।

अन्तमे आगि समाजक विध्वंसक सामूहिकता अछि; पानि जीवनक अस्थिर शरण; आ ओकर बीच आलिंगन करैत दूटा देह भविष्यक अनिश्चित, मुदा अविच्छिन्न मानवीय आकांक्षा। ई दृश्य एहि शोधक मूल प्रतिपाद्यक पुष्टि करैत अछि : उपन्यासक उद्देश्य टोलक एकरंगी चित्रण नहि, ओकर भीतर प्रतिरोधक जन्मक कठिन प्रक्रिया देखब अछि। मैथिली उपन्यासक अध्ययनमे 'हमर टोल'क महत्त्व ग्रामीण यथार्थ, सामाजिक बहुवाचिकता आ नैतिक-सांस्कृतिक संघर्षक एहि संयुक्त आख्यान-पद्धतिक कारण स्थापित होइत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मण्डल, राजदेव. हमर टोल. दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१२. ISBN 978-93-80538-78-5.

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. Austin: University of Texas Press, 1981.

Bourdieu, Pierre. Outline of a Theory of Practice. Translated by Richard Nice. Cambridge: Cambridge University Press, 1977.

Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Translated by Jane E. Lewin. Ithaca: Cornell University Press, 1980.

Lefebvre, Henri. The Production of Space. Translated by Donald Nicholson-Smith. Oxford: Blackwell, 1991.

Nussbaum, Martha C. Women and Human Development: The Capabilities Approach. Cambridge: Cambridge University Press, 2000.

Scott, James C. Domination and the Arts of Resistance: Hidden Transcripts. New Haven: Yale University Press, 1990.

Sen, Amartya. Development as Freedom. New York: Alfred A. Knopf, 1999.

Williams, Raymond. The Country and the City. New York: Oxford University Press, 1973.

अध्याय 4

जल भँवर : समाज, जल आ आख्यान

मैथिली उपन्यास : पाठालोचन, सामाजिक संरचना, स्त्री-अनुभव आ प्रतीक-व्यंजना

सारांश

राजदेव मण्डलक «जल भँवर» मिथिलाक ग्राम्य जीवनकेँ प्रेमक निजी कथा मात्र बनाकऽ प्रस्तुत नहि करैत अछि; ई जाति, धन, पंचायत, श्रम, रोग, विस्थापन आ जल-संकटक बीच मनुष्यक नैतिक सम्भावनाक परीक्षा करैत अछि। राजेसर आ नीताक सम्बन्धसँ प्रारम्भ भेल तनाव धीरे-धीरे सामुदायिक संस्थाक पक्षपात, स्त्रीक देहपर अधिकार जतयबाक चेष्टा, जीविकाक अनिश्चितता आ बाढ़िक सामूहिक संकट धरि विस्तृत होइत अछि। एहि अध्ययनमे बाइस खण्डक घटनाक्रम, स्वप्नसँ बनैत आख्यानिक वृत्त, कोसी आ धारक स्थानिकता, संवादक बहुस्वरता, पंचायतक वैधता, नीताक प्रतिरोध आ सिमानपुरवालीक देखभाल-आधारित नैतिकताकेँ परस्पर सम्बद्ध रूपमे विश्लेषित कएल गेल अछि। जेरार जेनेतक काल-विन्यास, मिखाइल बाख्तिनक बहुभाषिकता आ हेनरी लेफेब्रक सामाजिक स्थान-सम्बन्धी अवधारणा एहि पाठक व्याख्यात्मक उपकरण बनैत अछि; सिद्धान्तकेँ मूल कथा पर आरोपित नहि कएल गेल अछि। अध्ययनक निष्कर्ष ई अछि जे उपन्यासक निर्णायक साहित्यिक उपलब्धि जलक भौतिक संकट आ समाजक मानवनिर्मित भँवरकेँ एक प्रतीक-तन्त्रमे जोड़ब अछि। तथापि अन्तिम परोपकार-आधारित सामुदायिक स्वीकृतिसँ जातिगत बहिष्कारक संस्थागत प्रश्न पूर्णतः निष्प्रभावी नहि भऽ जाइत अछि। उपन्यासक अन्तिम स्वप्न आ दूरसँ सुनाइत उद्धारक सम्भावना आशा आ अनिश्चितता—दुनूक सहअस्तित्व बनबैत अछि।

बीजशब्द : जल भँवर; राजदेव मण्डल; मैथिली उपन्यास; जाति; पंचायत; स्त्री-अस्मिता; कोसी; बाढ़ि; लोकभाषा; आख्यानशास्त्र।

१. भूमिका : व्यक्ति आ समाजक परस्पर भँवर

जल आ समाज—ई दुनू उपन्यासक आरम्भसँ अन्त धरि संगहि उपस्थित अछि। पात्र लोकनि नदिक कछेर, गामक बाट, चौबटिया, खेत, दुआरि आ पञ्चैतीक बीच जीबैत छथि; तिनकर निर्णय पर प्राकृतिक परिस्थितिसँ बेसी सामाजिक सम्बन्धक दबाव पड़ैत अछि। राजेसरक प्रेम आ दायित्व, नीताक आत्मसम्मान, जागेसरक असामयिक मृत्यु, भुखनाक असहमति, कुलानन्दक षड्यन्त्र आ धरमलालक बदलैत दृष्टि एक-दोसरसँ जुड़ि सामूहिक आख्यान गढ़ैत अछि। पोथीक परिकल्पनात्मक संसारकेँ ओकर अपन शर्त पर पढ़नाइ जरूरी अछि, कारण आरम्भमे पात्र आ स्थानक नाम कल्पनापर आधारित हेबाक स्पष्ट सूचना देल गेल अछि। अतः एहि कथाक सामाजिक यथार्थकेँ किछु खास वास्तविक व्यक्तिक इतिहास मानबाक बदला साहित्यिक रूपमे निर्मित समाज-बोध मानल गेल अछि।

«जल भँवर»क मुख्य अभिप्राय केवल एहि बातक अनुसंधान नहि जे प्रेमक जीत होइत अछि वा नहि; प्रश्न ईहो अछि जे न्याय करबाक अधिकार किनकर हाथमे अछि, कोन स्वरकेँ सामूहिक सत्य मानल जाइत अछि, आ संकट आबिते नैतिक प्रतिष्ठाक मापदण्ड कोना बदलि जाइत अछि। एहि अर्थमे उपन्यास ग्रामीण आधुनिकताक अन्तर्विरोधकेँ कथात्मक रूप दैत अछि। परम्परा लोककेँ सहारा सेहो दैत अछि, परन्तु ओकरे नामपर बहिष्कार, आरोप आ दण्डक वैधता सेहो तैयार होइत अछि।

२. पाठ-क्षेत्र, शोध-प्रश्न आ विश्लेषण-पद्धति

पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ प्रकाशित २०१९क नव संस्करणमे उपलब्ध «जल भँवर» बाइस क्रमांकित खण्डमे विभाजित अछि। समग्र कथाक विश्लेषण लेल चारि परस्पर सम्बन्धित प्रश्न निर्धारित कएल गेल अछि : जल-परिवेश कथाक कारण-

व्यवस्था आ प्रतीकात्मक अर्थकेँ कोना प्रभावित करैत अछि; जाति, धन आ पंचायत व्यक्ति-स्वातन्त्र्यकेँ कोना सीमित करैत अछि; स्त्री पात्रक अनुभव कथावाचकक नैतिक दावासँ कोना सम्बन्धित अछि; आ उपन्यासक अन्तिम समाधान अपन आरम्भिक संकटसँ केहन सम्बन्ध रखैत अछि।

पद्धतिक आधार निकट-पाठ, घटनाक क्रमिक अनुगमन, संवादक अर्थ-परीक्षण आ प्रतीकक प्रसंगगत विवेचन अछि। सेमोर चैटमैनक कथा आ कथन-प्रक्रियाक भेदसँ घटनाक स्तर आ ओकर प्रस्तुतिकरणकेँ अलग कएल जा सकैत अछि। जेरार जेनेतक काल-क्रम, अवधि आ कथन-स्वर सम्बन्धी विवेचन स्वप्न, स्मृति आ घटनाक बीच आवाजाही बुझबाक उपकरण दैत अछि। बाख्तिनक बहुस्वरता-सम्बन्धी अवधारणा चौबटियाक गप, पञ्चक निर्णय, स्त्रीक प्रतिवाद आ सामुदायिक अफवाहक आपसी टकराव पढ़बाक दृष्टि दैत अछि। ई सिद्धान्तसभ तुलनात्मक उपकरण अछि; उपन्यासक रचनागत विशिष्टता तिनक सिद्धान्तसँ स्वतः सिद्ध नहि मानल गेल अछि।

३. कथासूत्रक विस्तार : निजी प्रेमसँ सामुदायिक संकट धरि

आरम्भमे राजेसर एकटा भयावह स्वप्नमे अपने केँ हिंसक आकृतिसँ बचबाक लेल गाछक डारि पकड़ैत देखैत अछि। जागेसरक आवाज ओकरा जगबैत अछि; दुनू भाय नाहक सहायतासँ धार पार करबाक प्रसंगमे उपस्थित होइत छथि। शीघ्रहि राजेसरक नीता-सँ भेंट आ परस्पर आकर्षण कथा-गतिक नब केन्द्र बनैत अछि। नीता पहिनहि सँ बुझैत अछि जे प्रेमक सामाजिक बाधा जाति आ धन, दुनू ठामसँ आबयवाला अछि। प्रेमक आरम्भिक दृश्य धारक कछेर पर घटैत अछि; ओही ठामसँ जल भावनात्मक उत्कण्ठा आ वास्तविक जोखिमक संयुक्त पृष्ठभूमि बनि जाइत अछि।

गामक पञ्चैती, मजदूरक प्रतिवाद, मालिक-पक्षक अहंकार आ शक्ति-सन्तुलनक विवाद उपन्यासकेँ निजी प्रेमक सीमासँ बाहर अनैत अछि। जागेसरक नाव-दुर्घटनामे मृत्यु कथाकेँ अचानक पारिवारिक शोक आ आर्थिक दायित्वक दिशामे मोड़ैत अछि। ओकर देहक खोज, नदीक कछेरक सुनसान, विधवा भौजीक भविष्य आ राजेसरक

असहायता—ई सभ नदीक परिवेशकेँ शुद्ध सौन्दर्य-दृश्यसँ अलग एक भयावह वास्तविकता प्रदान करैत अछि।

एक ओर लरेनाक पत्नीक विष-प्रसंगमे मृत्युक बाद पुरुष-केन्द्रित घरेलू सत्ता, पुलिस आ नेता-पञ्चक सम्बन्ध चर्चाक विषय बनैत अछि; दोसर दिस रोग, निर्धनता आ ओझा-चिकित्साक प्रसंग संसाधनक संकट खोलैत अछि। राजेसर पारिवारिक आवश्यकताक कारण दिल्ली-पंजाब कमएबाक लेल बाहर जाइत अछि। ओकर अनुपस्थितिमे कुलानन्द जाति-प्रतिष्ठाक मुद्दा बनाकऽ विरोधी वातावरण बनबैत अछि; नीताक विरुद्ध षड्यन्त्र, ओकर प्रतिरोध, टोल-पञ्चैती आ मटरूवाक हिंसक प्रतिक्रिया कथाकेँ सबसँ तीक्ष्ण सामाजिक संकट धरि अनैत अछि।

सिमानपुरवाली नीताकेँ आत्मविनाशक बाटसँ हटाकऽ अपन संग रखैत अछि। बादमे राजेसरक वापसी आ दुनूक पुनर्मिलनक संगहि कथा सहजीवनक सम्भावना देखबैत अछि। गामक लोकक संवादमे मन्दिरमे बिआह हेबाक बात उल्लेखित अछि; किन्तु एतए सूचना प्रत्यक्ष विवाह-दृश्यक रूपमे नहि, सामाजिक चर्चाक माध्यमसँ पाठक धरि पहुँचैत अछि। अन्तिम बाढ़ि समस्त विरोधी पात्रकेँ एकटा सामूहिक जीवन-मरणक परिस्थितिमे ठाढ़ करैत अछि। राजेसर, नीता आ आन लोकक उद्धार-कर्म; धरमलालक नातिक प्राणरक्षा; आ पुरान विरोधीक कृतज्ञता कथाक नैतिक परिणतिकेँ विस्तृत करैत अछि।

४. काल-विन्यास : स्वप्न, स्मृति, पूर्वाभास आ पुनरावर्तन

उपन्यासक आरम्भ भयावह स्वप्नसँ होइत अछि, अन्तोमे राजेसर अन्हार घरमे बन्द भऽ लोककेँ सहायताक लेल पुकारबाक स्वप्न देखैत अछि। आरम्भक गाछक डारि पकड़ि जान बचेबाक प्रयत्न अन्तिम भँवरमे फँसि गाछक डारि पकड़ि बाहर निकलबाक प्रत्यक्ष घटना-सँ अर्थपूर्ण साम्य बनबैत अछि। एहि पुनरावर्तनमे नायकक जीवनकेँ एकटा रेखीय सफलता-कथा बनाकऽ प्रस्तुत नहि कएल गेल; असुरक्षा ओकर चेतनाक स्थायी संरचना बनल रहैत अछि।

जागेसरक मृत्यु-पश्चात राजेसर ओकर पहिने कहल गप्प स्मरण करैत अछि; बादमे नीता अपन बापक हिंसा आ कुलानन्दक षड्यन्त्रकेँ बेर-बेर मन पाड़ैत अछि। स्मृति एहि ठाम कथाक गतिरोध नहि, वर्तमान पीड़ाक व्याख्या बनैत अछि। किछु दृश्यमे अल्प समयक आन्तरिक अनुभूति विस्तार पबैत अछि, जखन कि कामकाज, यात्रा आ महिनाक बीतनाइ संक्षिप्त कथनमे आबैत अछि। जेनेतक दृष्टिसँ ई अवधि-विन्यास पात्रक मानसिक घनत्वक अनुरूप परिवर्तित होइत देखाइत अछि।

अन्तिम उद्धारक बाद तुरन्त सम्पूर्ण सामाजिक समरसता स्थापित भऽ जयबाक घोषणा नहि अछि। राजेसर आ नीता थाकल देहसँ संग बैसि निद्रित होइत छथि; राजेसरक स्वप्नमे अन्हारक बन्द घर, इजोत, खुलैत दुआरि आ गड़गड़ाहट आयल अछि। जगलापर आकाशमे चक्कर मारैत हेलीकॉप्टर देखाइत अछि—जकर सम्भावित प्रयोजनबारे कथावाचक अनुमानक भाषा बरतैत अछि। ई अन्त मिथिला-ग्रामक संकटकेँ राज्यक दूरस्थ उपस्थिति आ सामूहिक आशाक सहारे खुलल रखैत अछि।

५. जल, धार आ कोसी : परिवेशक सक्रिय भूमिका

गाछ, बालुका, कास-पटेर, नाव, धार, कछेर, मेघ, वर्षा आ खेत—ई वस्तुसभ उपन्यासमे केवल वातावरणक सजावट नहि अछि। धार पार करबामे नाहबलाक प्रतीक्षा, नदीक वेग, नाव डूबब, कामक बाट आ पुनः जल-जालमे फँसनाइ कथाक प्रमुख घटनाकेँ उत्पन्न करैत अछि। नदी अलग-अलग क्षणमे आवागमनक पथ, मृत्युक कारण, प्रेम-मिलनक स्थल आ उद्धारक कठिन परीक्षा बनैत अछि। एहि बहुरूपी उपस्थितिक कारण 'जल'क अर्थ एकल शुभ वा अशुभ प्रतीकमे सीमित नहि होइत अछि।

जागेसरक मृत्यु-प्रसंगमे कोसीक कछेर शोकक निर्वाक स्थान बनैत अछि; राजेसर सुनसान बालुकामे असमर्थता अनुभव करैत अछि। जीवनक साधारण लय, पारिवारिक संरचना आ श्रमिक अस्तित्वक निरन्तरता एक दुर्घटनासँ विच्छिन्न भऽ जाइत अछि। ई दृश्य नदीकेँ स्थानीयता-निर्मात्री शक्ति मानबाक आधार दैत अछि।

लेफेब्रक सामाजिक स्थान-सम्बन्धी अवधारणाक आलोकमे कहल जा सकैत अछि जे जल-परिवेश ओहि सम्बन्धकेँ व्यवस्थित करैत अछि जाहिसँ श्रम, दूरी, पहुँच, सुरक्षा आ सामाजिक आश्रय निर्धारित होइत अछि।

अन्तिम बाढ़िमे स्कूलक ऊँच स्थान अस्थायी सामूहिक आश्रय बनैत अछि। घरक चारू ओर भरैत पानि सामाजिक अन्तरक एकटा कठोर परीक्षा लैत अछि; कमजोर लोककेँ पार कराबय लेल सामूहिक प्रयत्न आवश्यक भऽ उठैत अछि। तथापि प्राकृतिक संकट सभ सामाजिक अन्तर समाप्त कऽ दैत अछि—एहन सरल निष्कर्ष निकालब अनुचित हएत। संकट अवसर दैत अछि जे लोक अपन पूर्वाग्रहसँ बाहर निर्णय लेथि; ओ अवसरक स्थायी संस्थागत रूपान्तरण उपन्यास स्पष्ट रूपेँ प्रमाणित नहि करैत अछि।

६. 'भँवर' शीर्षक : जलक गति आ समाजक फाँस

उपन्यासक शीर्षकक आन्तरिक अर्थ देरिसँ, मुदा तीक्ष्ण ढंगसँ स्पष्ट होइत अछि। भुखना राजेसरसँ कहैत अछि—"जल भँवर जकाँ समाजोक एकटा जाल होइ छै जइमे अहाँ फँसि गेलौं। एकरा तोड़ैले अहाँकेँ लड़ए पड़त।" ई संवाद शीर्षकक व्याख्या दैत अछि, किन्तु अपन आपमे कथावाचकक अन्तिम वचन नहि अछि। तुरन्त राजेसर पूछैत अछि जे लड़ाइक बदला शान्ति आ अपकारक बदला उपकारसँ देल जा सकैत अछि कि नहि। एहि वाद-विवादमे उपन्यासक केन्द्रीय द्वन्द्व रेखांकित होइत अछि : अन्यायक विरुद्ध संघर्षक नैतिक पद्धति की होअय?

भँवरक दोहर अर्थ अछि। एक भौतिक जल-गति, जे व्यक्ति केँ डुबा सकैत अछि; दोसर सामाजिक सम्बन्धक घूर्णन, जे झूठ, अफवाह, भय, जाति-मान, लोभ आ सामुदायिक दण्डसँ व्यक्ति केँ केन्द्रक दिस खींचैत अछि। एहि प्रतीकमे 'जाल' शब्दक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि: सामाजिक शक्ति एकटा व्यक्ति वा संस्था मात्रमे केन्द्रित नहि रहि परिवार, टोल, पञ्च, खेत-मालिक आ निकट-सम्बन्ध धरि पसरल अछि।

भुखनाक संघर्षक आग्रह आ राजेसरक उपकारक आग्रहसँ प्रतीकक राजनीतिक अर्थ खुलैत अछि।

चरम क्षणमे राजेसर धरमलालक नातिकेँ बचबैत सचमुच जल-भँवरमे फँसैत अछि आ गाछक डारिक सहारे निकलैत अछि। शीर्षक तब प्रतीकात्मक कथनसँ आगू बढ़ि शरीरक जोखिम बनि जाइत अछि। एहि दृश्यसँ आरम्भिक स्वप्न, पात्रक विचारगत विवाद आ अन्तिम कर्म—तीनू एक-दोसरकेँ अर्थ दैत अछि। ई उपन्यासक सभसँ सफल रचनात्मक संयोजनसभमे सँ एक अछि।

७. जाति आ आर्थिक असमानता : प्रेमक सामाजिक निषेध

नीता प्रेमक विरोधक आकलन आरम्भे करैत अछि। ओकर वाक्य—“हम तँ जातियो आ धनोमे अहाँसँ हीन छी”—व्यक्तिगत हीनताबोध मात्र नहि, समाज द्वारा संस्थापित श्रेणीक्रमक दबावक अभिव्यक्ति अछि। एहिमे जाति आ आर्थिक स्थिति अलग-अलग बाधा नहि रहि परस्पर बल पबैत अछि। नीताक आगाँक शंका—परिवार आ समाज रोकत—आगामी कथाक वास्तविक घटनासँ पुष्ट होइत अछि। राजेसरक निर्भीक आश्वासन आ नीताक सतर्कता प्रेमक समान भावनात्मक स्थितिक भीतर असमान जोखिम दर्शबैत अछि।

प्रेमक दण्ड नीताकेँ बेसी प्रत्यक्ष रूपमे भुगतय पड़ैत अछि। पुरुषक अनुपस्थितिमे ओकर देह, चाल-चलन आ प्रतिष्ठा पर सार्वजनिक गवाही बनाओल जाइत अछि। राजेसरक मातृ-परिवारकेँ श्रम आ सामाजिक सम्पर्कसँ वञ्चित करबाक निर्णय सेहो एहि नियन्त्रणक आर्थिक आयाम अछि। प्रेमक नैतिक प्रश्नकेँ सामूहिक जातिगत अनुशासनक प्रश्न बनाकऽ कुलानन्द अपन व्यक्तिगत ईर्ष्या कैँ संस्थाक अधिकारक रूप दैत अछि। नीताक ‘दोष’ सिद्ध करबाक अपेक्षा लोकक स्वीकृति आ प्रतिष्ठा बचाएबाक खेल अधिक शक्तिशाली बनि जाइत अछि।

एहि पाठक सावधानी ई अछि जे जाति-प्रणालीकेँ केवल किछु दुष्ट व्यक्तिक चालबाजी धरि सीमित नहि कएल जाए। कुलानन्द असत्यक आयोजक अछि, मुदा

ओकर आरोप प्रभावी एहि लेल होइत अछि जे जाति-पञ्चायतक दण्ड, लोकलाज आ बहिष्कार पहिनेसँ प्रभावशाली सामाजिक तन्त्र बनल अछि। संरचना षड्यन्त्र लेल तैयार भूमि प्रदान करैत अछि। एहि कारण राजेसरक व्यक्तिगत सद्गुण अन्तमे प्रतिष्ठा लौटा सकैत अछि, मुदा सामाजिक असमानताक मूल नियम अपन आप नहि टूटैत अछि।

८. पञ्चैती : लोकन्यायक सम्भावना आ ओकर विकृति

उपन्यासमे पञ्चैतीक आलोचना सरल परम्पराविरोध नहि अछि। कथावाचक एक समयक पंचायतमे 'दूधक दूध आ पानिक पानि' करबाक आदर्शक स्मरण करैत अछि, मुदा वर्तमानमे घूसखोरी, जातिवाद, दल-पक्ष आ अपन-परायाक भेद देखबैत अछि। एतए स्मृति आदर्श न्यायक मापदण्ड बनैत अछि; कथावाचक ओहि आदर्शक विरुद्ध वर्तमान व्यवहारक परीक्षण करैत अछि। तथापि एहि स्मृतिकेँ इतिहासक प्रमेय मानि लेब उचित नहि; ई उपन्यासक नैतिक दृष्टिकोण अछि।

मलेसर आ भुखनाक विवाद, राजेसरक समर्थक मजदूर सभक प्रतिक्रिया, पञ्चक दबदबा आ परभुदासक शान्तिपूर्ण हस्तक्षेपसँ सार्वजनिक निर्णय-प्रक्रियाक एकाधिक स्वर सुनाइत अछि। कमजोर लोकक कातमे फुसफुसाएब आ प्रभावशाली व्यक्तिक सभा पर कब्जा करब सामाजिक भाषणक असमान अवसर देखबैत अछि। ओही पंचायत बादमे राजेसरक विरुद्ध प्रायोजित आरोपक आधार बनैत अछि। न्याय करबाक मंच जब पक्षधर साक्षी, धमकी आ दण्डवसुलीक व्यवस्था बनि जाइत अछि, तखन संस्था अपन नैतिक वैधता हेरा दैत अछि।

पञ्चैतीक दृश्यसभ उपन्यासमे नाटकीयता उत्पन्न करैत अछि। प्रश्न-प्रतिप्रश्न, गप्प काटब, टोकब, सामूहिक हँसी, लोक-उक्ति आ अचानक सूचना पहुँचनाइ—ई सभ कथन-प्रक्रियाकेँ गति दैत अछि। बाख्तिनक बहुस्वरताक दृष्टिसँ एहि संवादक महत्त्व ई अछि जे ककरो एकटा कथन पूरा गामक आवाज नहि बनि सकैत; किन्तु सत्तासँ

पोषित आवाज अधिक मान्यता पबैत अछि। उपन्यास ओहि मान्यताक निर्माण देखबैत अछि।

९. पारिवारिक शोक, श्रम आ जीविकाक विवशता

जागेसरक मृत्यु मात्र एकटा भावनात्मक प्रसंग नहि। भायक संग-संग राजेसरक जीवनसँ सुरक्षा, परामर्श आ आजीविकाक सहारा सेहो हटैत अछि। लहाश नहि भेटबाक कारण संस्कारक प्रश्न खुलैत अछि; विधवा भौजी, बच्चा आ वृद्ध माएक भविष्य राजेसरक उत्तरदायित्वमे आबि जाइत अछि। नदीक दुर्घटना एहि प्रकार परिवारक श्रम-विभाजन आ संसाधनक असमानताकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। शोकक बीचसँ 'आब परिवारक भार'क गप्प उठब मनुष्यक दुःखमे संरचनात्मक अर्थ जोड़ैत अछि।

रोजगारक अभाव राजेसरकेँ गाम छोड़ि दिल्ली-पंजाबक दिशामे पठबैत अछि। ई यात्रा सफलता-उत्सव नहि, विवश चयन अछि; घरक मोह आ आवश्यक आमदनीक बीच ओकर मन फाटल रहैत अछि। अनुपस्थिति निजी सम्बन्धक संकटमे सेहो बदलैत अछि, कारण ओइ समय कुलानन्द जातिगत आरोपकेँ व्यापक बनबाक अवसर मानैत अछि। उपन्यास एहि कारणें श्रम-प्रवासकेँ पारिवारिक नियन्त्रणक बदलैत समीकरणसँ जोड़ैत अछि; कमाइबाक यात्रा अन्यायसँ बाहर निकलबाक साधन होएबाक संगहि घरकेँ कमजोर छोड़ि देबाक जोखिम बनि जाइत अछि।

१०. नीताक अनुभव : सहमति, आत्मसम्मान आ हिंसाक प्रतिवाद

नीताक चरित्र उपन्यासक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नैतिक केन्द्र अछि। ओ आरम्भे सामाजिक जोखिमक पहचान करैत अछि; राजेसरक आश्वासनक बादो अपन जाति आ आर्थिक स्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। धरमलालक घरमे चाउर फटकैत समय कुलानन्द ओकर असहाय श्रमिक अवस्थाक दुरुपयोग करबाक चेष्टा करैत अछि। आर्थिक प्रलोभन, शारीरिक स्पर्श आ जबरदस्तीकेँ नीता स्वीकार नहि करैत; थप्पड़ आ धक्का दऽ ओ अपन असहमतिकेँ क्रियात्मक रूप दैत अछि। एहि दृश्यसँ स्पष्ट होइत

अछि जे ओकर भूमिका मात्र सहनशील प्रेमिकाक नहि, सक्रिय प्रतिरोध करयवाली स्त्रीक अछि।

कुलानन्द अस्वीकृतिसँ अपमानित भऽ सार्वजनिक जाति-मानक बहाना बनबैत अछि। घटना कथाक नैतिक उलटफेरक उदाहरण अछि : वास्तविक आक्रान्ता अपनाकेँ समाजक रक्षक घोषित करैत अछि, आ पीड़िते अपराधक बोझ वहन करैत अछि। भूमाकेँ धन दऽ कान भरब आ टोल-पञ्चैतीक आयोजन निजी दुष्कर्मक संरक्षण हेतु सामुदायिक संरचनाक दुरुपयोग देखबैत अछि। एकटा स्त्रीक प्रतिरोधक विरुद्ध सामूहिक अपमान खड़ा करब एहि उपन्यासक स्त्री-समीक्षात्मक गम्भीरतम प्रसंग अछि।

मटरूवा दण्डक भाषा स्वीकार कऽ बेटीकेँ मारैत अछि आ घरसँ निकालि दैत अछि। नीता अपन पक्ष कहबाक अवसर तक नहि पबैत; पिता-पुत्रीक घनिष्ठ सम्बन्ध लोकलाजक भीतिमे विघटित होइत अछि। आत्महत्या करबाक विचारक धरि पहुँचनाइ व्यक्ति-कमजोरीक चिह्न नहि, सामाजिक एकान्त आ संस्थागत हिंसाक भयावह परिणाम रूपेँ चित्रित भेल अछि। प्रेमक निजी अधिकार एतय जिएबाक सामाजिक अधिकारक प्रश्न बनि जाइत अछि।

११. सिमानपुरवाली : देखभालक वैकल्पिक सामाजिकता

राजेसरक भौजाइ सिमानपुरवालीक भूमिका उपन्यासक सामूहिक नैतिकता पर गम्भीर पुनर्विचार करबैत अछि। एक ओर ओकरा सम्बन्धमे गामक लोक तरह-तरहक कलंककारी टिप्पणी करैत अछि; दोसर ओर ओ नीताकेँ नदीक कछेरक संकटसँ बचबैत अछि, ओकर नोर पोछैत अछि आ सह-निवासक अवसर दैत अछि। नीताक जीवन पर जे अधिकार पिता आ पंचायत साबित करबाक चेष्टा करैत अछि, ओकर प्रतिपक्षमे सिमानपुरवाली रक्षा, श्रम-साझेदारी आ सहानुभूतिक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

ई भूमिका खास एहि लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे सिमानपुरवाली स्वयं सामाजिक उपेक्षाक मार झेलि रहल पात्र अछि। बेमार बच्चाक मृत्यु आ ओकर मानसिक पीड़ाक प्रसंग उपन्यासक करुण वातावरणक अंग बनैत अछि; तथापि ओ केवल दुःखक वस्तु बनिकऽ नहि रहैत, नीताक आश्रय आ सुरक्षाक स्रोत बनैत अछि। लोकक अपशब्दक उत्तरमे हँसुआ लऽ दुआरि पर ठाढ़ भेनाइ ओकर सुरक्षा-सङ्कल्पक दृश्यात्मक रूप अछि। एतए परम्परागत पंचायतसँ बाहर एकटा नारी-आधारित वैकल्पिक समुदाय निर्मित होइत अछि।

एहि पाठमे स्त्री-अनुभवक दोसर महत्त्वपूर्ण रेखा लरेनाक पत्नीक विष-सम्बन्धी मृत्यु अछि। पात्र सभक चर्चामे प्रश्न उठैत अछि जे ओ स्वयं विष खयली कि खुआओल गेलनि; युवक लोकनि घरक निरन्तर प्रताड़नाकेँ सेहो स्त्रीक मृत्युसँ जोड़ैत छथि। उपन्यास एहि घटनाकेँ जाँच-सिद्ध निष्कर्ष जकाँ नहि, विवादित सामाजिक सूचना आ सामूहिक चर्चा रूपेँ रखैत अछि। एहि रूपमे घटनाक अर्थ अफवाह, घरेलू हिंसा आ न्यायिक अनिश्चितताक संयुक्त समस्या अछि।

१२. स्वास्थ्य, आस्था आ निर्धनताक नैतिक अर्थ

रोग आ इलाजक प्रसंगमे उपन्यास लोकविश्वास आ आधुनिक चिकित्साक बीच सतही द्वन्द्व नहि रचैत; उपचारक आर्थिक उपलब्धता मूल समस्या बनैत अछि। रोगीकेँ ओझा-गहवर लऽ जेबाक घटनामे पढ़ल-लिखल युवक लोकनि विरोध करैत छथि, मुदा आन लोक महँग औषधि, धनाभाव आ पूर्व अनुभवक तर्क दैत छथि। राजेसर सेहो बुझैत अछि जे केवल झाड़-फूँक पर्याप्त नहि, मुदा समुचित उपचार करएबाक साधन ओकरा हाथमे नहि अछि। ई प्रसंग 'अन्धविश्वास'क आलोचनाकेँ आर्थिक विवशताक विश्लेषण बिना अधूरा ठहरबैत अछि।

सिमानपुरवालीक बच्चाक मृत्यु आ राजेसरक परिजनक रोगक प्रसंग संयुक्त रूपसँ देखल जाए तँ स्पष्ट होइत अछि जे दयालु व्यक्ति मात्रसँ स्वास्थ्य-सुरक्षा सुनिश्चित नहि होइत अछि। उपचारक दाम, बाहरी पहुँच, रोजी-रोटी आ सामाजिक बहिष्कार

रोगक अनुभवकेँ जटिल बनबैत अछि। उपन्यास एहि संरचनात्मक प्रश्नक पूर्ण नीतिगत समाधान प्रस्तुत नहि करैत; तथापि रोजमर्राक जीवनमे स्वास्थ्य असमानता केना परिवारक अस्मिता, आशा आ दुःखकेँ प्रभावित करैत अछि, तेकर प्रभावी साहित्यिक रूप दैत अछि।

१३. संवाद, लोक-उक्ति आ कथावाचकक विचारोन्मुखता

उपन्यासक भाषा ग्रामीण मैथिलीक जीवित बौद्धिक संसारसँ जुड़ल अछि। 'रौ', 'हौ', 'यौ', 'छइ', 'किए', 'कहैत' सन सम्बोधन आ ध्वनि केवल स्थानिक रंग नहि दैत; सामाजिक समीपता, पदानुक्रम, तिरस्कार आ स्नेहक भेद सेहो निर्मित करैत अछि। राजेसर–नीताक संवादक कोमलता, पञ्चैतीमे उच्चरित कठोर आज्ञा, भुखनाक स्पष्ट प्रतिवाद, मटरूवाक उग्र कथन आ सिमानपुरवालीक आश्वासन अलग-अलग वाचिक संस्कार प्रस्तुत करैत अछि। उपन्यासक सामाजिक आन्तरिकता एहि भाषिक भिन्नतासँ सघन होइत अछि।

कथावाचक प्रायः घटनाक बीच-बीचमे अनुभवजन्य सामान्यीकरण प्रस्तुत करैत अछि—मनुष्यक स्वार्थ, क्रोध, दुःख, काल, मृत्यु वा लोकव्यवहार पर टिप्पणी। एहिसँ गद्यक एकटा लोक-नैतिक स्वर विकसित होइत अछि। कतेको ठाम ई टिप्पणी घटनाकेँ विचारक ऊँचाइ दैत अछि, जेना पञ्चैतीक अन्याय वा अभावक कारण उपजैत कटुता; मुदा किछु दृश्यमे बारम्बार सामान्य कथन घटनाक स्वतः उभरैत अर्थकेँ पहिने स्पष्ट कऽ दैत अछि। से कथा-कला आ नीतिकथात्मक आग्रहक बीच रचनात्मक तनाव अछि।

प्राकृतिक दृश्य-वर्णन अनेक ठाम अत्यन्त प्रभावी अछि। सुर्जक किरण, बालुकाराशि, भीजल केश, झींगुरक स्वर, टप-टप वर्षा, सन्नाटा, गाछक डारि आ अन्हारक बिम्ब तनावकेँ देहधर्मी बनबैत अछि। आरम्भक घबराहट आ अन्तिम जल-उद्धारमे शारीरिक क्रियाक सूक्ष्म पुनरावर्तन पाठमे आन्तरिक संलग्नता बनबैत अछि।

एहि सौन्दर्यात्मक उपलब्धिक संगहि चरित्रक दृष्टि आ कथावाचकक सर्वज्ञ टिप्पणीसँ बनैत बहुस्तरीय आवाजक संयोजनक मूल्यांकन आवश्यक अछि।

१४. नैतिक परिवर्तन आ समापनक आलोचनात्मक विवेचन

चरम बाढ़िक प्रसंगमे राजेसर पहिने अपने परिवारकेँ सुरक्षित ऊँच जगह पहुँचबैत अछि, तकर बाद वृद्ध, दुर्बल आ फँसल लोककेँ बचबैत अछि। नीता सेहो लोककेँ हाथ पकड़ि पार करबैत अछि। धरमलालक बेटी सुलेखाक लापता बालककेँ बचाबय राजेसर जाइत अछि। घायल माथ आ जल-भँवरक जोखिम सहि बच्चाकेँ जीवित अनबाक बाद धरमलाल ओकर कर्मक सार्वजनिक प्रशंसा करैत अछि। गामक लोक मुखियाक पद देबाक प्रस्ताव करैत छथि; राजेसर प्रत्युत्तरमे समाजकेँ अपन परिवार कहैत पद वा लाभ नहि चाहबाक बात करैत अछि।

एहि अन्तक एकटा पठनीय अर्थ ई अछि जे सामाजिक प्रतिशोधक चक्र तोड़बाक लेल परोपकार आ मानवीय सहयोग उपयोगी पथ अछि। भुखनाक संघर्ष-आग्रहक प्रत्युत्तरमे राजेसरक कर्म सार्वजनिक भाषण बनैत अछि। ई पुनर्रचना नायकक नैतिक उत्कर्ष देखबैत अछि, मुदा प्रश्न सेहो छोड़ैत अछि : जे समूह आरोप आ दण्डक साधन बनल छल, ओकर संस्थागत उत्तरदायित्व कोना तय होयत? की केवल वीरताक एकटा क्षण जातिगत अनुशासन, पञ्चैतीक अन्याय आ स्त्रीक अपमानकेँ निरस्त कऽ सकैत अछि?

उपन्यास पूर्णतः सुखान्तक घोषणा करबासँ सावधान रहबाक कारण दैत अछि। राजेसर आ नीताक सम्बन्धक सामाजिक स्वीकृति क्रमशः बढ़ैत अछि; मन्दिर-विवाहक प्रसंग पाठककेँ गामक चर्चाक माध्यमसँ ज्ञात होइत अछि। जल-संकटक बाद नायकक प्रतिष्ठा जरूर पुनःस्थापित होइत अछि, परन्तु आरम्भिक अन्यायक दोषी संस्थाक आत्मपरीक्षण वा स्थायी सुधारक विस्तृत दृश्य नहि प्रस्तुत होइत अछि। अन्तिम हेलीकॉप्टर आशाक चिह्न अछि, मुदा कथाक आन्तरिक भाषामे ओ एक

सम्भावना अछि, सुनिश्चित मुक्ति नहि। एतए खुलापन उपन्यासक कलात्मक प्रामाणिकता बढ़बैत अछि।

१५. साहित्यिक उपलब्धि, सीमासभ आ मैथिली उपन्यासक व्यापक अर्थ

«जल भँवर»क पहिल महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि एकटा सरल आ व्यापक प्रतीकक सफल प्रयोग। भँवर केवल शीर्षकक रूपमे नहि, बरु संवाद, परिस्थिति, देहगत क्रिया आ स्वप्नक क्रममे पुनरावर्तित होइत अछि। दोसर उपलब्धि अछि गामक सामूहिक जीवनक बहुस्वरी दृश्य : खेत-मजदूर, पंचायत, टोल-सम्बन्ध, परिजन, युवा, नेता, चिकित्सक, ओझा, विधवा आ प्रवासी श्रमिक एक-दोसरक काज आ नियतिसँ जुड़ैत छथि। तेसर उपलब्धि नीताक आत्मसम्मान आ सिमानपुरवालीक आश्रय-संस्कृतिकेँ कथा-निर्माणक केन्द्र बनायब अछि।

रचनाक सीमा पर चर्चा करब ताहि उपलब्धिक अवमूल्यन नहि अछि। कथावाचकक कतिपय नीतिपरक सूत्र-वाक्य प्रसंगक खुला बहुअर्थिताकेँ घटबैत अछि। किछु पात्र सत्ता, लोभ आ दुष्टताक अपेक्षाकृत स्पष्ट प्रतिनिधि बनि जाइत छथि; हुनकर आन्तरिक द्वन्द्वक विकास नायक वा नीताक तुलनामे कम विस्तृत अछि। अन्तक सामूहिक प्रशंसामे न्यायिक-सामाजिक प्रश्नक निस्तारण अपेक्षाकृत तीव्र अछि। ई सभ बिन्दुकेँ एक प्रकारक लोक-आदर्शवादी रूपरेखा मानल जा सकैत अछि, जकर साहित्यिक शक्ति जननैतिक चेतनामे अछि आ सीमा संस्थागत विश्लेषणक अपूर्णतामे।

मैथिली गद्यक सन्दर्भमे ई उपन्यास एहि लेल उल्लेखनीय अछि जे ग्रामीण भाषाकेँ केवल विगत जीवनक स्मारक नहि बनबैत; ओकर माध्यमसँ लैङ्गिक प्रतिष्ठा, जातिगत नियन्त्रण, श्रम-प्रवास, चिकित्सा-अभाव आ आपदा-जकाँ प्रश्न उठबैत अछि। 'लोक' एतए एकात्म, निष्कलुष आ नैतिक समुदाय नहि अछि; ओ भीतरसँ विभाजित, बहसपूर्ण, दयालु आ क्रूर—सभ एक संग अछि। एहि जटिलताकेँ आत्मसात करब उपन्यासक वास्तविक समकालीनता अछि।

१६. गप्प, अफवाह आ साक्ष्यक राजनीति

«जल भँवर»क सामाजिक यथार्थक एकटा सूक्ष्म पक्ष अछि सूचना प्राप्त करबाक आ ओकरा सत्य बनबबाक प्रक्रिया। पञ्चैतीक सभामे प्रत्यक्ष घटना, साक्षी, सुनी-सुनायल बात आ मनगढ़न्त आरोप सदिखन अलग-अलग श्रेणीमे नहि रहैत अछि। जखनैं कोनो प्रभावशाली व्यक्ति अपन व्याख्याकैं लोकक बीच प्रसारित करैत अछि, ओ व्याख्या सामूहिक स्मृतिक अंग बनबाक जोखिम उठबैत अछि। पहिल पंचायतमे मजदूरक बकरी, काम, मालिकक अपेक्षा आ आपसी मान-मर्यादाक बातसँ आरम्भ भेल विवाद धीरे-धीरे दायित्व आ अधिकारक संघर्ष बनैत अछि। बादक जाति-पञ्चैतीमे ईहेन मंच सत्य-खोजक बदला आरोपक सार्वजनिक प्रदर्शनमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

झपसू पर लगाओल आरोप आ लालकान्तक प्रतिवादवला प्रसंगमे पञ्च बारम्बार कारण आ जवाब माँगैत अछि। ई जिज्ञासाक रूप व्यवस्था पक्ष सँ आवश्यक लगैत अछि; तथापि सभामे उपस्थित व्यक्तिक सामाजिक प्रतिष्ठा, स्वरक तीव्रता आ डरक माहौल निर्णयक दिशाकैं प्रभावित करैत अछि। उपन्यास यथार्थक ठीक एहि नाजुक बिन्दुकैं पकड़ैत अछि : प्रश्न पूछि लेब आ न्यायपूर्ण सुनवाई करब एके बात नहि अछि। जकरा बजबाक अवसर सीमित अछि ओकर तथ्य सेहो अपेक्षाकृत कमजोर प्रतीत होइत अछि। ई समस्या नीताक प्रसंगमे आरो विकराल होइत अछि, कारण ओहि ठाम अनुपस्थित राजेसरक नामपर गवाही बनाओल जाइत अछि आ नीताक अपना पक्षक स्थान क्रमशः छोट होइत जाइत अछि।

कुलानन्दक योजनामे आर्थिक प्रलोभन आ जातीय सम्बोधन एकहि युक्तिक दू भाग छथि। भूमाकैं देल धन निजी नाराज़गीकैं सामूहिक 'इज्जत'क भाषामे रूपान्तरित करैत अछि। धरमलाल पिता होइतो पुत्रक दुष्कर्म-सम्बन्धी संकट बुझैत अछि, मुदा सामाजिक प्रतिष्ठाक रक्षार्थ मटरूवाक कान पहिने भरबाक उपाय सोचैत अछि। एहि घटनाक मेलमे 'समाज कहैत अछि'क वाक्य अक्सर 'किछु समर्थ लोक कहलनि'क विस्तारित रूप बनि जाइत अछि। उपन्यासक सामाजिक आलोचना ताकतवर एहि

लेल अछि जे ओ अफवाहक प्रभाव देखबैत अछि, केवल अफवाह फैलाबयवलाक मनोदशा नहि।

लरेनाक पत्नीक विषसँ मृत्युक प्रसंग एहि ज्ञान-संकटक दोसर दृष्टान्त अछि। युवक सभ 'स्वयं खयली' आ 'खुआओल गेलनि'क बीच भेद उठबैत छथि; संगहि प्रताड़नासँ बाध्य भेल मृत्यु सेहो एकटा सम्भावना रूपेँ प्रस्तुत करैत छथि। कतहु सँ आएल अधूरी सूचना, पुलिसक भय आ नेता-पञ्चक सम्बन्ध घटनाकेँ अधिक जटिल बनबैत अछि। साहित्यमे एहन अनिर्णीत सामाजिक सूचना महत्त्वपूर्ण होइत अछि : लेखक पाठककेँ आरोपक सत्यता पर सहज फैसला करबाक बदला प्रश्नक स्रोत, उद्देश्य आ परिणाम देखबाक लेल प्रेरित करैत छथि।

१७. श्रमक देह, भौतिक अभाव आ नैतिक निर्णय

राजेसरक जीवनमे मजदूरी केवल आयक साधन नहि, समयक बँटवारा आ भावनात्मक सम्बन्धक नियामक अछि। रोपनी, खेतक काम, खढ़ बेचबाक बात, स्थानीय रोजगारक कमी आ टकापैसाक अभाव एकटा एहन ग्रामीण अर्थतन्त्रक संकेत दैत अछि जाहिमे घरक श्रम निरन्तर आवश्यक अछि, पर ओकर प्रतिफल अस्थिर रहैत अछि। जाहि कारण राजेसरकेँ बाहरी कमाइ दिस जेबाक आवश्यकता पड़ैत अछि, ओही कारण नीताक खिलाफ सामाजिक चाल चलबाक अवसर सेहो बनैत अछि। आर्थिक विवशता आ शक्ति-राजनीति एहि ठाम अलग-अलग अध्याय नहि, एकहि कारण-शृंखलाक हिस्सा अछि।

सामाजिक बहिष्कारक सभसँ प्रभावी पक्ष घरमे अन्नक कमी पैदा करब अछि। राजेसरक माए आ भौजाइकेँ गामक लोक काम नहि देबय चाहैत छथि; आखिरमे आन गामक सहारा टोहयबाक विवशता उत्पन्न होइत अछि। दण्डक ई रूप व्यक्तिक प्रतिष्ठासँ आगू बढ़ि जीविकाक स्वाधीनताकेँ प्रभावित करैत अछि। उपन्यास एतए बिना कोनो आँकड़ा देनहि आर्थिक हिंसाक दैनन्दिन स्वरूप देखबैत अछि : जे समाज

ककरो नैतिक अपराधी मानि लैत अछि, ओ ओकर श्रमक मूल्य चुकाबयसँ सेहो इनकार करि सकैत अछि।

विपत्ति-संग्राममे श्रमक अर्थ बदलि जाइत अछि। बाढ़िक समय राजेसरक देह घाव, थाक, कादो आ जलसँ भरि जाइत अछि; नीता वृद्ध आ कमजोर लोककेँ पकड़ि पार करबैत अछि। पूर्वमे जाहि समाज अपन सामूहिक निर्णयसँ दमन करैत छल, ओहि समाजक जीवनरक्षा लेल श्रम आवश्यक भऽ उठैत अछि। कथा एहि अन्तरकेँ नैतिक विलोम बनबैत अछि, मुदा श्रमक वास्तविक सामाजिक प्रतिष्ठा स्थायी रूपेँ बढ़ल कि नहि, ई प्रश्न पाठकक विवेचन लेल शेष रहैत अछि।

१८. अन्हार, इजोत आ खुलल अन्तक सौन्दर्य-व्यवस्था

गद्यक दृश्य-विधानमे अन्हार आ इजोत निरन्तर बदलैत रहैत अछि। पहिल स्वप्नक अन्हारमे हिंसक जीवक समूह राजेसरकेँ घेरैत अछि; भोरक प्रकाश ओकर जाग्रत जीवनक आरम्भ करैत अछि। नीताक अपमान-पश्चात रातिक अन्हार एकान्तक घनत्व बढ़बैत अछि। अन्तिम बाढ़िमे हवा दीपक बुताबैत अछि, चारू ओर पानि अछिये अछिये, आ ऊँच विद्यालयस्थल अस्थायी जीवन-सीमा बनि जाइत अछि। प्राकृतिक दृश्य एतए मनोदशाक सरल दर्पण नहि, क्रियाशील वातावरण अछि; लोकक काज करबाक क्षमता प्रकाश, वर्षा आ जलवेगक संग बदलैत अछि।

ध्वनिक भूमिका सेहो अल्प नहि अछि। आरम्भमे हाँफ, गरजन, गाछक कड़-कड़ाहट आ जागेसरक हाक स्वप्न-भंगक रचना करैत अछि। जागेसरक मृत्यु-समाचारमे रुदन आ मौनक क्रम सामाजिक आश्रयक विघटन अनुभव करबैत अछि। पञ्चैतीमे शोर, ठहाका आ फुसफुसाहट सामूहिक सत्ता-रचनाक ध्वनि अछि। अन्तमे गड़गड़ाहटक आवाज राजेसरक निद्रा तोड़ैत अछि। ध्वनि एहि प्रकार कथाकेँ अनेक मोड़पर दृश्यसँ पहिने अर्थक संकेत दैत अछि।

अन्तक हेलीकॉप्टर वला दृश्यकेँ मात्र सर्वसुखमय समाधान मानि पढ़ब उचित नहि। राजेसर अपन निद्रा-स्वप्नमे अन्हार घरसँ निकलबाक बाट खोजैत अछि;

जगलापर आकाशमे घुमैत यान देखैत अछि, जकर उद्देश्य पर कथन अनुमानक रूप रखैत अछि। ई दृश्य स्थानीय जनश्रम आ सम्भावित बाहरी राहतक बीच दूरी सेहो दर्शबैत अछि। जिनगी बचाबय कृत श्रम दृश्य रूपेँ उपस्थित अछि; उद्धारक राज्यीय संरचना एखन दूरसँ देखाइत सम्भावना अछि। एहि द्विस्तरीय दृश्य-विधानसँ समापनमे आशा, थाक आ प्रश्न एकसाथ उपस्थित रहैत अछि।

निष्कर्ष

राजदेव मण्डलक «जल भँवर»मे प्राकृतिक धार आ सामाजिक संरचना एक-दोसरक रूपक बनैत अछि। राजेसरक बारम्बार गाछक डारि धरि बचेबाक अनुभव मनुष्यक जीवनरक्षा मात्र नहि, पराधीन सम्बन्धसँ बाहर निकलबाक संघर्षक चित्र बनैत अछि। नीता सामाजिक लज्जाक नामपर थोपाल दण्डक विरुद्ध अपन असहमति प्रस्तुत करैत अछि; सिमानपुरवाली ओकर जीवनक रक्षा कऽ देखभालकेँ समुदाय-निर्माणक वैकल्पिक आधार बनबैत अछि। भुखना अन्यायक विरुद्ध संघर्षक भाषा दैत अछि, राजेसर अपकारक उत्तर उपकारसँ देबाक कल्पना आगाँ रखैत अछि। ई दुनू दृष्टि एक-दोसरक सरल पर्याय नहि; एहि तनावमे उपन्यासक मौलिक प्रश्न बसल अछि।

अन्तिम बाढ़ि मनुष्यक कर्मक परीक्षा करैत अछि, पर आरम्भिक सामाजिक अन्यायक सर्वथा अन्तक प्रमाण नहि दैत। ई भिन्नताकेँ स्वीकार कएलासँ उपन्यासक नैतिक आकांक्षा आ सामाजिक यथार्थक बीचक दूरी स्पष्ट होइत अछि। भँवरसँ बाहर निकलबाक पहिल अर्थ प्राणरक्षा, दोसर अर्थ सामाजिक मान्यता, आ तेसर—जे पूर्ण भऽ सकल अछि कि नहि—न्यायक टिकाउ व्यवस्था निर्मित करब। अन्तिम इजोत एहि तेसर अर्थकेँ भविष्यक प्रश्न रूपमे बचा रखैत अछि। «जल भँवर» अपन श्रेष्ठ क्षणसभमे पाठककेँ यएह सोचेबाक लेल बाध्य करैत अछि जे समाजक जाल तोड़बाक लेल दया आवश्यक अछि, मुदा दयाक संग न्याय सेहो अपरिहार्य अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव। जल भँवर। नव संस्करण। निर्मली, सुपौल : पल्लवी प्रकाशन, २०१९। ISBN 978-93-87675-49-0।

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. Austin: University of Texas Press, 1981.

Chatman, Seymour. Story and Discourse: Narrative Structure in Fiction and Film. Ithaca: Cornell University Press, 1978.

Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Translated by Jane E. Lewin. Ithaca: Cornell University Press, 1980.

Lefebvre, Henri. The Production of Space. Translated by Donald Nicholson-Smith. Oxford: Blackwell, 1991.

Spivak, Gayatri Chakravorty. “Can the Subaltern Speak?” In Marxism and the Interpretation of Culture, edited by Cary Nelson and Lawrence Grossberg, 271-313. Urbana: University of Illinois Press, 1988.

अध्याय 5

जाल : ऋण, जाति आ स्त्री–प्रतिरोध

राजदेव मण्डलक 'जाल'क पटकथा-शिल्प आ सामाजिक अर्थवत्ताक आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

राजदेव मण्डलक 'जाल' प्रेम, पारिवारिक दायित्व आ अपराधक परिचित कथात्मक उपादानक उपयोग करैत ग्रामीण समाजमे ऋण, सम्पत्ति, जाति आ लैंगिक प्रभुत्वक परस्पर सम्बन्धक दृश्यात्मक अभिव्यक्ति करबाक प्रयास अछि। एक दिस विक्रमक श्रमशील जीवन, शिक्षा आ पुलिस सेवामे प्रवेशक आकांक्षा अछि; दोसर दिस बरसाक पढ़ाइ, प्रेम आ वैवाहिक निर्णयपर पितृसत्तात्मक नियन्त्रण। महाजन सुइदचनक सूद-वसूली, संस्थागत पहुँच आ ओकर बेटा हरियाक हिंसा मिलि 'जाल' शीर्षककेँ सामाजिक अर्थ प्रदान करैत अछि। नदी-पारक आवागमन, नाव, साइकिल, घोड़ा, चिट्ठी, रेलगाड़ी आ टूटैत घरेलू सुरक्षा पटकथाक महत्त्वपूर्ण दृश्य-चिह्न बनैत अछि। आरम्भिक प्रेमप्रसंगसँ कथा सामुदायिक प्रतिरोधक दृश्य धरि पहुँचैत अछि, जतय गर्भवती फुलिया आ ओकर माए चनकी प्रभावशाली महाजन-परिवारक विरुद्ध प्रश्न उठबैत छथि। प्रस्तुत अध्ययन कथानक-संरचना, संवाद, दृश्य-संयोजन, स्त्री-पात्रक अभिकर्तृत्व, जाति–वर्गक अन्तर्सम्बन्ध तथा पाठगत आ सम्पादकीय असंगतिसभक विवेचन करैत अछि। निष्कर्षतः 'जाल'क साहित्यिक महत्त्व एकर ग्रामीण सत्ता-समीक्षा आ स्त्री-प्रतिरोधक सम्भावनामे निहित अछि; एकर कलात्मक सीमा दृश्यक पुनरावृत्ति, कतेको सम्बन्धक अपर्याप्त विकास आ संघर्षक अपूर्ण परिणतिमे प्रकट होइत अछि।

बीजशब्द : मैथिली पटकथा, राजदेव मण्डल, महाजनी ऋण, जाति, पितृसत्ता, स्त्री-प्रतिरोध, दृश्य-विन्यास, ग्रामीण समाज।

१. प्रस्तावना : पटकथा-लेखनक अभिप्राय आ आलोचनाक प्रश्न

'जाल'क आरम्भमे राजदेव मण्डल मैथिली साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे पटकथाक अभाव अनुभव करैत एक लघु प्रयास प्रस्तुत करबाक बात कहैत छथि। ई आत्मकथन कृतिक विधागत आकांक्षा स्पष्ट करैत अछि, मुदा लेखकक अनुभूतिकेँ मैथिली पटकथाक सम्पूर्ण इतिहासक निर्णायक प्रमाण मानि लेब उचित नहि। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे लेखक कथाकेँ केवल वर्णन करबाक अपेक्षा दृश्य, परिवेश, पात्रक गति आ संवाद द्वारा घटित करबाक माध्यम चुनैत छथि। तेँ कृतिक आलोचनामे कथ्यक सामाजिक तीक्ष्णता आ पटकथाक दृश्यात्मक शिल्पक पृथक-पृथक, तदनन्तर संयुक्त परीक्षण आवश्यक अछि।

कृतिक केन्द्रमे विक्रम आ बरसाक सम्बन्ध अवश्य अछि, मुदा ओकर सामाजिक तनाव केवल दू प्रेमीक मिलन-अमिलनसँ उत्पन्न नहि होइत। प्रेमक सम्मुख उभरैत बाधा महाजनक आर्थिक नियन्त्रण, जातिगत विवाह-निषेध, स्त्रीक देहपर स्वामित्वक दावा आ प्रभावशाली परिवारक दण्डहीनतासँ निर्मित अछि। एही कारण 'जाल'केँ एकरेखीय प्रेमकथा मानलासँ ओकर सामाजिक अर्थ सीमित भऽ जाइत। एहि अध्ययनक मूल प्रश्न अछि—कथामे विभिन्न प्रकारक प्रभुत्व कोना एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि; दृश्य-शिल्प ओहि प्रभुत्वकेँ कोन रूपमे मूर्त करैत अछि; आ पात्रसभक प्रतिरोध कथाक अन्तर्धाराकेँ कतेक परिवर्तित करैत अछि।

ई आलोचना कृतिक स्वयंसिद्ध घटनासभ आ दृश्य-निर्देशक आधारपर आधारित अछि। जतेक तथ्य रचनामे स्पष्ट अछि, ओतबे तथ्य ग्रहण कएल गेल अछि; जतय पात्रक मनोभाव, सामाजिक संरचना वा रूपक सम्बन्धी व्याख्या प्रस्तुत होइत अछि, ओतय ओकरा पाठाधारित आलोचनात्मक निष्कर्षक रूपमे बुझबाक चाही। एहन

पद्धतिसँ प्रशंसा आ आपत्तिक बीच संतुलन बनैत अछि—विशेषतः ओतय, जतय रचनाक विषय महत्त्वपूर्ण होइतो दृश्यात्मक निष्पादन असमान अछि।

२. सैद्धान्तिक सन्दर्भ : क्रिया, दृश्य आ सामाजिक दृष्टि

अरस्तूक 'पोएटिक्स'मे कथाविन्यासक मूल्याङ्कनक आधार काज-कर्मक क्रम, घटना-सम्बन्ध आ समग्रताक विचार अछि। यद्यपि 'जाल' प्राचीन त्रासदी नहि, तथापि घटनासभ एक-दोसरासँ कारणात्मक रूपेँ जुड़ैत अछि वा नहि—ई प्रश्न ओकर पटकथा-विन्यास जाँचबाक लेल उपयोगी अछि। सिड फील्डक पटकथा-विचारमे चरित्र, दृश्य, कथा-संरचना आ कथात्मक मोड़क संयुक्त कार्यपर बल अछि। एहि दुनू दृष्टिसँ देखलापर 'जाल'क शक्तिशाली आरम्भिक स्थापना आ उत्तरार्धमे ढील पड़ैत संरचनात्मक नियन्त्रण दुनू प्रकाशमे अबैत अछि।

डेविड बोर्डवेल, क्रिस्टिन थॉम्पसन आ जेफ स्मिथ फिल्मीय रूपक चर्चामे कथात्मक संगठनसँ अलग दृश्यरचना, सम्पादन आ ध्वनिक महत्त्व स्पष्ट करैत छथि। एहि आधारपर केवल 'कट टू' अथवा 'फ्लैशबैक' लिखब पर्याप्त नहि; दृश्य-परिवर्तनसँ कथात्मक अर्थ, तनाव वा सूचनाक कोन परिवर्तन होइत अछि, तकर परीक्षण चाही। एहि लेखमे नदीक दृश्य, दोहराइत यात्राक छवि, सामूहिक शोर, लालटेनक प्रकाश आ प्रतीक्षाक अवधि सभकेँ एही दृष्टिसँ पढ़ल गेल अछि।

पितृसत्तात्मक दृष्टिक समीक्षामे लौरा मल्वेक स्त्रीकेँ दृश्य-वस्तु बनबैत फिल्मीय परम्परापर लिखल अध्ययन विचारोत्तेजक अछि; मुदा 'जाल'क स्त्री-पात्रसभ केवल दृश्य-वस्तु नहि, अन्तिम दृश्यसभमे सामाजिक प्रतिवादक वाहक सेहो छथि। जातिगत विवाह-नियन्त्रणक सन्दर्भमे डॉ. भीमराव आंबेडकरक जाति-समीक्षा उपयोगी तुलनात्मक क्षितिज प्रदान करैत अछि। एहि सैद्धान्तिक सूत्रसभकेँ मैथिली ग्रामीण जीवनपर आरोपित कोनो तैयार साँचा नहि, अपितु पाठक वास्तविक विरोधाभास बुझबाक आलोचनात्मक उपकरणक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि।

३. कथाक संरचना : प्रेमक आकर्षणसँ सामाजिक संघर्ष धरि

कृतिक पहिल दृश्य नदीक कछेरक विस्तृत जीवनचित्र प्रस्तुत करैत अछि—भोरक सूर्य, हरियर परिवेश, चरैत पशु, खेलैत बालक, नाव आ नदीक दोसर कात देखाइत विद्यालय, महाविद्यालय, स्टेशन आ बस। ई आरम्भ कोनो नायकक निजी संकटसँ नहि, ग्रामीण जीवनक व्यापक स्थानिक बनावटसँ होइत अछि। तुरन्त बाद विक्रमक घरमे दूध दुहैत माए, पढ़ाइ आ जीविकाक बीच दौड़ैत बेटा तथा नौकरीक आवेदन-प्रपत्रक प्रसंग उपस्थित होइत अछि। एना कथाक आर्थिक आधार रोमानी परिचयसँ पहिने स्थापित होइत अछि; प्रेमकथा हवेहवाइ इच्छा नहि, श्रमशील जीवनक वास्तविक दबावक बीच फूटैत अछि।

छअमसँ नअम दृश्य धरि विक्रम–बरसाक आकस्मिक निकटता, नावपर पएर पड़बाक असहजता, हाथ पकड़ि लेबाक दुस्साहस, बरसाक रोष, डाकघरपर पुनर्भेंट आ रात्रिक स्वप्न चित्रित अछि। एहिमे हास्य, आकर्षण आ असहमतिक त्वरित आरोह-अवरोह अछि। बरसा पहिने-पहिने विक्रमक सहज प्रेम-कल्पनाक पुष्टि नहि करैत अछि; ओकर मौन, पएर हटेबाक प्रयास आ हाथ छोड़बाक स्पष्ट आग्रह बतबैत अछि जे स्त्रीक अनिच्छाकेँ प्रेमक आरम्भ मानि रोमानीकरण कए देब आलोचनात्मक भूल होयत। एहि आरम्भमे पटकथाक दर्शकीय चपलता अछि, मुदा सहमतिक सूक्ष्म नैतिक प्रश्न सेहो निहित अछि।

दसम दृश्यसँ सामाजिक संकट अग्रभागमे आबि जाइत अछि। सुइदचन आ मुंशीक बही-खाता, श्यामबाबूक बढ़ैत ऋण, खेतीक असफलता आ खाद-पानिक अभावक योजना—ई सभ महाजनी सत्ताक योजनाबद्ध रूप खोलैत अछि। तत्पश्चात बरसाकेँ उठा लेबाक प्रयास, विक्रमक हस्तक्षेप, मजदूरसभक जुटान, दबंगक प्रतिशोध आ श्यामबाबूक विवशता घटनासभकेँ एक-दोसरासँ जोड़ैत अछि। एहि खण्डमे कथाक निजी प्रेम आ सार्वजनिक अन्यायक भेद विलीन होइत अछि; विक्रमक प्रेम-सम्बन्धक नैतिक परीक्षा ओकर सामाजिक हस्तक्षेप बनि जाइत अछि।

बीसमसँ सत्ताइसम दृश्य धरि घटना-क्रम एकटा व्यापक षड्यन्त्रक रूप लैत अछि। हरिया अपन गिरोहकेँ बरसाक सन्दर्भमे जातिगत पहिचानक नामपर रोकैत अछि, मुदा विक्रमक विरुद्ध क्रोध बढ़बैत अछि। सुइदचन बरसासँ हरियाक विवाहमे ऋण-वसूली आ सम्पत्ति-अर्जनक अवसर देखैत अछि; बादमे श्यामबाबूक सम्मुख निर्णय थोपैत अछि। बरसा अपन पिताक समक्ष विक्रमक पक्ष रखैत अछि, मुदा जाति आ अफवाहक नामपर ओकर घरसँ बाहर निकलनाइ रोकल जाइत अछि। एतय 'जाल' भौतिक आ नैतिक दुनू रूपमे कसैत अछि।

अठाइसम दृश्यसँ विक्रमक नौकरी-सम्बन्धी पत्र, घर छोड़बाक तैयारी, रघुआ द्वारा बरसाकेँ चिट्ठी पहुँचेनाइ, विवाह-सम्बन्धी रीति आ रेलगाड़ीक पाछू दौड़ैत बरसाक दृश्य कथाकेँ तीव्र परिवर्तनक कगारपर आनैत अछि। अगिला दृश्यसभमे बरसाक अनुपस्थिति, श्यामबाबूक आत्मग्लानि आ हरियाक खोज, फेर फुलियाक गर्भ आ चनकीक प्रतिरोध एकटा दोसर सामाजिक संघर्ष खोलैत अछि। ई अन्तिम मोड़ अर्थपूर्ण अछि, कारण महिला-प्रश्न प्रेमिकाक अपहरणसँ बढ़ि यौन-शोषण, गर्भक जिम्मेवारी आ सार्वजनिक न्यायधरि पहुँचैत अछि; मुदा विक्रम–बरसाक प्रमुख कथा आ फुलिया–हरियाक द्वितीय कथा कोना निर्णायक रूपेँ जुड़त, से नाटकीय रूपसँ स्पष्ट नहि होइत अछि।

४. 'जाल' शीर्षक : ऋण, संस्थागत पहुँच आ वैवाहिक सौदाबाजी

'जाल' शीर्षकक सर्वाधिक स्पष्ट आधार सुइदचनक आत्मविश्वास अछि। ओकर कथनानुसार श्यामबाबू समयपर खाद-पानि नहि पाओताह, बैंकसँ सेहो सहायता नहि भेटतनि; महाजनक प्रभाव बहुत दूर धरि पसरल अछि। ई महाजनी सम्बन्धकेँ साधारण ऋणदाता–ऋणी सम्बन्धसँ ऊपर उठा कऽ उत्पादक साधन, संस्थागत ऋण, फसल आ भविष्यक आमदनीपर नियन्त्रणक रूपमे देखबैत अछि। 'जाल' एतय एकटा छलयुक्त परिस्थिति नहि, विकल्पसभकेँ क्रमशः बन्द करबाक शक्ति-विन्यास अछि।

महाजन श्यामबाबूकेँ केवल बकाया रकम चुकाबै लेल दबाव नहि दैत; ओ ऋणकेँ सामाजिक अधीनतामे परिवर्तित करैत अछि। ओहि कारणे बरसाक विवाहक प्रश्न उठिते ऋणक खाता, खेतक मालिकी आ दहेजक कल्पना एक संग आ जाइत अछि। सुइदचनक कल्पनामे कर्जदारक बेटी विवाहयोग्य मनुष्यसँ पहिने सम्पत्तिक हस्तान्तरणक माध्यम बनि जाइत अछि। दहेजक ओहि गणितमे श्यामबाबूक खेत ओहि परिवारकेँ भेटत, जे पहिनहि महाजनी ब्याजसँ ओकर आर्थिक भविष्य बन्द करैत रहल अछि। ई शीर्षकक सबसँ तीक्ष्ण विडम्बना अछि—जकरा परिवार सुरक्षा मानि रहल अछि, सएह परिवार अधीनताक यन्त्र अछि।

मुंशी एहि व्यवस्थामे महत्त्वपूर्ण छथि। बही-खाता देखब, ब्याजक भार गनब, विरोधीक उदाहरण बना कऽ दण्डित करबाक सलाह देब आ मालिकक हिंसात्मक निर्णयकेँ सहमति देब—ई सभ ओकर सक्रिय भूमिकाक चिह्न अछि। 'जाल' केवल एकटा अत्याचारी व्यक्तिक चरित्रचित्रण नहि करैत; ओकरा बचबैत लेखा-जोखा, लाठी, भय, सामाजिक प्रतिष्ठा आ कथित संरक्षकत्वक गठजोड़ देखबैत अछि। एकरा व्यापक सामाजिक यथार्थक सम्पूर्ण दस्तावेज मानबाक आवश्यकता नहि; कृतिक भीतर ई गठजोड़ पर्याप्त स्पष्टतासँ प्रत्यक्ष अछि।

अर्थशास्त्रीय दृष्टिसँ उल्लेखनीय ई अछि जे खेतीक 'नहि उपजैबाक' संकट व्यक्तिगत आलस्यक परिणाम नहि देखाओल गेल अछि। विक्रम स्वयं कहैत अछि जे खेतसँ उपज नहि भेल तँ दूधक रोजगार प्रारम्भ केलक। श्यामबाबूकेँ सेहो खेतक अनिश्चित आय आ शैक्षिक खर्चक दबाव अछि। एहन स्थितिमे उत्पादनक अस्थिरता आर्थिक निर्भरता बढ़बैत अछि, आ महाजन ओहि निर्भरताकेँ सामाजिक तथा यौन-राजनीतिक नियन्त्रणमे बदलबैत अछि। पटकथाक समकालीन अर्थवत्ता एहि कारण-दर्शनमे छुपल अछि।

५. नदी, नाव आ रेल : ग्रामीण भूगोलक दृश्यात्मक राजनीति

'जाल'मे नदी केवल रमणीय पृष्ठभूमि नहि। नदीक एतय आ ओतय रहैत गाम, स्कूल, कॉलेज, बाजार, डाकघर, रेल आ रोजगारक सम्भावना भूगोलकेँ असमान अवसरक रूपमे बाँटैत अछि। विक्रम दूध बेचै लेल नदी पार करैत अछि; बरसा पढ़ाइ लेल; दुनूक जीवन-पथ नावपर मिलैत अछि। एना नाव सामाजिक गति आ आकस्मिक सम्पर्कक साझा मंच बनैत अछि। ग्रामीण जनक नियमित आवागमनक संग प्रेमक उद्भव जुड़बाक कारण कथा आ स्थान परस्पर निर्भर बनैत अछि।

पार-पहुँचबाक हड़बड़ी, साइकिलक घंटी, नाविकक टोक, बरसाक असन्तोष आ विक्रमक असहज हास्य—ई सभ नदीक दृश्यकेँ बहुस्तरीय बनबैत अछि। एतय एकहि दृश्य-क्षेत्रमे श्रमक समय, युवावस्थाक आवेग आ स्त्रीक देहगत सीमा टकराइत अछि। नाव छोट अछि, लोक बेसी; आकस्मिक स्पर्श आ अनिच्छित हस्तक्षेपक सम्भावना बढ़ैत अछि। एहि दृश्यकेँ केवल 'पहिल नजरिक प्रेम' कहब तकर सामाजिक सूक्ष्मता घटायब होयत।

नदी-पारक यात्रा आ रेलगाड़ीक प्रस्थानक बीच एकटा अर्थपूर्ण असमानता देखाइत अछि। नाव गामक लोककेँ रोजमर्राक आवश्यकता पूर्ति करबाक लेल पार करैत अछि; रेल विक्रमकेँ गामसँ बाहर, नौकरीक दिशामे लऽ जाइत अछि। पहिल आवागमन आवर्ती अछि, दोसर सम्भवतः जीवनक निर्णायक परिवर्तन। बरसा रेलगाड़ीक पाछू दौड़ैत अछि आ घोड़ा ओकर पाछू अबैत अछि—ई चित्र गति, अवसर, प्रेम आ पीछा कएनिहार प्रभुत्वक संगठित दृश्य बनि सकैत छल। तथापि एहि दृश्यसँ अगिला दृश्यधरि बरसाक वास्तविक गमनपथ स्पष्ट नहि रहबाक कारण छविक शक्ति कथानकक निश्चिततामे परिणत नहि भऽ सकैत अछि।

६. विक्रम : श्रम, शिक्षा आ राज्यक आश्वासन

विक्रमक चरित्रक सामाजिक विश्वसनीयता ओकर प्रारम्भिक दैनन्दिनीमे अछि। ओ पढ़ैत अछि, दूधक कनस्तर साइकिलपर लादि शहर जाइत अछि, डाकघरमे आवेदन

पठबैत अछि आ माएक अपेक्षासँ बन्हल अछि। ओकर मातृ-सम्बन्ध करुणाभरि, मुदा निःशर्त प्रशंसात्मक नहि। माए आर्थिक अनिश्चितता बुझैत छथि, बेटाक उच्छृंखल प्रतिरोधसँ डरैत छथि; ओ अपन घरक रक्षाक दृष्टिसँ अपराधी शक्तिसँ दूर रहबाक परामर्श दैत छथि। एहि संवादमे ग्रामीण निम्न-सम्पन्न परिवारक जोखिम-बोध मार्मिक ढंगसँ व्यक्त होइत अछि।

रघुआक 'दरोगा' सम्बोधनसँ विक्रमक शैशवक खेल आ भविष्यक आकांक्षा जुड़ैत अछि। बाल्यकालमे चोर-सिपाही खेलमे सिपाही बनैबाक प्रसंग ओकरा लेल नामक बोझ बनि रहल छल; बादमे ओहि नामकेँ वास्तविक पेशामे परिणत करबाक निश्चय करैत अछि। ओकर घोषणा—अन्यायक विरोध करबाक लेल पुलिस बनब—व्यक्तिगत अपमानकेँ सामाजिक उत्तरदायित्वमे रूपान्तरित करैत अछि। मुदा राज्य-संस्थामे प्रवेशक आशा ओकर तत्काल प्रतिरोधक नैतिक जटिलताकेँ हल नहि करैत। जे सत्ता-व्यवस्था सुइदचनक प्रभावमे बताओल गेल अछि, ओहि व्यवस्थाक भीतर पुलिस बनि न्याय प्राप्ति सम्भव कोना होयत—ई रोचक प्रश्न पटकथामे पर्याप्त विकसित नहि भेल अछि।

विक्रमक बरसाकेँ बचेनाइ वीरताक दृश्य अछि, मुदा ई 'असगर नायक सभ किछु करैत अछि' प्रकारक संरचना नहि। खेतमे काज करैत मजदूरसभ हँसुआ आ लाठी नेने अबैत छथि; बदमाश तखन भागैत अछि। अर्थात् कथाक निर्णायक प्रतिरोधमे सामूहिक हस्तक्षेप अनिवार्य अछि। एतय लोक-एकजुटताक बीज अछि, जकरा बादक दृश्यसभमे निरन्तर बढ़ाओल जा सकैत छल। एहि बिन्दु पर रचना नायक-केन्द्रित दृष्टिसँ बाहर निसरबाक सम्भावना खोलैत अछि।

विक्रमक नौकरीक पत्र कथाक औपचारिक मोड़ होइत अछि। पाठककेँ लागत जे सामाजिक न्याय लेल ओकर पहिने व्यक्त आकांक्षाक परीक्षण आब होयत; ओ प्रशिक्षण अथवा सेवामे प्रस्थान करैत अछि। मुदा पठित घटनाक्रममे ओहि प्रशिक्षण, नियुक्ति वा पुनरागमनक प्रसंग नहि अबैत। एहि कारण विक्रमक चरित्रक स्थापना सशक्त आ ओकर नाटकीय परिणति अधूरी देखाइत अछि। अधूरापनकेँ स्वयंमे दोष

मानब आवश्यक नहि, किन्तु जखन कथाक प्रमुख नैतिक संकल्प सार्वजनिक घोषणाक रूपमे स्थापित कएल जाइत अछि, तखन ओकर फलितार्थक अपेक्षा बनब स्वाभाविक अछि।

७. बरसा : प्रेम, शिक्षा आ स्वायत्तताक प्रतिबन्ध

बरसाक पहिल प्रवेश पोथी नेने नदीक दिशामे तेजीसँ चलैत युवतीक रूपमे होइत अछि। ई परिचय ओकरा सक्रिय शिक्षार्थीक सामाजिक पहिचान दैत अछि। नावपर ओ अनावश्यक सहायता टारैत स्वयं चढ़ैत अछि; विक्रमक अनिच्छित स्पर्शपर असन्तोष प्रकट करैत अछि; बादक दृश्यमे डाकघरपर भेटलापर अपन पुस्तक स्वयं उठा लैत अछि। एहि छोट-छोट क्रियासभमे ओकर स्वभावक स्वतन्त्र रेखा देखाइत अछि। प्रेमक नायिका होयबाक अर्थ ओ अनिवार्य रूपैँ पुरुषक प्रस्ताव स्वीकार करएवाली पात्र नहि अछि।

बरसाक अपहरणक प्रयत्नक बाद ओ अपन पिताकेँ घटनाक जानकारी दैत अछि। पिता ओकर पीड़ा सुनैत छथि, किन्तु शीघ्रे परिवारक सम्मान, अफवाह आ उपयुक्त विवाहक दबाव सामाजिक निर्णयपर हावी भऽ जाइत अछि। सुइदचनक कथित सुरक्षा पर विश्वास करैत पिता स्वयं बेटीकेँ सबसँ खतरनाक सम्बन्धक सम्मुख पहुँचा दैत छथि। कृतिक करुण पक्ष ई नहि जे पिता बेटीसँ प्रेम नहि करैत छथि; बरु ई जे स्नेह होइतो सत्ता-समीकरणक विवेक नहि रहबाक कारण ओ बेटीकेँ सुरक्षा नहि देबाक स्थितिमे छथि।

बरसाक जाति-सम्बन्धी विरोध सेहो स्पष्ट अछि। पिता विक्रमकेँ अपना जाति-बिरादरीक नहि मानैत छथि; बरसा ओहि तर्कक प्रतिवादमे विक्रमक वास्तविक संरक्षण आ सद्भावक स्मरण करबैत अछि। प्रेम एतय केवल भावना नहि, अनुभवजन्य नैतिक निर्णय बनैत अछि—ओ जकरा द्वारा सुरक्षित कएल गेल, ओकर गुणकेँ जातिगत दूरीसँ ऊपर रखैत अछि। मुदा पिता ओकरा घर-अँगनासँ बाहर निकलनाइ

रोकि दैत छथि। ई स्थानबन्दी शिक्षा लेल नदी-पार जाएवाली युवतीक आरम्भिक मुक्त गतिसँ तीक्ष्ण विरोध उत्पन्न करैत अछि।

उत्तरार्धमे बरसा चिट्ठी पबैत अछि, विवाहक तैयारीक बीच दौड़ैत रेलगाड़ीक पाछू देखाइत अछि, तदनन्तर ओकर ठेकान अज्ञात रहैत अछि। एहि क्रियासभकेँ प्रेमक साहसी दावाक संकेतक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा कथा ओकर सुरक्षित विकल्प, निर्णयक स्पष्टता वा आगूक गमनपथ नहि बतबैत। एही ठाम स्त्रीक अभिकर्तृत्वक विषय कथाक केन्द्रमे रहितो कथात्मक अनिर्णयक शिकार होइत अछि। बरसा की चाहैत अछि आ ओकर विकल्पक परिणाम की होइत अछि—ई प्रश्न महत्त्वपूर्ण रहि जाइत अछि।

८. श्यामबाबू : करुण पिता आ प्रभुत्वक वाहक

श्यामबाबूकेँ केवल कमजोर वा प्रतिगामी पिताक रूपमे देखब अपूर्ण विश्लेषण होयत। ओ पढ़ेनिहार छथि, खेतक आमदनी अपर्याप्त अछि, ऋण बढ़ैत अछि, आ पत्नी नहि रहबाक कारण बेटीसँ संवादक भावनात्मक दूरी सेहो छथि। बेटीपर संकट अबिते ओ चिन्तित होइत छथि, अपराधीकेँ दण्डित करबाक चाह करैत छथि, मुदा सुइदचनक पास सलाह लेल जाइत छथि। पाठक एतय एकटा महत्वपूर्ण विरोधाभास देखैत छथि—जकरा आर्थिक शक्तिसँ डरैत छथि, ओकरे नैतिक संरक्षणक स्रोत मानैत छथि।

छब्बीसम दृश्यक बातचीतमे श्यामबाबू बेटीसँ राय लेबाक पहिल प्रयास करैत छथि; सुइदचन ओकरा चुप रहबाक संकेत दैत अछि। ई मौन केवल एकटा पिताक पराजय नहि; ग्रामीण प्रभुत्वक सार्वजनिक व्याकरण अछि, जतय आर्थिक अधीनता बोलबाक अधिकार सेहो हरण करैत अछि। बादमे श्यामबाबू बेटीकेँ जाति आ प्रतिष्ठाक दबावमे अनुशासित करैत छथि—एतय पीड़ित पुरुष स्वयं पितृसत्ताक वाहक बनि जाइत छथि। ई दोहर भूमिका कृतिक मनोवैज्ञानिक गहराइ बढ़बैत अछि।

बेटीक लुप्त भऽ गेलाक बाद सूर्यकेँ सम्बोधित श्यामबाबूक आत्मप्रश्न—दोष हुनकर अछि वा बेटीक—कथाक विशिष्ट करुण क्षण अछि। ओ समाजक हँसी, अनुपस्थित पत्नी आ पिताक कर्तव्यक बोधक बीच फँसल छथि। एहि दृश्यमे तर्कक अपेक्षा आत्मग्लानि बेसी प्रभावी अछि। तथापि करुणामय प्रस्तुति श्यामबाबूक पहिल निर्णयसभकेँ निर्दोष नहि बना दैत; नाटकक नैतिक शक्ति एही द्वन्द्वमे अछि जे प्रेम करैत पिता सेहो अन्यायक व्यवस्था टिकबैत रहि सकैत छथि।

९. हरिया : जातिगत संरक्षण, यौन-अधिकारबोध आ दण्डहीनता

हरिया सुइदचनक आर्थिक प्रभुत्वक हिंसात्मक विस्तार अछि। घोड़ा, हथियारक धमकी, बदमाशक साथ, शराब आ विक्रमक माएक घरपर अपमानजनक आक्रमण—ई सभ ओकर सामाजिक पहिचान रचैत अछि। विशेष ध्यान देबाक तथ्य ई जे ओ बरसाक विरुद्ध हिंसा कएनिहार अपन लोककेँ जातिगत समानताक नामपर रोकैत अछि, मुदा विक्रमकेँ शत्रु मानैत अछि। एहि विभाजनमे स्त्रीक सुरक्षा सार्वभौम नैतिक सिद्धान्त नहि, जाति आ स्वामित्वक सीमित संरक्षा अछि।

हरियाक बरसाप्रति आकर्षण धीरे-धीरे दावामे बदलैत अछि। बरसाक प्रेमगीत देखिते ओकर क्रोध बढ़ैत अछि; ओ विक्रमक माएक सामने हिंसाक भय देखबैत अछि। सुइदचन एहि व्यक्तिगत चाहकेँ सम्पत्ति-अर्जनक अवसर बनबैत अछि। पिता-पुत्रक सम्बन्धमे प्रेम आ विवाहक नैतिक शब्दावली अनुपस्थित अछि; ओकर स्थानपर अधिकार, विरोधीक दमन आ लाभक गणना अछि। एही कारण हरिया व्यक्तिगत रूपसँ खलनायक होइतहुँ शोषणकारी घरानाक संस्थागत चरित्र सेहो अछि।

फुलियाक गर्भ-सूचना पाबि हरिया ओकरासँ सम्बन्ध तोड़बाक आ गर्भसमापन करेनबाक आदेश दैत अछि; आवश्यकता पड़लापर जान लेबाक धमकी दैत अछि। गर्भधारण वा गर्भसमापनक नैतिक–कानूनी प्रश्नसँ अलग एहि दृश्यक केन्द्र स्त्रीक निर्णयपर हिंसात्मक नियन्त्रण अछि। फुलिया अपन गर्भक विषयमे स्वयं निर्णय लैत छथि, हरिया ओकर इच्छा दबाबै चाहैत अछि। पुरुषक अविवेकी यौन-व्यवहार आ

जिम्मेवारीसँ पलायन ओहि परिवारक विवाह-सम्मान सम्बन्धी प्रचारकेँ कपटपूर्ण सिद्ध करैत अछि।

१०. फुलिया आ चनकी : निजी अपमानसँ सार्वजनिक प्रतिरोध धरि

'जाल'क उत्तरार्धक अत्यन्त सार्थक घटनाक्रम फुलियाक गर्भ आ चनकीक क्रोधसँ जुड़ल अछि। फुलिया अपन माएक सम्मुख सच प्रकट करैत छथि; ओकर घर स्वयं आर्थिक अभाव, पिताक मद्यपान आ घरेलू कलहसँ जूझि रहल अछि। भोजनक कमी आ शराब लेल पैसाक माँगक बीच बेटी नोर बहबैत घर पहुँचैत छथि। एहि दृश्यमे लैंगिक शोषण अलग-थलग घटना नहि, अभावग्रस्त घरक संचित असुरक्षाक बीच घटित संकट बनि उभरैत अछि।

चनकीक प्रतिक्रिया आरम्भमे 'इज्जत'क भाषामे अछि; ओ सार्वजनिक बदनामीक माध्यमे हरियाकेँ विवाह लेल बाध्य करबाक बात करैत छथि। एकरा केवल प्रगतिशील स्वायत्तताक निर्बाध विजय नहि कहि सकैत छी। विवाहकेँ एकमात्र प्रतिकार मानब ओहि पितृसत्तात्मक सामाजिक मूल्यसँ मुक्त नहि, जकर कारण फुलिया पहिनेसँ संकटमे अछि। तथापि चनकीक महत्त्व एहिमे अछि जे ओ भयभीत मौन स्वीकार नहि करैत छथि; ओ सामाजिक अपमानक हथियारकेँ शोषकक विरुद्ध उलटि दैत छथि।

अड़तीसम दृश्यमे चनकी, फुलिया आ टोलक लोक सुइदचनक द्वारपर पहुँचैत छथि। महाजन आ मुंशी हल्ला करनिहारकेँ धमकबैत छथि; चनकी प्रत्यक्ष सामना करैत छथि। ओकर फेंकल खापड़ सुइदचनक माथापर लागि जाइत अछि। ई क्रिया सत्ताक प्रतीकात्मक उलटफेर अछि—जकरा घरमे लाठी आ भयक एकाधिकार छल, ओकर देह साधारण स्त्रीक प्रतिरोधसँ घायल होइत अछि। महाजनक घायल होयब शोषणक समाप्ति नहि, मुदा एकाधिकारक अभेद्यतापर प्रहार अवश्य अछि।

श्यामबाबू एहि सार्वजनिक प्रतिवादक साक्षी छथि। ओ एहि बीच हरिया आ ओकर घरानाक चरित्र-विषयक जानकारी सुनैत छथि आ पश्चात्तापक मुद्रामे चलि जाइत

छथि। ई दृश्य पहिल कथा आ दोसर कथाक बीच एकटा महत्त्वपूर्ण सेतु बनबैत अछि। जे पिता महाजनकेँ बेटी लेल सुरक्षित संरक्षक मानैत छलाह, ओ आब ओकर घरक अन्याय सार्वजनिक रूपमे देखैत छथि। मुदा श्यामबाबूक एहि बोधक अगिला कार्यवाही कथामे नहि देखाइत; फलतः रचनाक सभसँ शक्तिशाली नैतिक उद्घाटन नाटकीय निष्कर्ष धरि नहि पहुँचैत।

११. जाति, सम्पत्ति आ विवाह : परस्पर गुथल प्रभुत्व

'जाल'मे जाति केवल विवाहक अन्तिम बाधा नहि। हरिया अपन संगीकेँ बरसाक विरुद्ध हिंसा नहि करबाक कारण रूपमे ओकर जातिगत समानता बतबैत अछि; श्यामबाबू विक्रमकेँ अपन बिरादरीक बाहर राखैत छथि; सुइदचन बरसाकेँ पुतोहु बनाय विवाहद्वारा आर्थिक सम्बन्ध पक्का करए चाहैत अछि। एतय जाति स्त्रीक इच्छाकेँ अनुशासित करैत अछि आ सम्पत्तिक आवागमनकेँ नियन्त्रित करबाक साधन बनैत अछि। तथापि पाठमे पात्रसभक सटीक जातिनाम उपलब्ध नहि; तेँ कोनो निश्चित जातिगत समुदायक आरोपण एहि कृतिक अध्ययनक सीमा बाहर अछि।

आंबेडकरक जाति-समीक्षामे विवाह-नियन्त्रण जाति-संरक्षणक मूलभूत पद्धतिमे गनल जाइत अछि। 'जाल'मे एही व्यापक प्रश्नक एक कथा-विशिष्ट रूप देखाइत अछि: बरसाक प्रेमक नैतिकता ओकर जातिगत योग्यतासँ अलग आकलित नहि कएल जाइत, आ महाजनक बेटासँ विवाह लगभग अपरिहार्य सामाजिक निर्णयक रूपमे थोपल जाइत अछि। तथापि ई समीक्षात्मक समांतरता अछि, इतिहासक साक्ष्य नहि; रचनाक एकटा घटनासँ सम्पूर्ण मिथिला समाज विषयक निष्कर्ष निकालब शोध-संगत नहि होयत।

सम्पत्ति, जाति आ स्त्रीक विवाह-निर्णयक संगम सुइदचनक दहेज-कल्पनामे सभसँ साफ अछि। ओ ऋणक बदलामे खेत हड़पबाक जे योजना बना रहल छल, ओकरा बेटाक विवाहद्वारा अधिक सरल लाभ देखाइत अछि। बरसा एही योजनामे इच्छासम्पन्न व्यक्ति नहि, सम्पत्तिक हस्तान्तरणक माध्यम बनैत अछि। एहि समाज-

विश्लेषणक बल अछि जे आर्थिक शोषण आ लैंगिक प्रभुत्व अलग-अलग अध्याय नहि, एकहि दृश्यमे संयुक्त प्रक्रिया बनि ठाढ़ होइत अछि।

१२. दृश्य-विन्यास : गतिशील छवि, 'कट टू' आ काल-परिवर्तन

पटकथाक एक गुण ओकर दृश्य-निर्देशक सरलता अछि। दृश्य आरम्भसँ पहिने समय, स्थान आ पात्रक सूचना प्रायः देल गेल अछि। नदी, घरक दुआर, पोस्ट ऑफिस, सुनसान बाध, महाजनक दलान, रेलवे स्टेशन आ फुलियाक घर—सभ स्थान दृश्यात्मक रूपेँ पहिचानयोग्य अछि। साइकिलक चक्र, दूधक कनस्तर, लालटेन, घोड़ा, चिट्ठी, खापड़ आ बही-खाता चलचित्रक रूपमे उपयोगी ठोस वस्तु अछि। एहि वस्तुसभक माध्यमे कथा भावात्मक अमूर्तनसँ बाहर आबैत अछि।

एक दृश्यसँ दोसर दृश्य धरि 'कट टू'क लगातार प्रयोग लेखनकेँ चलचित्रक प्रचलित संकेत-भाषासँ जोड़ैत अछि। मुदा हर बदलावपर एके प्रकारक संकेत दोहराबैसँ सम्पादनक अर्थगर्भता स्वतः नहि बढ़ैत। जेना महाजनक लेखा-परामर्शसँ विक्रम–बरसाक संकट धरि गति कथात्मक रूपसँ सार्थक अछि; किन्तु किछु ठाम प्रेमगीत, प्रतीक्षा आ दोहराइत अकेलापन नव सूचना अपेक्षाकृत कम जोड़ैत अछि। सम्पादन-संकेतक महत्त्व तखन अछि जखन दृश्यक क्रम दर्शकक ज्ञान, आशंका वा सम्बन्धक अर्थ परिवर्तित करैत अछि।

पहिल नाव-भेंटक तुरन्त बाद विक्रमक स्वप्नगीतकेँ 'फ्लैशबैक'क संकेतसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। कालानुक्रमक दृष्टिसँ ई अतीत-स्मरणसँ बेसी तत्काल कल्पना वा मनोचित्रक रूपमे बुझाइत अछि। एहि प्रकारक दृश्यकेँ स्मृति, स्वप्न आ इच्छाक छवि बीच स्पष्ट भेदक आवश्यकता अछि। बादमे हरियाक घोड़ा रोकि पुरान भेंट स्मरण करबाक दृश्य यथार्थ अतीत-स्मरणक निकट अछि। एकहि संकेतक दू भिन्न काल-प्रकृतिमे प्रयोगसँ दृश्य-भाषाक सुसंगति शिथिल होइत अछि।

मनोवैज्ञानिक सूचनाक लेल तकरा 'कहैत' रहबाक अपेक्षा दृश्यरचनाक कएक अवसर अछि: बरसाक झुकल नजरि, श्यामबाबूक चुप्पी, विक्रमक माएक प्रतीक्षा,

फुलियाक कोनमे बैसि कानब। ई संकेत पात्रसभक भाव-स्थिति अभिनय-योग्य बनबैत अछि। एतय पटकथाक प्रभाव साधारण संवादसँ आगू जाइत अछि। मुदा जखन हरिया वा सुइदचन लगातार अपने खलनायकीक उद्घोष करैत अछि, तखन दृश्यात्मक संकेत कम, व्याख्यात्मक घोषणात्मकता बेसी भऽ जाइत अछि।

१३. ध्वनि, लोक-परिवेश आ वस्तु-प्रतीक

पहिल दृश्यमे नाविकक गीत नदी-आधारित जीवनक सामुदायिक स्वर बनि उभरैत अछि। आगू मन्दिरक घण्टी, मस्जिदक ध्वनि, मुर्गाक आवाज, साइकिलक घण्टी आ घर-आँगनक हल्ला श्रव्य परिवेशकेँ घनत्व दैत अछि। कथाक समाज केवल देखाइत नहि; सुनाइत सेहो अछि। विशेष रूपेँ ग्रामीण ध्वनि आ नगर-मार्गक गतिविधि एकटा क्षेत्रक दैनिक समयताल बनबैत अछि। एहि प्राकृतिक श्रव्यताक तुलनामे स्वप्नगीतक प्रयोग कथाक लोकप्रिय फिल्मीय रूढ़िसँ सम्बन्ध बनबैत अछि।

दूधक कनस्तर श्रम-आर्जनक, बही-खाता ऋणक, घोड़ा प्रभुत्वक, चिट्ठी आशा आ निर्णयक, तथा खापड़ प्रतिवादक वस्तुगत संकेत मानल जा सकैत अछि। मुदा प्रतीकक ई अर्थ वस्तुक वास्तविक क्रियात्मक भूमिकासँ निकलैत अछि; ई नहि जे रचनाकार प्रत्येक वस्तुकेँ निश्चित रूपेँ प्रतीक मानि प्रस्तुत कएने छथि। विशेषतः अड़तीसम दृश्यमे चनकीक खापड़ साधारण घरेलू वस्तुसँ शक्ति-प्रतिरोधक क्रियामे बदलैत अछि—ई परिवर्तन साहित्यिक रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

१४. संवादक सामाजिक स्तर : हास्य, भय आ नैतिक प्रतिवाद

रघुआ–विक्रमक बातचीतमे अपनत्व आ चुहल अछि। ‘दरोगा’ सम्बोधन, साइकिल रोकबाक अनुरोध आ चिट्ठी पहुँचेनाइ लेल ‘घूस’ माँगबाक हास्य तनावक बीच जीवन्त लोकबोली जोड़ैत अछि। दुकानदारक संवादमे व्यापारिक निकटता आ विक्रमक आत्मसम्मान देखाइत अछि। एहि संवादसभमे लोकजीवनक स्वाभाविकता अछि,

कारण पात्रसभ अपन पेशा, सम्बन्ध आ परिस्थितिक अनुरूप बजैत छथि। कृतिक भाषायी सफलता मुख्यतः एही छोट प्रसंगसभमे निहित अछि।

सुइदचन, हरिया आ मुंशीक संवादमे धमकी, अपमान आ स्वामित्वक स्वर प्रमुख अछि। श्यामबाबूक भाषामे संकोच, द्विधा आ सामाजिक भय; विक्रमक माएक भाषामे घरेलू चिन्ता आ अनुभवजन्य सावधानी; चनकीक भाषामे गरज आ आक्रोश अछि। एहि विभेदसँ पात्रसभकेँ सामाजिक आवाज भेटैत अछि। तथापि महाजन-पक्षक कतेको संवाद अत्यधिक प्रत्यक्ष अछि—ओ सभ अपन षड्यन्त्रक उद्देश्य खुलि कऽ कहैत छथि। यथार्थपरक दृश्य-लेखनमे किछु अर्थ हावभाव, परिस्थितिक परिणति आ अप्रत्यक्ष संकेतक माध्यमेँ व्यक्त भेलासँ तनाव अधिक गाढ़ बनि सकैत छल।

पन्द्रहम दृश्यक विक्रम–माए संवाद सम्पूर्ण कृतिक नैतिक केन्द्रमे अछि। माए धनिक अपराधीसँ टकराबैपर जानक खतरा कहैत छथि; बेटा अन्याय देखिकऽ चुप रहब अस्वीकार करैत अछि। एतय दुनू पक्षक अनुभव सत्य अछि—एक दिस आत्मरक्षा, दोसर दिस नैतिक प्रतिरोध। ई टकराव 'नीक' आ 'खराब' पात्रक सरल द्वन्द्व नहि, जोखिम आ न्यायक बीच सामाजिक निर्णयक कठिन प्रश्न अछि। एहि संवादमे कृतिक वृहत्तर राजनीतिक अर्थ सबसँ सघन रूपमे उपस्थिति पाबैत अछि।

१५. समुदाय : भयभीत दर्शकसँ क्रियाशील प्रतिरोध धरि

गामक सामुदायिक उपस्थिति कथामे एकरूप नहि अछि। नावपर लोक बरसाकँ चढ़बामे सहायता दैत छथि, खेतक मजदूर अपहरण रोकबाक लेल दौड़ैत छथि, टहलू घटना सुनाकऽ विक्रमक माएक डर बढ़बैत अछि, विवाहक घरक लोक सामाजिक अनुष्ठानमे जुटैत छथि, आ अन्तमे चनकीक संग टोलक लोक महाजनक दुआरपर पहुँचैत छथि। एहि समूहसभक कार्य अलग-अलग अछि—सहायता, रक्षक हस्तक्षेप, अफवाहक प्रसार, परम्पराक पालन आ विरोध। ई परिवर्तन ग्रामीण समाजकेँ केवल निष्क्रिय भीड़ मानबाक प्रवृत्तिक विरुद्ध अछि।

बारहम दृश्य आ अड़तीसम दृश्यक मध्य सामूहिक प्रतिरोधक एकटा आन्तरिक सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि। पहिलमे मजदूरसभ शारीरिक हमलाकेँ रोकैत छथि; दोसरमे महिलाक नेतृत्वमे लोक सार्वजनिक जवाबदेही माँगैत छथि। कथाकार एहि सामुदायिक पक्षकेँ निरन्तर विकसित करितथि तँ व्यक्तिवादी नायकत्वक तुलनामे अधिक व्यापक सामाजिक आख्यान आकार लऽ सकैत छल। एखन ई सम्भावना प्रभावी दृश्यसभक रूपमे उपस्थित अछि, सुविकसित आन्दोलनक रूपमे नहि।

१६. स्त्री-दृष्टि आ 'इज्जत'क विरोधाभास

कथामे स्त्रीक 'इज्जत' शब्द हर बेर अलग सामाजिक अर्थ लैत अछि। बरसाक अपहरणक प्रयत्नक समय ई सुरक्षा आ हिंसासँ बचबाक प्रश्न अछि; श्यामबाबूक दृष्टिमे बेटी विषयक गप्प परिवारक सार्वजनिक प्रतिष्ठा घटाबै सकैत अछि; फुलियाक घरमे ई गर्भ आ विवाहक सामाजिक दबावसँ जुड़ैत अछि। एहि विविध उपयोगसँ स्पष्ट अछि जे स्त्रीक अनुभवकेँ समाज अक्सर ओकर इच्छासँ अलग, परिवारक प्रतिष्ठाक पैमानामे नापैत अछि।

लौरा मल्वेक स्त्रीक दृश्य-वस्तुकरण सम्बन्धी आलोचनाक सहायतासँ बरसापर विक्रम, हरिया आ ग्रामक नजरिक अन्तर बुझल जा सकैत अछि। विक्रमक आरम्भिक मोहित दृष्टि आनन्दक; हरियाक दृष्टि अधिकारक; अफवाह फैलाबैवाला समाजक दृष्टि अनुशासनक माध्यम बनैत अछि। बरसाक प्रतिवाद आ चनकीक सार्वजनिक आक्रोश एहि दृष्टिक व्यवस्थाकेँ बाधित करैत अछि। तथापि नायिकाकेँ अन्ततः अनिर्दिष्ट अवस्थामे छोड़ि देबाक शिल्प ई प्रश्न खुला राखैत अछि जे कथाक निर्णय-अधिकार वास्तवमे स्त्रीक पक्षमे कतेक स्थानान्तरित भेल।

फुलियाक सन्दर्भमे गर्भक प्रश्नक अनावश्यक नैतिक सरलीकरणसँ बचब चाही। संकट एहिमे नहि जे गर्भसमापनक उल्लेख होइत अछि, बरु एहिमे जे हरिया फुलियाकेँ धमकी दऽ ओकर निजी निर्णयक अधिकार छीनैत अछि। चनकी विवाहक माँग करैत छथि, मुदा फुलियाक दीर्घकालीन सुरक्षा, सहमति आ चाहना पर स्वतन्त्र

विमर्श नहि खुलैत। रचना जँ एहि पर अधिक ठहरित, तँ स्त्री-न्यायक अर्थ केवल 'इज्जत बहाल' करबाक पारम्परिक संहितासँ आगू बढ़ि सकैत छल।

१७. संरचनात्मक सीमासभ : पात्र, क्रमांकन आ परिणति

'जाल'क पात्र-परिचय आ बादक दृश्यसभक बीच एकटा ठोस सम्बन्धगत असंगति अछि। आरम्भिक परिचयमे चनकीकेँ हरियाक प्रेमिका आ फुलियाकेँ चनकीक माए कहल गेल अछि; किन्तु उत्तरार्धमे हरियाक गर्भवती प्रेमिकाक नाम फुलिया अछि आ ओकर माएक नाम चनकी। एहि परिवर्तनकेँ स्वतः अर्थपूर्ण प्रतीक वा इच्छित उलटबाँसी मानब असंगत होयत। ई नाम–सम्बन्धक अन्तर दर्शक, कलाकार आ सम्पादक लेल भ्रमक कारण बनि सकैत अछि, आ पटकथाक कथात्मक सुसंगतिकेँ प्रभावित करैत अछि।

दृश्यक्रममे तेरहम दृश्यक बाद पन्द्रहम दृश्य अंकित अछि; चौदहम क्रमांक उपस्थित नहि। ई क्रमांकनक असमानता कथा-वस्तुक मूल्यकेँ स्वतः घटबैत नहि, मुदा पटकथा जखन निर्माण, अभिनय आ सम्पादनक साझा कार्य-पाठ होइत अछि, तखन दृश्य-सूचीक शुद्धता उपयोगिताक शर्त बनैत अछि। आरम्भिक पात्र-सूचीमे मनदेव, रखिया आ भकोलबा जेकाँ पात्र परिचित कराओल गेल छथि, पर उपलब्ध दृश्यक्रममे हुनकर सक्रिय कथात्मक भूमिका स्पष्ट रूपसँ विकसित नहि होइत। एकरा आधार बनाकऽ उपकथाक सम्भावित दिशाक अनुमान गढ़ब उचित नहि।

पहिल भागमे विक्रम–बरसाक मिलन, नौकरीक आकांक्षा आ महाजनक जाल क्रमशः गाढ़ होइत अछि; अन्तिम भागमे फुलिया–चनकीक संघर्ष केन्द्रस्थ होइत अछि। दोसर संघर्ष पहिलक सामाजिक अर्थ समृद्ध करैत अछि, मुदा दृश्यात्मक कारण-सम्बन्धक दृष्टिसँ ओकर संयुक्त परिणति अधूरी रहैत अछि। बरसाक ठेकान, विक्रमक भविष्य, श्यामबाबूक निर्णय, फुलियाक माँग आ हरियाक जवाबदेही सभ अन्तिम उपलब्ध दृश्यपर निर्णीत नहि होइत अछि। एहि अनिर्णयकेँ सोद्देश्य खुला अन्त कहबाक लेल आवश्यक आन्तरिक कलात्मक संकेत पर्याप्त स्पष्ट नहि देखाइत।

रचनाक ई सीमा ओकर सामाजिक अवलोकनकेँ निरस्त नहि करैत। जतेक सफल दृश्य अछि—दूधक व्यापार, नावक हड़बड़ी, बही-खाता, मजदूरक बचाव, श्यामबाबूक चुप्पी, चनकीक ललकार—से अपन-अपन ठाम जीवन्त अछि। किन्तु पटकथा एकटा समग्र क्रियात्मक रचना सेहो अछि; प्रसंगसभक प्रभाव तखने स्थायी होइत अछि जखन पूर्ववर्ती संकल्प, मुख्य संकट आ निर्णयक परिणाम सम्बन्धित रूपमे विकसित होइ। अरस्तूक समग्र क्रियाक विचार आ पटकथा-संरचनाक आधुनिक सिद्धान्त दुनू एहि अपेक्षाकेँ अलग-अलग भाषामे प्रस्तुत करैत अछि।

१८. विधागत मूल्याङ्कन : साहित्यिक पाठ आ प्रदर्शनक सम्भावना

पटकथा पढ़बाक समय संवादक साहित्यिक गुण आ प्रदर्शनक व्यावहारिकता दुनूक विचार चाही। 'जाल'मे दृश्यस्थल आ क्रियाक संक्षिप्त संकेत अभिनयक सम्भावना स्पष्ट करैत अछि। नदीक घाट, साइकिल, दौड़ैत घोड़ा आ सामूहिक जुटान दृश्यात्मक प्रभाव पैदा करबाक साधन अछि। संगहि बारम्बार सामूहिक गीत, घोड़ा-यात्रा आ चलैत रेलगाड़ीक पाछू दौड़बाक दृश्य उच्च मंचन-व्यय वा जटिल निर्माण-व्यवस्थाक अपेक्षा राखि सकैत अछि। ई व्यावहारिक पक्ष पाठक कला-मूल्यक विकल्प नहि, बरु पटकथाक प्रदर्शनयोग्यताक पूरक कसौटी अछि।

भारतीय नाट्यपरम्परामे अभिनय, स्थिति, भाव आ दर्शकीय अनुभूतिपर व्यापक चिन्तन उपलब्ध अछि। 'जाल'क करुण प्रसंग—श्यामबाबूक आत्मग्लानि, फुलियाक रोदन—आ रौद्र प्रसंग—हरियाक धमकी, चनकीक भिड़न्त—अलग भावात्मक स्तर निर्मित करैत अछि। मुदा भावक नाम देलासँ रचनाक पूर्ण रस-सिद्धि घोषित नहि कएल जा सकैत; ओकर लेल चरित्र-विकास, दृश्य-काल, नैतिक परिणाम आ दर्शकीय अनुभूतिक संयुक्त परीक्षण आवश्यक अछि। एहि अर्थमे 'जाल' परम्परागत भाव-सम्भावना आ लोकप्रिय चलचित्रक तीव्र घटना-विन्यासक बीच गतिमान रचना अछि।

कृतिक भाषा स्थानीय सामाजिक सम्बन्धक सजीव वाहक अछि। घर–दुआर, बाप–बेटी, महाजन–मुंशी आ टोल–समुदायक अलग-अलग बोलचाल रचनाकेँ स्वर दैत अछि। ई स्थानीयता केवल सजावट नहि, अर्थक स्रोत अछि। उदाहरणार्थ ‘दरोगा’ सम्बोधनक हास्य विक्रमक आकांक्षासँ जुड़ैत अछि; ‘इज्जत’ शब्द बरसा आ फुलियाक सामाजिक नियतिसँ; आ ‘जाल’ महाजनक आत्मविश्वाससँ। एहि भाषायी सघनतामे लेखकक सर्वाधिक विश्वसनीय सर्जनात्मक संसाधन निहित अछि।

१९. निष्कर्ष

राजदेव मण्डलक ‘जाल’क मूल उपलब्धि ई अछि जे ई प्रेम आ अपराधक लोकप्रिय कथाक भीतर ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जातिगत नियन्त्रण, स्त्रीक इच्छापर दखल आ महाजनी हिंसाक परस्पर सहयोगक संरचना देखबैत अछि। लेखकक दृश्यात्मक प्रतिभा विशेषतः श्रम, आवागमन आ घरेलू जीवनक ठोस बिम्बसभमे प्रकट होइत अछि। विक्रमक शिक्षा–श्रम, बरसाक स्वतन्त्र स्वभाव, श्यामबाबूक द्वन्द्व, सुइदचनक आर्थिक गणना आ चनकीक सार्वजनिक प्रतिरोध मिलि एकटा बहुध्रुवीय सामाजिक आख्यानक आधार रचैत अछि।

एहि उपलब्धिक संग रचनाक किछु सीमासभ स्पष्ट अछि। दृश्य-परिवर्तनक अतिशय रूढ़ प्रयोग, अतीत-स्मृति आ कल्पनाक संकेतक अस्पष्टता, पात्र-सम्बन्धक नामगत असंगति, क्रमांकनक विचलन, आरम्भमे स्थापित पात्रक अपर्याप्त उपयोग आ मुख्य संघर्षसभक अनिर्णीत परिणति पटकथाक शिल्पक एकरूपता बाधित करैत अछि। आलोचनाक उद्देश्य एहि सीमासभकेँ गुप्त राखब नहि, बरु ई देखायब अछि जे जखन सामाजिक प्रश्न जतेक तीक्ष्ण हो, ततेक दृढ़ क्रिया-संरचना ओकर प्रभावकेँ बढ़ा सकैत अछि।

अन्ततः ‘जाल’केँ केवल विक्रमक वीरता वा बरसाक प्रेमक कथा मानब रचनाक बहिर्गामी सामाजिक अर्थकेँ छोट करब होयत। एतय सर्वाधिक विचारोत्तेजक क्षण ओ अछि, जखन चनकी महाजनक दलानपर लोककेँ एकत्र करि अन्यायक सवाल उठबैत

छथि। जालक विरुद्ध ई प्रतिरोध पूर्ण मुक्ति नहि देत, मुदा भयक एकाधिकारकेँ चुनौती अवश्य दैत अछि। कृतिक महत्त्व ओहि प्रश्नमे अछि जे पाठक सम्मुख छोड़ि जाइत अछि: जखन ऋण, जाति, परिवार आ हिंसा एक-दोसराकेँ बाँधि देने हो, तखन न्याय किनकर साहस, कोन सामूहिकता आ कोन निर्णयसँ सम्भव होयत?

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव। जाल (पटकथा)।

Ambedkar, B. R. Annihilation of Caste. 1936. In Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, vol. 1. Bombay: Education Department, Government of Maharashtra, 1979, pp. 25-96.
https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/about.html

Aristotle. Poetics. Translated by S. H. Butcher. The Internet Classics Archive, Massachusetts Institute of Technology. https://classics.mit.edu/Aristotle/poetics.1.1.html

Bordwell, David, Kristin Thompson, and Jeff Smith. Film Art: An Introduction. 13th ed. New York: McGraw Hill, 2024. ISBN 9781265205478.

Field, Syd. Screenplay: The Foundations of Screenwriting. Revised ed. New York: Delta Trade Paperbacks, 2005. ISBN 9780385339032.

Lidova, Natalia. “Natyashastra.” Oxford Bibliographies in Hinduism. Oxford University Press, 2014. https://doi.org/10.1093/obo/9780195399318-0071

McKee, Robert. Story: Substance, Structure, Style, and the Principles of Screenwriting. New York: ReganBooks, 1997.

Mulvey, Laura. “Visual Pleasure and Narrative Cinema.” Screen 16, no. 3 (1975): 6-18. https://doi.org/10.1093/screen/16.3.6

अध्याय 6

लाज : स्त्रीशिक्षा, वर्गसत्ता आ नैतिक प्रत्यभिज्ञान

पाठकेन्द्रित नाट्यालोचना आ सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

सारांश

राजदेव मण्डलक 'लाज' स्त्रीशिक्षाक पक्षमे लिखल एकटा ग्राम्य सामाजिक एकांकी अछि, मुदा एकर आलोचनात्मक महत्त्व केवल 'बेटी पढ़ाउ' सन्देशमे सीमित नहि अछि। नाटक सार्वजनिक विद्यालय, परिवार, जमीनदारी प्रभुत्व, स्त्रीक आवाज आ अन्ततः चिकित्सकीय सेवाक बीच सत्ता-सम्बन्धक परिवर्तन देखबैत अछि। आरम्भमे 'लाज'क अप्रकट अर्थ बेटीपर समाजक निगरानी आ कुल-प्रतिष्ठाक भयसँ जुड़ल अछि; अन्तमे वएह शब्द उत्पीड़क पक्षक नैतिक आत्मबोधक नाम बनि जाइत अछि। प्रस्तुत अध्ययन नौ दृश्यक अनुक्रम, संवादक सामाजिक स्तर, मौन आ वेशभूषाक मंचीय संकेत, दीर्घ समयान्तराल, शिक्षकक द्विविध छवि, पारिवारिक सहायताक भूमिका तथा क्षमाशील समापनक समस्या देखैत अछि। एकांकीक समेकित क्रिया आ ओकर विस्तृत दृश्य-रचनाक बीच तनावकैं अलग सँ जाँचल गेल अछि। शिक्षा-विमर्श, सामर्थ्य-अवधारणा, सांस्कृतिक पुनरुत्पादन आ नाटकीय प्रत्यभिज्ञानक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य तुलनात्मक व्याख्याक साधन अछि, रचनापर प्रत्यक्ष प्रभावक दावा नहि। निष्कर्षतः 'लाज'क सर्वाधिक प्रभावकारी उपलब्धि नैतिक मूल्यक उलटब अछि; ओकर सीमा समाधानक वैयक्तिकता, पात्रक ध्रुवीकरण आ संस्थागत अन्यायसँ शीघ्र मेल-मिलापक रूपमे उभरैत अछि।

बीजशब्द : राजदेव मण्डल; लाज; मैथिली एकांकी; सविता; स्त्रीशिक्षा; वर्गसत्ता; सामाजिक नाटक; प्रत्यभिज्ञान

१. प्रस्तावना : नाटकक विषय नहि, ओकर प्रश्न

'लाज'क कथावस्तु सरल प्रतीत होइत अछि : गामक गरीब किसान हरिचरणक बेटी सविता पढ़बाक इच्छा व्यक्त करैत अछि; शिक्षकक हस्तक्षेपसँ ओकर विद्यालय-प्रवेश होइत अछि; सम्पन्न कुलानन्दक बेटा भोगेन्द्र ओकरा अपमानित आ पीड़ित करैत अछि; बादमे सविता शहरमे अध्ययन कऽ चिकित्सक बनैत अछि आ ओही भोगेन्द्रक प्राण बचबैत अछि। मुदा एहि कथासूत्रमे सामाजिक मान्यताक तीनटा प्रश्न एकसाथ सक्रिय अछि—केकरा पढ़बाक अवसर भेटत, निर्णय के लेत, आ अपराधक बाद लाज केकरा होयत? एहि प्रश्नक परस्पर सम्बन्ध एकांकीकेँ साधारण उपदेशसँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

नाटककार आरम्भिक टिप्पणीमे स्पष्ट करैत छथि जे एकांकीक रचना नाटक खेलयबाक इच्छुक लोकक आग्रहसँ जुड़ल प्रयास छल; ओ अभ्यासक अभावक विनम्र स्वीकार सेहो करैत छथि। एहि वक्तव्यकेँ नाटकक मंचाभिमुख उत्पत्तिक प्रमाण मानि सकैत छी, मुदा वास्तविक प्रस्तुति, दर्शक-प्रतिक्रिया वा मंचनक इतिहासक प्रमाण मानब अनुचित होयत। लेखकक टिप्पणी १४ जनवरी २०१५ दिनांकित अछि; एहि तिथिकेँ स्वतः प्रकाशन-वर्ष मानब सेहो युक्तिसंगत नहि।

एहि शोधक पद्धति प्रथम दृष्टिमे पाठकेन्द्रित अछि : दृश्य, कथन, पात्रक व्यवहार, नाटकीय अन्तराल आ अन्तक भाषा एक-दोसरसँ जोड़ि पढ़ल गेल अछि। दोसर स्तरपर मैथिली एकांकी परम्पराक साहित्येतिहास आ शिक्षाक सामाजिक विमर्श उपयोगमे आयल अछि। बाहरी सिद्धान्त नाटकक घटना बुझबाक उपकरण अछि; ओ नाटककारक घोषित उद्देश्य, अध्ययनस्रोत वा अनिवार्य वैचारिक वंशावली नहि अछि। एहि भेदसँ रचनाक अपन भाषा आ विशिष्ट ग्राम्य परिस्थिति सुरक्षित रहैत अछि।

२. मैथिली नाट्यपरम्परा आ 'लाज'क विधागत स्थान

आधुनिक मैथिली नाट्यलेखनमे सामाजिक प्रश्न, भाषा-चेतना आ मंचीय रूपक परिवर्तनक दीर्घ पृष्ठभूमि अछि। देवकान्त झाक आधुनिक मैथिली साहित्येतिहासमे नाट्यविधा लेल पृथक् विमर्श भेटैत अछि। समकालीन शोधमे रघुनन्दन दासक 'मिथिलानाटक'कैँ भाषिक-सांस्कृतिक पहचानक बहसक संदर्भमे आ बृज बिहारी लाल मण्डलक 'मिथिला नाटक'कैँ साहित्यिक इतिहासमे उपेक्षित सामाजिक स्वरक संदर्भमे पढ़ल गेल अछि। एहि विविध इतिहाससँ एक बात स्पष्ट होइत अछि : मैथिली नाटककैँ केवल सभ्रान्त साहित्यिक रूप अथवा केवल स्थानीय मनोरंजन मानब, दूनू संकीर्ण दृष्टि अछि।

हीरामण्डल एकांकीक विवेचनमे एक मुख्य क्रिया, सीमित पात्रसंख्या आ संवादक संक्षिप्ततापर बल दैत छथि। एहि कसौटीसँ 'लाज' रोचक अपवाद प्रस्तुत करैत अछि। रचना अपनेकैँ एकांकी कहैत अछि, मुदा तइमे नौ दृश्य, घर-विद्यालय-दरबज्जा-चौक-अस्पताल जकाँ अनेक स्थल आ बचपनसँ प्रौढ़ताधरिक समयान्तराल अछि। एकर एकता काल वा स्थानक संकुचनमे नहि, शिक्षा-अधिकारसँ उत्पन्न मूल संघर्षक निरन्तरतामे निहित अछि। अर्थात् एकांकीक नाम मात्रसँ ओकर संरचना स्वतः लघु अथवा संकुचित नहि भऽ जाइत अछि।

नाटकक शिल्प मौखिक संवाद आ छोट-छोट मंचीय निर्देशपर अवलम्बित अछि। 'पटाक्षेप' दृश्यकैँ अलग करैत अछि आ दर्शककैँ जीवनक विभिन्न चरण देखबैत अछि। एहि कारण 'लाज'कैँ एक-क्रियात्मक, बहुदृश्य सामाजिक एकांकी कहब अधिक सटीक अछि। ई वर्गीकरण कलात्मक सफलताक प्रमाण नहि, रूपक वर्णन अछि : अनेक दृश्य मुख्य संघर्षकैँ प्रभावी बनबैत अछि, मुदा नाटकीय तीव्रता बीच-बीचमे शिथिल सेहो होइत अछि।

३. नौ दृश्यक संरचना : आरम्भिक निषेधसँ अन्तिम स्वीकार धरि

पहिल दृश्य हरिचरणक घरसँ आरम्भ होइत अछि। सविता उपस्थित नहि छथि; हुनकर विषयमे पिता-माताक बातचीत होइत अछि। पिता गामक 'हवा'क कारण बेटीक अनुशासनपर जोर दैत छथि, जखनकि चनपटीवाली पारिवारिक चरित्रक भरोसा दैत छथि। एहि अनुपस्थितिसँ नाटकक आरम्भिक विडम्बना बनैत अछि : जे पात्रक भविष्य दाँवपर अछि, ओकर इच्छा स्वयं ओकर आवाजमे एखन प्रकट नहि भेल अछि। बालिका पहिने 'कुल' आ 'इज्जत'क वस्तु बनैत अछि, व्यक्तित्व बादमे।

दोसर दृश्य विद्यालयक दुहरी तस्वीर खोलैत अछि। शिक्षकसभ दहेजक अव्यवहारिक माङपर विचार करैत छथि, मुदा कक्षा-निगरानीक उपेक्षा करैत छथि; हरबाहा ई विसंगति देखबैत अछि। एहि पृष्ठभूमिमे सविता बकरी बाँधि खिड़कीसँ पढ़ाइ देखैत छथि। खिड़की एतय साधारण वास्तु-वस्तु नहि : विद्यालयक भीतर-बाहर, अवसर-अवसरहीनता आ जिज्ञासा-अधिकारक सीमा ओही ठाम दृश्यरूप पबैत अछि। सविताक 'हमरो पढ़ऽ दिअ' एहि सीमा पर पहिल प्रत्यक्ष हस्तक्षेप अछि।

तेसर दृश्य घरमे शिक्षक श्यामबाबूक आगमनसँ शुरू होइत अछि। हरिचरण अपन बेटाक पढ़ाइक समाचार पुछैत छथि; शिक्षक विषय बदलि बेटीक प्रतिभाक चर्चा करैत छथि। पिता बेर-बेर घरक काज, समाजक आरोप आ आर्थिक कठिनाइ बतबैत छथि। पत्नी शिक्षकक प्रस्तावक समर्थन करैत छथि। शिक्षाक अधिकार एतय एक्के बेर प्राप्त नहि होइत अछि; सामाजिक भय, घरेलू श्रम आ सीमित साधनक बाधा पार कऽ परिवारक अनुमति तैयार होइत अछि।

चारिम दृश्य कक्षामे सविताक तेज अध्ययनशीलता देखबैत अछि; भोगेन्द्र ओकर विरोध आ उपहास करैत अछि। पाँचम दृश्यमे भोगेन्द्र द्वारा सवितापर कएल मारपीटक परिणाम देखाओल जाइत अछि—फाटल वस्त्र, कननाइ आ पिताक असहायता। छठम दृश्यमे शिकायत कुलानन्दक दरबज्जापर पहुँचैत अछि, जतय ओकर सामाजिक प्रभुत्व न्यायोचित जाँचसँ बेसी भारी पड़ैत अछि। सातम दृश्य मौसाक घर जा पढ़बाक वैकल्पिक रास्ता बनबैत अछि। आठम दृश्य दीर्घ समयक

छलाँगसँ सविताकेँ चिकित्सक आ भोगेन्द्रकेँ मद्यपानसँ अस्वस्थ युवक रूपमे देखबैत अछि। नवम दृश्य चिकित्सकीय उपचार, पछतावा आ माफीक अनुरोधपर सम्पन्न होइत अछि। ई अनुक्रम प्रतिशोधक बदला सार्वजनिक उपयोगिता आ नैतिक पलटावकेँ चुनैत अछि।

४. शीर्षकक अर्थ-यात्रा : निगरानीक लाजसँ उत्तरदायित्वक लाज

'लाज'क सर्वाधिक सशक्त रचनात्मक युक्ति एहि शब्दक अर्थ-परिवर्तनमे अछि। प्रारम्भिक पारिवारिक वातावरणमे लाज व्यक्तिक नैतिक अपराधसँ नहि, बेटीक गतिशीलता देखिकऽ बाहरी लोक द्वारा लगाओल आरोपक आशंकासँ जुड़ल अछि। हरिचरणक भय केवल अभिभावकीय सावधानी नहि, समाजक एहन दृष्टिसँ सेहो जुड़ल अछि जाहिमे लड़की घरसँ बाहर जाए तकरा नियंत्रणक विषय बनाओल जाइत अछि। मजबूतीसँ स्थापित ई भय बादक घटनामे वास्तविक हिंसाक माध्यमसँ पुष्ट होइत अछि; फलतः पिताक चिन्ता किछु हदधरि अनुभवजन्य सेहो बनि जाइत अछि।

समापनमे कुलानन्द स्वीकार करैत छथि जे हुनका सविताक सामने जेबाक समय लाज होइत अछि। एके समाजमे 'लाज'क भार उत्पीड़ित बच्चीसँ हटि अन्यायकेँ संरक्षण देनिहार शक्तिशाली पुरुषपर आबि पड़ैत अछि। एहि उलटावमे शीर्षकक नैतिक धार अछि : लाजकेँ स्त्रीक शरीर अथवा घरक प्रतिष्ठासँ मुक्त कऽ अन्यायक उत्तरदायित्वक रूपमे पुनर्स्थापित कएल गेल अछि। जे व्यक्ति पहिने अपन जमिन आ सामाजिक हैसियतक आधारपर संवाद बन्द कएने छल, से आब अपन अपराधक स्मृतिसँ झुकैत अछि।

फेरो ई परिवर्तन सहज नहि। अन्तिम 'लाज' सच्चा नैतिक परिवर्तनक लक्षण अछि अथवा बेटाक जान बचेनिहार व्यक्तिक समक्ष बाध्य कृतज्ञता—ई प्रश्न पाठ खोलि दैत अछि। कुलानन्द सामाजिक शिक्षा दैत छथि, मुदा ओकरा पूर्व अपराधक वास्तविक क्षतिपूर्ति, विद्यालयमे सविताक सुरक्षा अथवा संस्थागत सुधारक रूपमे किछु

नाटकीय रूपसँ घटित नहि होइत अछि। एहि कारण शीर्षकक वैचारिक उपलब्धि आ न्याय-प्रक्रियाक अपूर्णता साथ-साथ पढ़बाक चाही।

५. सविताक व्यक्तित्व : जिज्ञासा, प्रतिरोध आ सेवाक जटिलता

सविताक पहिल निर्णायक क्रिया खिड़कीक ओहि पारसँ बोलब अछि। ओ अपन पढ़बाक इच्छा ककरो दानक पात्र जकाँ नहि, प्रत्यक्ष माँगक रूपमे रखैत छथि। शिक्षक पाँच आ पाँचक योग पूछैत छथि; सविता तुरन्त उत्तर दैत छथि। ई छोट संवाद मंचपर प्रतिभाक प्रमाणक काम करैत अछि, मुदा एकर आशय ई नहि जे केवल तेज बुद्धिक बालिकाकेँ शिक्षाक अधिकार भेटबाक चाही। सविताक योग्यताक कथानक उपयोग आ सभ बालिकाक अविच्छेद्य अधिकार, ई दू पृथक् मानदण्ड अछि।

विद्यालयमे सविता प्रश्नक समाधानमे आगाँ निकलैत छथि आ भोगेन्द्रक अनुशासनहीनतापर खुलिकऽ अपन बात कहैत छथि। ई प्रतिक्रिया हुनकर बोलबाक सामर्थ्य देखबैत अछि; ओ केवल मूक पीड़िता नहि। मुदा एहि प्रतिरोधक परिणाम शारीरिक हिंसा होइत अछि। पाठ प्रतिरोधकेँ प्रशंसनीय सिद्ध करैत अछि, तैयो ओकर सामाजिक जोखिमकेँ मिटबैत नहि। एतय शिक्षा सँ उपजल आत्मविश्वास आ असमान शक्ति-सन्तुलनक संघर्ष मंचपर एकसाथ उभरैत अछि।

सविताक चिकित्सक बनब एक दिग्दर्शक नैतिक प्रतिफल अछि। हुनकर श्रेष्ठता भोगेन्द्रकेँ अपमानित करबाक वा ओकरा सेवा देबासँ इनकार करबाक माध्यमसँ स्थापित नहि होइत अछि; ओ चिकित्सा करैत छथि। एहि कर्मसँ एकांकी समाजोपयोगी शिक्षाक अवधारणा प्रस्तुत करैत अछि। तथापि सविताक उच्च शिक्षा प्राप्तिक वास्तविक श्रम, संस्थागत संघर्ष, व्यावसायिक प्रशिक्षण वा निर्णय-प्रक्रियाकेँ दृश्यरूप नहि देल गेल अछि। ओ बालिका सँ चिकित्सक बनबाक बीच कथानकक सर्वाधिक लम्बा काल एक छलाँगमे पार करैत छथि। परिणाम प्रभावी अछि, प्रक्रिया अदृश्य।

अन्तिम दृश्य सविताकेँ क्षमा आ उपचारक नैतिक केन्द्र बनबैत अछि। मुदा एहि केन्द्रक स्वतन्त्रता मिश्रित अछि। ओ अपन पेशागत उत्तरदायित्व निभबैत छथि, भोगेन्द्रकेँ मद्यसँ दूर रहबाक वचन दियबैत छथि, गामक लोकक आशीर्वाद माँगैत छथि। कथानक हुनकर मनक आघात, रोष वा सम्बन्धक भविष्यपर संवाद नहि करबैत अछि। स्त्रीक नैतिक उदारताकेँ नाटकीय चरम बनबैत काल स्त्रीक जटिल अनुभव संक्षिप्त भऽ गेल अछि—ई एकांकीक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक सीमा अछि।

६. हरिचरण आ चनपटीवाली : पितृसत्ताक भीतरक असहमति

हरिचरणकेँ केवल शिक्षाविरोधी पिता कहि छोड़ब पात्रक जटिलता घटाएब होयत। आरम्भमे ओ बेटीक स्वतन्त्र आवागमनसँ भयभीत छथि, मुदा विद्यालयमे पीड़नक बाद हुनकर असमर्थताक कारण सभक सोझाँ स्पष्ट होइत अछि। हुनकर चिन्ता केवल समाजक आलोचनाक भय धरि सीमित नहि अछि; ओ गरीबक बच्चाक रक्षा लेल उपलब्ध शक्ति-सीमाकेँ सेहो अनुभव करैत छथि। शिक्षककेँ ओ कहैत छथि जे पढ़बैत रही तँ एहेन दुर्घटना फेर भऽ सकैत अछि। ई शिक्षा-संरक्षणक उपेक्षा अवश्य अछि, मुदा सामाजिक सुरक्षा-विहीनताक प्रतिक्रिया सेहो।

चनपटीवाली आरम्भमे कुलक मर्यादाक भरोसा रखैत छथि, मुदा शिक्षकक उपस्थितिमे बेटीकेँ विद्यालय पठयबाक निर्णयक समर्थन करैत छथि। सातम दृश्यमे सविताकेँ मौसाक घर पठयबाक प्रसंगमे सेहो हुनकर सहमति सामने अबैत अछि। एहि पात्रक नाम सामाजिक-स्थानसूचक अछि : स्त्री अपने व्यक्तिगत नामसँ बेसी वैवाहिक सम्बन्धसँ जुड़ल पहचानमे उपस्थित छथि, जखनकि बेटी ‘सविता’ व्यक्तिगत नाम आ कर्मसँ प्रतिष्ठित होइत छथि। ई विरोध कथानकक पीढ़ीगत परिवर्तनक सूक्ष्म भाषिक संकेत बनि सकैत अछि; तथापि ‘चनपटीवाली’क नामकरणक लेखकीय आशयक स्वतन्त्र घोषणा नहि भेटैत अछि।

नाटक परिवारकेँ एकरूप सत्ता नहि मानैत अछि। पिताक संकोच, माताक समर्थन, शिक्षकक आग्रह आ सविताक इच्छा अलग-अलग आवाज बनैत अछि। एकर

परिणाम शिक्षा-पक्षमे निकलैत अछि। तथापि बालिकाक इच्छा केन्द्रीय रहितो प्रवेशक अन्तिम अनुमति पिता दैत छथि। एहि युक्तिसँ नाटक पितृसत्ता बदलबाक सम्भावना देखबैत अछि, ओकर तत्काल समाप्ति नहि।

७. शिक्षा : अधिकार, विद्यालयक अन्तर्विरोध आ श्रमक गरिमा

विद्यालयक पहिल चित्र व्यंग्यमय अछि। दहेजक माङ्पर आक्रोशित शिक्षकसभ अपन नियमित शिक्षणक कर्तव्यसँ विमुख छथि। छात्र शिकायत लऽ अबैत अछि, मुदा ओकरा डाँट भेटैत अछि। हरबाहा पढ़ाइमे लापरवाहीपर आपत्ति करैत अछि आ अपन खेतीक काजकेँ जिम्मेवारीक उदाहरण रूपमे रखैत अछि। नाटक एतय पुस्तकाधारित अधिकार आ श्रमाधारित नैतिकता बीच रोचक उलटाव रचैत अछि : जे श्रमिक विद्यालयक औपचारिक श्रेणीक्रममे निम्न मानल जाइत अछि, ओ शिक्षककेँ कर्तव्यक पाठ पढ़बैत अछि।

श्यामबाबू एही संस्थाक भीतर सकारात्मक सम्भावना छथि। ओ सविताक प्रतिभा पहचानैत छथि, घर जा पिता-माताकेँ बुझबैत छथि आ उत्पीड़नक बाद कुलानन्दसँ संवादक प्रयास करैत छथि। दोसर दिस विद्यालयक अन्य शिक्षक छड़ीसँ मारैत छथि आ अपमानजनक उपमा दैत छथि। अतः विद्यालय नाटकमे स्वतः मुक्तिक संस्थान नहि; ओ सक्रिय शिक्षकक कारण समावेशक होइत अछि आ अनुशासनक हिंसक रूपक कारण असमावेशक सेहो। श्यामबाबूक मानवीय पहल आ सहकर्मीक कठोरता बीच एकर नैतिक मूल्यांकन बनैत अछि।

भारतक निःशुल्क आ अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, २००९ बच्चाक विद्यालय-प्रवेशक अधिकार निर्धारित करैत अछि; ओकर धारा १७ शारीरिक दण्ड आ मानसिक उत्पीड़नक निषेध करैत अछि। नाटकमे पढ़बाक अवसर आ विद्यालयीय मारक दूनू उपस्थिति एहि अधिकार-सिद्धान्तक संग अर्थपूर्ण तुलनाक अवसर दैत अछि। तथापि रचनामे पात्रक ठोस आयु नहि देल गेल अछि, तें अधिकार-क्षेत्रक कतेक

विशिष्ट प्रावधान केकरापर लागू होइत, से अनुमानसँ निश्चित नहि कएल जा सकैत अछि।

पाउलो फ्रेरेक संवादमूलक शिक्षाशास्त्र आ बेल हुक्सक मुक्तिमुखी अध्यापनक विमर्श एहि विरोधकेँ पढ़बाक सन्दर्भ दैत अछि : सिखबैत संस्था केवल ज्ञान हस्तान्तरित नहि करैत, छात्रक आवाजक मान्यता सेहो निर्मित करैत अछि। सविताक इच्छा सुनबाक श्यामबाबूक तत्परता एहि अर्थमे निर्णायक अछि। मुदा नाटकक शिक्षकक सकारात्मक छवि पूर्ण आदर्श नहि : हुनकर प्रयत्न व्यक्तिगत मध्यस्थतापर निर्भर रहैत अछि; विद्यालयक संस्थागत जवाबदेही विकसित नहि होइत अछि।

८. कुलानन्दक दरबज्जा : जमीन, आसन आ भाषाक सत्ता

छठम दृश्यक मंचीय सजावटमे कुलानन्द अपन दरबज्जापर कुर्सीपर बैसल छथि आ कातमे पुरान आसन रहैत अछि। ओ मजदूर बिसेखीकेँ कुर्सी आनबाक आज्ञा दैत छथि; बिसेखी कुर्सी देलाक बाद ठाढ़ रहैत छथि। एहि क्रियामे सत्ता-समीकरण बिना व्याख्यात्मक भाषणक स्थापित होइत अछि। के बैसत, के ठाढ़ रहत, के कहत आ के सुनत—सामाजिक क्रमक निर्णय वस्तु आ देहक स्थिति द्वारा जनाओल गेल अछि। नाटकक ई क्षण ओकर सर्वाधिक अर्थघन दृश्य-संकेतमे एक अछि।

कुलानन्द अपन बेटाक दोष सुनिते शिकायतकेँ उल्टा बालिकाक ‘खचरपनी’सँ जोड़ैत छथि। ओ विद्यालय अपन जमीनपर बनल होयबाक दावी करैत छथि। स्कूलक भौतिक आधारपर हुनकर नियन्त्रणक दावा सार्वजनिक शिक्षाक नैतिक-सार्वजनिक प्रकृतिक विरोधमे ठाढ़ अछि। भूमि-स्वामित्व, सामाजिक प्रतिष्ठा आ न्यायिक बचाव एकठाम गुँथल अछि; आ विद्यालयक अधिकार-संरचना बाहरी जमीनदारी प्रभावसँ असुरक्षित देखाइत अछि।

बिसेखी मजदूर छथि, मुदा हुनकर भूमिका एकमात्र प्रतिरोधी स्वरक नहि। ओ सविताक अवस्थाक गम्भीरता बतबैत छथि, फेर ‘धिया-पुताकेँ हाँटि-दबाड़ि देबाक’ जकाँ अनुशासनवादी विचार सेहो व्यक्त करैत छथि। एहि द्वंद्वसँ पात्र अधिक

विश्वसनीय बनैत अछि : पीड़ित वर्गक सदस्य होयब सामाजिक पदानुक्रमसँ पूर्ण मुक्त होयबाक गारंटी नहि। मालिकक सामने हुनकर भाषाक संकोच आ आंशिक सहमति सत्ता द्वारा निर्मित व्यवहारक जटिलता बतबैत अछि।

बुर्दियू आ पासेरोंक शिक्षामे सांस्कृतिक पुनरुत्पादनक विवेचन एहि दृश्य पढ़बाक एक सैद्धान्तिक धरातल दैत अछि। मुदा नाटकमे जातिगत पहचान वा विशिष्ट सामाजिक श्रेणी सभ स्पष्ट नहि कएल गेल अछि; तें पात्रक उपनाम अथवा व्यवसायसँ जाति निर्धारित करब साक्ष्य-विरुद्ध होयत। पाठक आधारपर स्पष्ट विरोध आर्थिक हैसियत, श्रमक स्थिति आ जमीनक प्रभावसँ जुड़ल अछि।

९. हिंसाक परोक्ष प्रस्तुति आ सविताक फाटल वस्त्र

सवितापर भोगेन्द्र द्वारा कएल मारपीटक घटना स्वयं मंचपर देखाओल नहि गेल अछि। पाँचम दृश्य आरम्भ होइत अछि तँ सविताक कपड़ा फाटल अछि, ओ कानि रहल छथि आ पिता शिक्षकसँ प्रश्न पुछैत छथि। एतय घटनाक शारीरिक प्रस्तुति नहि, ओकर परिणाम मंचीय केन्द्र बनैत अछि। निर्देश सभ दर्शककेँ पीड़ा बुझबैत अछि, जखनकि हरिचरणक भाषा ई पीड़ाकेँ शिक्षा-अधिकारक निषेध रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

फाटल वस्त्र बहुस्तरीय संकेत अछि। एक स्तरपर ओ हिंसाक प्रत्यक्ष प्रमाण अछि; दोसर स्तरपर ओ लड़कीक सामाजिक असुरक्षाक दृश्य चिह्न अछि; तेसर स्तरपर पिता 'पढ़ेबाक' निर्णयक पश्चात्ताप सँ ओकरा जोड़ैत छथि। मुदा ई वस्त्र स्वयं 'लाज'क कारण नहि—लाज तकरा फाड़ि देनिहार हिंसा आ ओकर संरक्षणमे अछि। शीर्षकक पुनर्पाठ एही बिन्दुपर ऐतिहासिक स्त्री-शरीरकेँ शर्मक वाहक मानबाक प्रवृत्तिक उलट दिशा लेइत अछि।

एहि विधिमे एक कलात्मक सामर्थ्य सेहो अछि : मंचपर हिंसा फेर सँ उपस्थित करबाक अपेक्षा पीड़िताक अवस्था आ सामाजिक प्रतिक्रिया देखाओल गेल अछि। मुदा सविताक अनुभवक विस्तृत स्वतन्त्र स्वगत वा संवाद नहि देनाइ ओकर पीड़ाकेँ

पिताक भय आ शिक्षकक हस्तक्षेपक माध्यमसँ व्याख्यायित करैत अछि। दर्शक ओकर चोट देखैत छथि, मुदा ओकरा बादक आन्तरिक संघर्ष बेसी नहि सुनैत छथि।

१०. समयान्तराल, गाछक रूपक आ सामाजिक स्मृति

सातम दृश्यसँ आठम दृश्य धरि कथाक समयमे दीर्घ अन्तराल अछि। गामक चौकपर ग्रामीण सभ गाछक बढ़नाइ देखैत अपन पुरान विद्यालयक छात्रसभकेँ जुआन भऽ गेल बतबैत छथि। एहि गाछक माध्यमसँ समयक बीतब दृश्य-प्रतीक बनि उठैत अछि। बाल्यकालक घटना मेटायल नहि अछि; गाछ जकाँ ओकर स्मृति बढ़ैत रहल अछि। जखन ग्रामीण सविताक चिकित्सक बनबाक चर्चा करैत छथि, दर्शक बुझैत छथि जे साक्षात्कार-विहीन वर्ष सभमे शिक्षा अपन परिणाम देलक अछि।

एहि प्रतीकक विरोधी दिशा भोगेन्द्रक आविर्भावसँ प्रकट होइत अछि। गाछ बढ़ल, सविता बढ़ल, मुदा भोगेन्द्रक व्यवहार नैतिक परिपक्वतापर नहि पहुँचल। ओ मद्यपानक कारण संकटमे पड़ैत अछि। एहि समानान्तर रचनासँ शिक्षा आ उत्तरदायित्वक तुलना सम्भव होइत अछि; मुदा व्यक्तिक असफलताक एकमात्र कारण मद्यपान आ सफलताक एकमात्र कारण पढ़ाइ मानब नाटकक नैतिक सरलीकरणकेँ आलोचनात्मक दूरीसँ पढ़बाक माँग करैत अछि।

अन्तरालक नाटकीय लाभ गति अछि, हानि प्रक्रियाक अदृश्यता। सविताक विद्यालय बदलनाइ, उच्च अध्ययन, स्वास्थ्य-सेवामे प्रवेश आ सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करबाक बहुपरत यात्रा नाटक दर्शककेँ स्वयं भरबाक लेल छोड़ैत अछि। जँ कथानकक लक्ष्य नैतिक फल देखायब अछि तँ ई संक्षेप कार्यकारी अछि; जँ लक्ष्य स्त्रीक स्वाधीनता अर्जित करबाक ऐतिहासिक-सामाजिक कठिनाईक विश्लेषण अछि तँ ई संक्षेप महत्त्वपूर्ण अनुभवकेँ बाहर राखैत अछि।

११. अवसरक असमानता : मौसा रघुवीरक आर्थिक सहयोग

सातम दृश्य नाटकक नैतिक गणितमे निर्णायक अछि। हरिचरणक साढ़ू रघुवीर अपन गर्भवती आ अस्वस्थ पत्नीक देखभाल लेल सविताकेँ संग लऽ जेबाक प्रस्ताव दैत छथि। ओ शिक्षा-व्यय अपन माथ लेने शहरमे पढ़बाक व्यवस्था करबाक आश्वासन दैत छथि। एतय सहायता आ घरेलू सेवा एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। अवसर भेटैत अछि, मुदा ओकर पृष्ठभूमिमे कन्याक देखभाल-श्रमक अपेक्षा सेहो अछि। ई द्वैध नाटकक सामाजिक सत्यक रोचक संकेत अछि।

सविताक सहमति स्पष्ट अछि; तें ओकरा केवल अदला-बदलीक वस्तु मानब गलत होयत। तथापि प्रश्न रहैत अछि : जाहि बालिकाक मौसा सक्षम नहि होइथ, ओकरा कतेक अवसर भेटत? नाटक गरीबीक बाधा देखबैत अछि, मुदा संरचनागत समाधानक स्थानपर एक सज्जन रिश्तेदारक निजी सहायता प्रस्तुत करैत अछि। नुसबॉमक सामर्थ्य-दृष्टिक संदर्भमे कहि सकैत छी जे प्रतिभा केवल व्यक्तिगत गुण नहि; जीवनक वास्तविक विकल्प खोलबाक सामाजिक व्यवस्था सेहो आवश्यक अछि।

अन्तमे ग्रामीण कहैत छथि जे सविताक उपलब्धिमे मौसाक खर्चक योगदान रहए। ई कथन पिता-केन्द्रित कीर्तिक दावाकेँ संशोधित करैत अछि। नाटक शिक्षामे सफलताक पाछाँ संसाधनक महत्त्व स्वीकार करैत अछि, मुदा ओही तथ्यसँ अपन आदर्शक सीमा सेहो प्रकट करैत अछि : समान अवसर सभक लेल व्यवस्थागत बनल नहि, एक लड़कीक लेल व्यक्तिगत रूपसँ उपलब्ध भेल।

१२. दहेजक चर्चा आ सामाजिक प्रश्नक परिधि

दोसर दृश्य शिक्षकक बातचीत दहेजक माङसँ शुरू होइत अछि। मोटरसाइकिल, सोना आ लैपटॉपक लोभक सूची घरेलू जीवनमे वस्तु-मूल्यक प्रवेश देखबैत अछि। ई प्रसंग मुख्य कथानकक संग प्रत्यक्षतः नहि जुड़ैत, मुदा बेटीक जीवनकेँ खर्च, भय आ सामाजिक भार मानबाक मानसिकताक पृष्ठभूमि बनबैत अछि। बालिकाक पढ़ाइ-

विरोधमे पिता जे आर्थिक आ सामाजिक बाधा गिनबैत छथि, ओकर व्यापक परिवेशक संकेत ई दहेज-वार्ता दैत अछि।

रचनाक संरचनामे दहेज चर्चा एक प्रकारक विषयगत भूमिका अछि। एकर सीमा ई अछि जे शिक्षकक दहेज-विरोध बादमे क्रियात्मक सामाजिक अभियानमे बदलैत नहि। विषय खुलैत अछि, मुदा उपकथानक रूपमे विकसित नहि होइत अछि। अतः एकरा पूर्ण दहेज-विमर्शक नाटक नहि कहब; सामाजिक स्त्री-असमानताक आरम्भिक परत कहब अधिक उचित अछि।

१३. संवादक लोकधर्मिता, व्यंग्य आ वर्गानुसार स्वर

'लाज'क भाषा ग्रामीण मैथिलीक व्यवहारिक लयपर आश्रित अछि। पात्र सभ 'यौ', 'माहटर साहैब', 'बाबू', 'रौ', 'छौड़ी' जकाँ सम्बोधन द्वारा सामाजिक दूरी घटबैत वा बढ़बैत छथि। श्यामबाबूक समझाबनिहार स्वर, हरिचरणक आशंकित उत्तर, कुलानन्दक आदेशात्मक भाषा, बिसेखीक संकुचित प्रतिवाद आ सविताक सीधा निवेदन—ई सब मिलि पात्र-संबंधक ध्वन्यात्मक दुनिया रचैत अछि। बहुतो ठाम संवाद पोथी पढ़बाक अपेक्षा मंचपर उच्चारबाक लेल स्वाभाविक प्रतीत होइत अछि।

हरबाहाक शिक्षकसँ प्रश्न करब आ कुलानन्दक दरबज्जापर बैसबाक व्यवस्था व्यंग्यक दू पृथक् प्रकार अछि। पहिल ठाम संस्था आ कर्मक विरोधाभास हास्य-व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि; दोसर ठाम आसनक असमानता अपमानक तनाव बनबैत अछि। दूनूमे दृश्य-संकेत संवादक अर्थक विस्तार करैत अछि।

यद्यपि किछु प्रसंगमे पात्र विचारक वाहक बनि जाइत छथि। श्यामबाबू बेटा-बेटीक समानतापर लगभग प्रत्यक्ष उपदेश दैत छथि; अन्तिम कुलानन्द समाजकेँ शिक्षा-सहयोगक निर्देश दैत छथि। सन्देश स्पष्ट होइत अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलता घटैत अछि। संवादक एहन उपदेशात्मकता सामाजिक एकांकीक उद्देश्यक संग संगत अछि, किन्तु आलोचनात्मक दृष्टिसँ एकर कलात्मक व्ययकेँ सेहो चिन्हबाक चाही।

१४. प्रत्यभिज्ञान, नैतिक उलटाव आ क्षमाक समस्या

नवम दृश्य एक प्रकारक नैतिक प्रत्यभिज्ञानक दृश्य अछि। जे कुलानन्द अपन प्रभुत्वमे पुत्रक अपराध स्वीकार नहि कएने छल, ओ अपन बेटाक प्राणरक्षककेँ पहिचानि अपराधक नैतिक अर्थ बदलैत अछि। अरस्तूक 'Poetics'मे प्रत्यभिज्ञान आ स्थितिविपर्ययक चर्चा नाटकीय परिवर्तन बुझबाक उपयोगी रूपक दैत अछि; 'लाज'मे ई परिवर्तन शास्त्रीय त्रासदीक समतुल्य घटना नहि, अपितु सामाजिक नाटकक सीमामे नैतिक उलटाव अछि। एहन तुलनाक उद्देश्य नाटककेँ अरस्तूक मॉडलमे बलात् समेटब नहि, चरम दृश्यकेँ अधिक स्पष्ट देखब अछि।

एहि उलटावक बल पूर्व-स्थापित स्मृतिमे अछि। कुलानन्दकेँ ककरो अपरिचित चिकित्सकसँ सहायता नहि भेटैत; ओ ओही बच्चीक सेवासँ बचैत छथि जकर अध्ययन-मार्गमे हुनकर परिवार बाधा बनल छल। एतेक स्पष्ट नैतिक विन्यास दर्शककेँ निष्कर्ष तक पहुँचबामे सक्षम बनबैत अछि। अन्तिम अपराध-स्वीकृति ओ निष्कर्षकेँ भाषिक रूप दैत अछि।

मुदा अपराध-स्वीकृति आ न्याय एक नहि। भोगेन्द्र माफी माँगैत अछि, कुलानन्द पछतबैत छथि, सविता औषधोपचार दैत छथि। हिंसाक कारण समाजमे पसरल असमान सत्ता अबो कत्ते बदलल, विद्यालयक व्यवस्था कतेक सुधरल, पीड़िताकेँ स्वीकार्य न्याय भेटल कि नहि—ई प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि। नैतिक समाधानकेँ कानूनी वा संस्थागत समाधानक पर्याय मानल जाए तँ नाटकक सीमा अदृश्य भऽ जायत।

कथानक प्रतिशोधक स्थानपर दया आ सार्वजनिक सेवा चुनैत अछि, जे ओकर मानवीय उपलब्धि अछि। एकरा केवल 'अपराधीकेँ क्षमा करबाक आदेश' मानबो अतिरेक होयत, कारण सविताक उपचार पेशागत कर्तव्यसँ सेहो जुड़ल अछि। तथापि अन्याय-उपरान्त स्त्रीसँ नैतिक महानताक अपेक्षा आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि : सविताक क्षमा ओकर चुनल निर्णय अछि वा कथा द्वारा निर्धारित आदर्श? पाठ निश्चित उत्तर नहि दैत; ओकर समापन एहि बहसक लेल स्थान छोड़ैत अछि।

१५. स्त्री-अध्ययनक परिप्रेक्ष्य : समानता, चयन आ 'आदर्श बेटी'

श्यामबाबू बेटा-बेटीमे भेद नहि होयबाक घोषणा करैत छथि। ई सिद्धान्त घरक श्रम-विभाजनपर प्रश्न उठबैत अछि, कारण पिता मानैत छथि जे बेटीकेँ घर-अँगनाक काजसँ समय नहि भेटैत। मातृक सहमति, शिक्षकीय समर्थन आ सविताक आग्रह मिलि स्त्रीशिक्षाक पक्षमे नव पारिवारिक सहमति बनबैत अछि। नाटकक प्रगतिशीलता एहि समवेत परिवर्तनमे अछि।

फेरो आदर्श बेटी बनबाक कसौटी सविताक कथा भरि बदलैत रहैत अछि—पहिने 'संस्कार', फेर तेज बुद्धि, बाद चिकित्सकीय उपलब्धि, आ अन्तमे अपराधी प्रति उदारता। ई गुण सभ सकारात्मक अछि, मुदा समानता केवल उत्कृष्ट प्रदर्शनक पुरस्कार नहि होयबाक चाही। यूनेस्कोक लैंगिक-शिक्षा अध्ययन स्पष्ट करैत अछि जे गरीबी, सामाजिक मान्यता, संस्थागत व्यवहार आ हिंसा एक-दोसरसँ मिलि बालिकासभक अवसर सीमित करैत अछि। एहि व्यापक अध्ययनक प्रकाशमे 'लाज'क सविता विशिष्ट सफल बालिका छथि, समस्त बालिकाक औसत जीवनक प्रतिनिधि नहि।

मैथिली नाट्य-साहित्यपर नारीवादी शोधमे स्त्री-पात्रक पराधीनता आ प्रतिरोधक वैकल्पिक स्वरक अध्ययन सेहो उपलब्ध अछि। एहि सन्दर्भमे 'लाज'क सविता न पूर्णतः मौन पात्र छथि, न पूर्णतः स्वायत्त : हुनकर आवाज कथानक चलबैत अछि, मुदा निर्णायक संसाधन पिता, शिक्षक आ मौसाक माध्यमसँ उपलब्ध होइत अछि। एहि मिश्रित अवस्थाकेँ स्वीकार करब नाटकक स्त्री-विमर्श बुझबाक लेल अनिवार्य अछि।

१६. सामाजिक निष्कर्षक विश्वसनीयता आ नाटकीय सीमासभ

नाटकक पहिल विशिष्ट उपलब्धि शीर्षकक अर्थक बदलैत सामाजिक स्थान अछि। दोसर उपलब्धि ग्रामीण शिक्षा-वास्तविकताक द्वैध रूप—कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकक संग लापरवाह शिक्षक, शिक्षा-अधिकारक संग हिंसा—रचनात्मक रूपसँ देखेनाइ अछि।

तेसर उपलब्धि जमीनदारक दरबज्जाक मंचीय विन्यास अछि, जतय कुर्सी, ठाढ़ रहब आ आज्ञाक भाषा सत्ता-सम्बन्धकेँ मूर्त करैत अछि। चारिम उपलब्धि सविताक खिड़कीसँ प्रवेश आ चिकित्सक रूपमे पुनरागमन बीच बनैत सामाजिक परिपथ अछि।

सीमासभ ओतबे स्पष्ट अछि। भोगेन्द्रक अपराधी किशोरसँ मद्यपी युवक बनबाक रेखा अत्यधिक सीधी अछि; कुलानन्दक क्रूर संरक्षकसँ पश्चात्तापशील नागरिक बनब तीव्र अछि; सविताक उन्नतिक बीचक वर्षोंक अनुपस्थिति जीवनानुभवक बहुलता घटबैत अछि। कोनो-कोनो संवाद घटना अग्रसर करबाक स्थानपर आशयक व्याख्या करैत अछि। एहि कारण कथानक नैतिक रूपसँ प्रभावकारी, मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलतामे सीमित अछि।

शिक्षा-प्रेरक सार्वजनिक प्रस्तुति रूपमे ई संक्षिप्त नैतिकता कार्यकारी होयत, विशेषतः जँ अभिनयमे पात्रक देहभाषा, संवादक विराम, सामाजिक दूरी आ अन्तिम मौनपर ध्यान देल जाय। परन्तु मंचनक व्यावहारिकता मूल्याङ्कन करैत नौ दृश्य, अनेक स्थल, छात्र-समूह आ दीर्घ समयान्तरालक कारण दृश्यपरिवर्तनक सावधानी अपेक्षित अछि। लेखकक आरम्भिक नाट्य-आकांक्षा एहि रूपक सम्भावना सूचित करैत अछि, किन्तु वास्तविक मंचनक सफलता एकरा मात्र आधारपर सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि।

१७. उपसंहार : लाज केकरा हो?

'लाज' स्त्रीशिक्षाक नैतिक पक्षधरतासँ आरम्भ भऽ सामाजिक सत्ता आ आत्मबोधक जटिल बहस धरि जाइत अछि। बेटीकेँ घरक बाहर निकललासँ 'बदनामी'क भय देखेनिहार समाज अन्ततः एहि ज्ञानपर पहुँचैत अछि जे सार्वजनिक जीवनमे वास्तविक लाज अन्याय, अहंकार आ अवसर-निषेधक कारण होइत अछि। नाटकक अन्तिम सन्देश शिक्षा-सहयोगक अछि, मुदा ओकर कलात्मक केन्द्र शब्द 'लाज'क एहि स्थानान्तरणमे अछि।

पाठक आलोचनात्मक अध्ययन ईहो देखबैत अछि जे व्यक्तिगत दयालुता सामाजिक न्यायक सम्पूर्ण विकल्प नहि बनि सकैत। सविताक प्रतिभा आ साहसकेँ मान्यता देब, सुरक्षित विद्यालय सुनिश्चित करब, धनिकक अनुचित प्रभुत्वक प्रतिरोध करब आ गरीब परिवारक बच्चासभ लेल बराबर संसाधनक व्यवस्था करब—ई सब परस्पर सम्बन्धित सामाजिक प्रश्न अछि। नाटक एकटा सफल बेटी आ बदलैत अपराधी परिवारक कथा दैत अछि; पाठक एकर आलोकमे एहन समाजक कल्पना करबाक दायित्व उठबैत अछि जतय कोनो बच्चीकेँ पढ़बाक लेल असाधारण प्रतिभा, सज्जन मौसा अथवा अन्ततः अपराधीकेँ बचायब आवश्यक नहि हो।

एहि प्रकार 'लाज'क मूल्य केवल आदर्शात्मक सुखान्तमे नहि, ओकर भीतर उपस्थित असमानताक दृश्य-संकेत, स्त्रीक पहिल आवाज, असफल संस्थागत संरक्षण आ अन्यायक विरुद्ध उत्पन्न आत्मलज्जामे अछि। मैथिली सामाजिक एकांकीक अध्ययनमे ई रचना लोकभाषाक संवाद, शिक्षा-संबद्ध चेतना आ नैतिक उलटावक उपयोगी उदाहरण रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—एहन उदाहरण जकर आलोचना ओकर उपलब्धि आ सीमाकेँ एकसमान गम्भीरतासँ स्वीकार करैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव. लाज : एकांकी-नाटक. लेखकक "दू शब्द" १४ जनवरी २०१५ दिनांकित।

हीरामण्डल. "मैथिली एकांकीक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन." Current Studies: A Research Journal of Patna College, 2019. ISSN 2347-9833.

Aristotle. Poetics. Translated by S. H. Butcher. The Internet Classics Archive, Massachusetts Institute of Technology. https://classics.mit.edu/Aristotle/poetics.1.1.html

Bourdieu, Pierre, and Jean-Claude Passeron. Reproduction in Education, Society and Culture. 2nd ed. London: SAGE Publications, 1990.

Diamond, Christopher L. “The ‘Indescribable Country’: Locating Mithila between Bengal and the Hindi Heartland in Raghunandana Das’s Mithilānāṭaka.” Asian Ethnology 85, no. 1 (2026). https://doi.org/10.18874/ae.85.1.03

Dikmonienė, Jovita. “Anagnorisis in Aristotle’s Poetics: Problems of Definition and Classification.” Literatūra 61, no. 3 (2019). https://doi.org/10.15388/Litera.2019.3.3

Freire, Paulo. Pedagogy of the Oppressed. English translation, 1970. 50th Anniversary Edition. New York: Bloomsbury Academic, 2018.

hooks, bell. Teaching to Transgress: Education as the Practice of Freedom. New York: Routledge, 1994.

Jha, Devakanta. A History of Modern Maithili Literature: Post-independence Period. New Delhi: Sahitya Akademi, 2004.

Nussbaum, Martha C. Women and Human Development: The Capabilities Approach. Cambridge: Cambridge University Press, 2000. https://doi.org/10.1017/CBO9780511841286

Prakash, Pranav. “A Cowherd’s Chapbook: An Inquiry into the Ethics of Literary Historiography.” Asian Ethnology 85, no. 1 (2026). https://doi.org/10.18874/ae.85.1.06

Sanjeevani, Sapana. Dramatization of Women’s Identity: A Feminist Reading of Selected Maithili Dramas. Department of English, Tribhuvan University, 2022.

UNESCO. A New Generation: 25 Years of Efforts for Gender Equality in Education. Global Education Monitoring Report, Gender Report, 2020. https://gem-report-2020.unesco.org/gender-report/

भारत सरकार. The Right of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009. Act No. 35 of 2009. India Code. https://www.indiacode.nic.in/indiacode/handle/123456789/2086

अध्याय 7

पंचैती : सामाजिक न्याय, जातिगत नियन्त्रण आ स्त्री-प्रतिरोध

सारांश

राजदेव मण्डलक 'पंचैती' (२०१३) लघु पटकथा अन्तर्जातीय प्रेम-विवाहक प्रसंगकेँ केन्द्रमे राखि ग्रामीण समाजक सामूहिक अनुशासन, स्त्रीक स्वायत्तता आ वैधानिक न्यायबीचक टकराव प्रस्तुत करैत अछि। नौ दृश्य धरि विस्तार पाबि ई रचना घटनाक संख्या सँ बेसी प्रतिरोधक क्रमिक विस्तारपर आश्रित अछि। एहि लेखमे निकट-पाठ, दृश्य-रचनाक विश्लेषण, जाति आ पितृसत्ताक अन्तःसम्बन्ध तथा वैवाहिक चयनक विधिक सन्दर्भक सहायता सँ कथाक वैचारिक आ कलात्मक उपलब्धि परखल गेल अछि। अध्ययन देखबैत अछि जे शीर्षकक 'पंचैती' लोक-विवेकक आदर्श नहि, अपितु सामाजिक प्रभुत्वक दण्डकारी अभिनयक रूपमे उभरैत अछि; एकर विपरीत गीता नैतिक तर्क, सार्वजनिक असहमति आ सहयोगी कार्रवाईक केन्द्र बनैत छथि। संगहि, ललिताक मौन, घटनाक बीचक रिक्त स्थान, विधिक समाधानक आकस्मिकता आ पिताक अत्यन्त तीव्र हृदय-परिवर्तन पटकथाक रचनात्मक सीमा मानल गेल अछि। निष्कर्षतः 'पंचैती' सामाजिक प्रश्नकेँ दृश्यात्मक टकरावमे रूपान्तरित करबाक महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि, जकर शक्ति सार्वजनिक प्रतिरोधक प्रस्तुतीकरणमे आ सीमा विविध पात्रक स्वतन्त्र अनुभवकेँ अपर्याप्त स्थान देबामे निहित अछि।

बीज-शब्द : लघु पटकथा; राजदेव मण्डल; पंचैती; अन्तर्जातीय विवाह; जाति; स्त्री-स्वायत्तता; सामाजिक न्याय; दृश्य-विन्यास

१. प्रस्तावना : शीर्षक आ रचनात्मक सन्दर्भ

'पंचैती' नाम सुनिते गामक सामूहिक विचार-विमर्श, विवादक समाधान आ लोक-स्तरीय न्याय-पद्धतिक बोध होइत अछि। राजदेव मण्डल एहि परिचित शब्दकेँ एकटा आलोचनात्मक अर्थ प्रदान करैत छथि। एतय समुदाय जुटैत अछि, पंच बैसैत छथि, फैसला सुनाओल जाइत अछि; मुदा निर्णयक मूलाधार तथ्य, अधिकार आ पक्षकारक सहमति नहि, जातिगत प्रतिष्ठा आ सामूहिक अपमानक भय अछि। शीर्षक आ कथ्यबीचक ई विरोधाभास रचनाक केन्द्रीय व्यंजना बनैत अछि। 'पंचैती' न्यायकेँ प्रश्नातीत संस्थागत अधिकार मानबाक बदला न्याय करबाक दावाक वैधताकेँ प्रश्नांकित करैत अछि।

पटकथाक केन्द्रमे ललिता आ किशनक परस्पर प्रेम तथा विवाहक निर्णय अछि। हुनका सभक निर्णय परिजन, जाति-समुदाय आ पंचायतक हिंसक प्रतिक्रिया उत्पन्न करैत अछि। मुदा कथा जतेक दू प्रेमीकेँ बचयबाक प्रसंग अछि, ततेक एकटा दोसर संघर्ष सेहो अछि—समाजक भीतरहि स्त्रीक नैतिक विवेक केना सार्वजनिक स्वर बनैत अछि। ललिताक सहेली गीता घटनाकेँ निजी दुर्घटनासँ सार्वजनिक अन्यायक प्रश्नमे बदलैत छथि। फलतः रचनाक घोषित केन्द्र प्रेम अछि, आ क्रियात्मक केन्द्र गीताक प्रतिरोध।

प्रथम संस्करण २०१३मे प्रकाशित एहि लघु पटकथाकेँ अपन समयक सामाजिक तनावक साहित्यिक प्रत्युत्तरक रूपमे पढ़ब सम्भव अछि; तथापि एकर अन्तर्वस्तु मात्र ओहि वर्ष धरि सीमित नहि अछि। एतय प्रश्न ई नहि जे प्रेमक विरोध के करैत अछि, वरन् ई जे कोन संस्था, कोन सम्बन्ध आ कोन भाषा दूसराक जीवनपर फैसला सुनयबाक अधिकार अपन हाथमे लैत अछि। एहि प्रश्नकेँ अग्रभूमिमे राखलापर पुस्तक सामाजिक उपदेशक एकरेखीय आलेख नहि रहि, सत्ता, सहमति आ प्रतिरोधक छोट मुदा तीक्ष्ण नाट्य-परिसर बनि उठैत अछि।

२. अध्ययनक पद्धति आ आलोचनात्मक आधार

एहि अध्ययनक प्राथमिक आधार स्वयं पटकथाक पात्र-विन्यास, संवाद, दृश्य-निर्देश आ अन्तिम घटनाक्रम अछि। विश्लेषणमे पहिने ई देखल गेल अछि जे रचना घटनाकेँ कोना क्रमित करैत अछि; फेर ई कि कोन पात्रकेँ बोलबाक, कार्य करबाक अथवा मौन रहबाक अवसर देल जाइत अछि; आ अन्तमे ई कि कथा द्वारा प्रतिपादित सामाजिक न्याय प्रस्तुतीकरणक शिल्पमे कतेक विश्वसनीय बनैत अछि। एहि कारणे कथाक वैचारिक सहमति आ कलात्मक सफलताकेँ एकहि वस्तु नहि मानल गेल अछि।

जाति आ विवाहक प्रश्नकेँ देखबाक लेल आंबेडकरक जाति-उन्मूलन सम्बन्धी विचार उपयोगी सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि दैत अछि। अन्तर्जातीय विवाहकेँ ओ जातिक पृथक्करण घटयबाक महत्त्वपूर्ण साधन मानैत छथि। उमा चक्रवर्तीक अध्ययन जातिक पुनरुत्पादन आ स्त्रीक यौनिकता/वैवाहिक चयनपर नियन्त्रणक गहन सम्बन्ध उद्घाटित करैत अछि। एहि दुनू दृष्टिकेँ एकसंग पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे ललिताक विवाहपर विरोध केवल 'परम्परा'क सामान्य समर्थन नहि, अपितु अपन समूहक सीमा आ पुरुषाधारित निर्णयाधिकारक रक्षा सेहो अछि।

कथानक आ कथन-प्रस्तुतिक पृथक्करण लेल सेमुर चैटमैनक 'स्टोरी' आ 'डिस्कोर्स' सम्बन्धी अवधारणा उपयोगी अछि। घटना घटब आ ओहि घटनाक दर्शकक आगू दृश्यरूपमे उपस्थित होयब अलग विषय अछि। एतय विशेष ध्यान ओहि अन्तरालपर देल गेल अछि जतय निर्णायक सामाजिक वा विधिक घटना कथामे मानि लेल जाइत अछि, मुदा मंचीय क्रियामे ओकर विकास नहि देखाओल जाइत अछि।

३. नौ दृश्य : सूचना सँ सार्वजनिक टकराव धरि

प्रथम दृश्य धनेसरक आँगनमे खुलैत अछि। गीताक परीक्षा दयबामे गेल रहबाक सूचना सँ घरेलू शिक्षाक परिस्थिति उद्घाटित होइत अछि; लगले धनेसर रमुआक बेटी ललिताक कोनो युवक संग चलि जेबाक गप उठबैत छथि आ बढ़ैत पढ़ाइकेँ दोष दैत छथि। गीताक माए प्रतिवाद करैत छथि जे एहेन घटना पहिनहुँ घटैत छल। एहि छोट

घरेलू संवादमे दू पीढ़ीक विचार मात्र नहि, ‘समाचार’ बनयबाक प्रक्रिया सेहो उपस्थित अछि—जकर जीवनक निर्णय अछि, ओकर स्वर अनुपस्थित; जकरा प्रतिष्ठाक चिन्ता अछि, ओ घटना परिभाषित करय लगैत अछि।

दोसर दृश्य रमुआक दुआरिपर किछु ग्रामीणक एकत्र होयब देखबैत अछि। परिजनक पीड़ासँ आरम्भ भेल प्रसंग जातिगत सामूहिक प्रतिष्ठाक प्रश्न बनि जाइत अछि। एकटा ग्रामीण अपमानक भाषा अपनबैत अछि; दोसर दण्डक संकेत दैत अछि; आ तेसर पक्ष जाति-जत्थाक संघर्षसँ कोनो तेसर समूहक लाभ होयबाक आशंका व्यक्त करैत अछि। एहिसँ बुझाइत अछि जे भीड़ केवल आहत नैतिकताक सहज परिणाम नहि, अपितु आपसी शक्ति-सन्तुलनक गणना करयवाली राजनीतिक संरचना सेहो अछि। निजी प्रेमपर जाति-समुदाय एतेक तीव्र प्रतिक्रिया किएक दैत अछि—एकर सूक्ष्म संकेत एहि सामूहिक संवादमे अछि।

तेसर दृश्य रात्रिक अन्हारमे सहदेवक घरपर घटैत अछि। किशन आ ललिता छिपैत प्रवेश करैत छथि; सहदेव लालटेन लऽ कऽ बाहर अबैत छथि आ लड़का-बेटीक आगमनसँ विचलित होइत छथि। ई रात्रि, लालटेन आ भय दृश्यकेँ प्रतीकात्मक गरिमा दैत अछि। किशन स्पष्ट करैत छथि जे ओ दुनू बालिग छथि आ विवाह करबाक अधिकार राखैत छथि। सहदेव उत्तर दैत छथि—“कानून अपना जगहपर छै आ पिछड़ल समाज अपना जगहपर अड़ल छै।” एहि कथनमे रचनाक सभसँ प्रभावी वैचारिक तनाव संकुचित रूपमे अछि। कानूनक अधिकार मान्य अछि, मुदा सामाजिक प्रतिशोधक वास्तविकता ओहि अधिकारक व्यावहारिक उपयोग रोकैत अछि।

चारिम दृश्य गीताक शिक्षण-परिसर खोलैत अछि। गीता किछु बच्चाकेँ पढ़ा रहल छथि; तखने ललिताक चिट्ठी अबैत अछि। सहायता लेल तत्काल निकलि पड़नाइ घटनाकेँ निर्णायक मोड़ दैत अछि। पाँचम दृश्य सड़कपर गीताक साइकिल-यात्रा अछि। ओ अपन प्रेमक पूर्वस्मृतिमे डूबल बताओल जाइत छथि, मुदा एहि स्मृतिसँ

जुड़ल कोनो विकसित प्रसंग नहि अबैत अछि। फलस्वरूप संकेत भावनात्मक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा ओकर नाटकीय प्रतिफल सीमित रहैत अछि।

छअम दृश्य सेवामुक्त मास्टर साहेबक घरमे घटैत अछि। निजी पुस्तकालयमे पढ़ैत शिक्षक अपन जीवनभर जातिगत बन्धन तोड़बाक प्रयत्नक चर्चा करैत छथि आ गीताकेँ सहायता देबाक आश्वासन दैत छथि। सातम दृश्य फेर गीताक घर फिर्ती अछि, जतय धनेसर ललिताक फाड़ल चिट्ठीक टुकड़ा हाथमे लऽ बेटीकेँ प्रश्न करैत छथि। गीता प्रेमी-युगलकेँ दोषी मानय सँ इनकार करैत छथि। धनेसर हुनका घरमे बन्द कऽ दैत छथि; आठम दृश्यमे सड़कपर जा रहल एकटा बालक बाहरसँ केबाड़ खोलि दैत अछि। एहि अनुक्रममे शिक्षा, सन्देश, निगरानी, कारावास आ सहयोग संक्षिप्त परस्पर-सम्बद्ध क्रियामे बदलि जाइत अछि।

नअम आ अन्तिम दृश्य गामक पंचायत-स्थलपर अछि। गाछतर चबुतरापर बैसल पंच, नीचाँ जमा ग्रामीण, लाठी लऽ ठाढ़ युवक आ घेरल प्रेमी-युगल—ई सभ मिलि न्यायालय नहि, सामाजिक दमनक मंच निर्मित करैत अछि। पंच सार्वजनिक अपमान आ देहदण्डक प्रस्ताव राखैत छथि। गीता भीड़क बीचसँ आगू बढ़ि निर्णयक विरोध करैत छथि। तुरत बाद मास्टर साहेब आ जमादार पहुँचैत छथि; विवाहक कानूनी कागजक उल्लेख होइत अछि; युगलकेँ मुक्त कयल जाइत अछि आ धनेसर अन्तमे गीताकेँ आशीर्वाद दैत छथि। ई अन्त रचनाक न्यायोन्मुख आकांक्षा प्रकट करैत अछि, यद्यपि एहि समाधानक रचनात्मक सहजता प्रश्न उपस्थित करैत अछि।

४. 'पंचैती'क अर्थ-विपर्यय : सामुदायिकता बनाम न्याय

पंचायतक वैचारिक प्रतिष्ठा सामान्यतः मध्यस्थता आ लोक-सहमतिक विचारसँ जुड़ल रहैत अछि। मुदा मण्डलक दृश्य-विन्यासमे पंचक उपस्थिति आरोपक जाँच अथवा पक्षकारक कथन सुनबाक प्रक्रिया उत्पन्न नहि करैत अछि। एकटा पहिने सँ तय निष्कर्ष—समुदायक प्रतिष्ठा आहत भेल अछि—सभ निर्णयपर हावी रहैत अछि। चबुतरापर ऊँच बैसल पंच आ नीचाँ घेरल युवक-युवती दृश्यात्मक रूपसँ ऊपर-नीच

सत्ता-सम्बन्ध उद्घाटित करैत अछि। मंचक ऊँचाइ एतय न्यायिक ऊँचाइ नहि, प्रभुत्वक दृश्य-भाषा अछि।

ग्रामीणक बोलीमे “जातिक नाक” आ “इज्जति-परति” सदृश पदावली व्यक्ति-जीवनकेँ समूहक प्रतीकात्मक सम्पत्ति बनबैत अछि। प्रेमी-युगलक स्वीकृति अथवा सुख ओहि भाषामे गौण होइत अछि; मुख्य प्रश्न ई रहि जाइत अछि जे समाजक नाक कोना बचाओल जाए। हिंसाक प्रस्ताव—केश कटेनाइ, मुँहपर कालिख-चून लगेनाइ, गदहापर बैसेनाइ, कोड़ा मारब—सामाजिक नियन्त्रणकेँ दर्शनीय अपमानमे बदलय चाहैत अछि। ई दण्ड अपराधक प्रमाणक उपरान्त नहि, समूहक सत्ता प्रदर्शित करबाक लेल प्रस्तावित अछि।

एहि रूपमे शीर्षक आलोचनात्मक व्यंग्यक काम करैत अछि। पंचैती नामक आयोजनमे स्वतन्त्र विचार-विमर्शक अवसर नहि अछि; सामूहिक उत्साह अपनाकेँ सत्य मानि लैत अछि। ई दृश्य स्थानीय लोकतन्त्रक समस्त रूपकेँ दोषी ठहरौबाक आग्रह नहि करैत; एकर विशेष आरोप ओहि अवैध दण्डाधिकारपर अछि जे सामुदायिक प्रतिष्ठाक नामपर बालिग व्यक्तिक स्वतन्त्र निर्णय नकारैत अछि। एहि भेदकेँ सुरक्षित रखनाइ आलोचनात्मक रूपसँ आवश्यक अछि।

५. जाति आ पितृसत्ताक संयुक्त अनुशासन

ललिताक विवाहपर उठल विरोधकेँ केवल जातिवाद कहि देलासँ रचनाक लैंगिक पक्ष अधूरा रहि जाएत। लड़की घरसँ बाहर गेलीह—एहि सूचना लगले रमुआक सामाजिक लज्जा, ग्रामीणक जातिगत आक्रोश आ पुरुष-परिजनक हिंसक प्रतिक्रिया श्रृंखलाबद्ध होइत अछि। समाज जखन लड़कीक शरीर आ वैवाहिक चयनकेँ कुटुम्बक प्रतिष्ठाक वाहक बनबैत अछि, तखन स्त्रीक सहमति स्वतः राजनीतिक प्रश्न बनि जाइत अछि। चक्रवर्तीक प्रतिपादन एहि संरचनात्मक सम्बन्धकेँ देखबाक मार्ग दैत अछि।

धनेसर द्वारा गीताकेँ घरमे बन्द कयनाइ एहि संरचनाक दोसर रूप अछि। गीता ललिताक नियति बदलय लेल घरसँ निकलैत छथि; पिता हुनकर निर्गमनपर रोक लगबैत छथि। एतय अनुशासनक शिकार केवल प्रेम करयवाली ललिता नहि, प्रेमक पक्षमे बोलयवाली गीता सेहो छथि। अतः स्त्रीपर नियन्त्रणक सीमा विवाह-सहमति धरि सीमित नहि रहि, बोलबाक, आवागमनक आ सामुदायिक असहमति प्रकट करबाक अधिकार धरि विस्तृत होइत अछि।

तथापि सभ पुरुष-पात्र समान प्रकारेँ प्रस्तुत नहि छथि। सहदेव बेटाक प्रेमकेँ सिद्धान्ततः अस्वीकार करबाक अपेक्षा सामाजिक दण्डक भय अधिक व्यक्त करैत छथि। मास्टर साहेब ओकर विपरीत संस्थागत सुधारक विफल अनुभवक उपरान्तो सहायता देबामे तत्पर छथि। ई अन्तर नाटककेँ 'सभ पुरुष बनाम सभ स्त्री'क सरलीकृत सूत्रसँ बचबैत अछि। विरोधक मूल बिन्दु पुरुष होयब नहि, वैयक्तिक स्वतन्त्रतापर सामूहिक स्वामित्वक दावा अछि।

६. गीता : सहायक पात्रसँ नैतिक नायिकाधरि

कथाक आरम्भमे गीता अनुपस्थित छथि, हुनकर शिक्षा पर पिता टिप्पणी करैत छथि। कथा आगाँ बढ़ैत ओ स्वयं बच्चा पढ़बैत, चिट्ठी पढ़ैत, साइकिल चलबैत, शिक्षकसँ सहयोग माँगैत, बन्द घरसँ बाहर निकलैत आ पंचायतक समक्ष तर्क राखैत देखाइत छथि। एहि क्रियाक्रमक सम्पूर्णतामे हुनकर व्यक्तित्व गढ़ल गेल अछि। ओ केवल विवाहक समर्थनमे विचार नहि व्यक्त करैत छथि; जोखिम उठाकऽ वास्तविक सहायता जुटबैत छथि। एहि अर्थमे गीता पटकथाक कर्मप्रधान नायिका छथि।

गीताक शिक्षा एतय व्यक्तिगत उपलब्धिक संकेत मात्र नहि रहैत अछि। आरम्भमे धनेसर पढ़ाइकेँ विकृति सँ जोड़ैत छथि; अन्तमे शिक्षित बेटी सार्वजनिक विवेकक स्रोत बनैत छथि। कथाक पहिल आ अन्तिम दृश्यबीचक ई आन्तरिक विरोध रचनाक संगठित अर्थ-योजना अछि। शिक्षाक दू सम्भावना—अनुशासित सामाजिक प्रगति आ

आलोचनात्मक चेतना—मे गीता दोसर सम्भावनाकेँ साकार करैत छथि। हुनकर तर्क कानूनी अधिकारक भाषा आ मानवीय जीवनक मूल्य दुनूकेँ जोड़ैत अछि।

गीताकेँ सर्वशक्तिमान उद्धारकर्ता मानि लेनाइ सेहो उचित नहि। हुनका समर्थन मास्टर साहेबक सामाजिक प्रतिष्ठा, बालकक छोट सहायता आ अन्ततः राज्यक हस्तक्षेपसँ भेटैत अछि। एहि सहकार्यकेँ ध्यानमे रखलापर रचना प्रतिरोधक सामूहिक सम्भावना देखबैत अछि। विडम्बना ई जे जखन सामाजिक समुदायक एक भाग हिंसा लेल जुटैत अछि, तखन दोसर, अपेक्षाकृत छोट समूह, सहायता आ संरक्षणक सम्बन्ध रचैत अछि। 'समाज' एकगोटे अपरिवर्तनीय सत्ता नहि, भीतरे सँ संघर्षरत क्षेत्र अछि।

गीताक नैतिक विजयक एकटा जटिल पक्ष अन्तमे उभरैत अछि। धनेसर आशीर्वाद दैत छथि, मुदा ई स्वीकृति सीधे गीताक तर्क सुनि नहि, मास्टर साहेबक प्रशंसाक पश्चात् घटैत अछि। अतः पिताक मनपर बेटीक वाणी आ एक प्रतिष्ठित पुरुष-शिक्षकक प्रामाणिकता—दुनूक कतेक प्रभाव पड़ल—रचना स्पष्ट नहि करैत अछि। एहि सूक्ष्म असमाप्ततामे स्त्री-स्वायत्तताक प्रश्न फेर जीवित रहैत अछि।

७. ललिताक मौन : कथाक केन्द्र आ प्रतिनिधित्वक सीमा

'पंचैती'क सर्वाधिक विचारणीय कलात्मक समस्या ललिताक प्रतिनिधित्व अछि। घटना हुनकर प्रेम आ विवाह-निर्णयसँ आरम्भ होइत अछि, हुनकर अपमानक भयपर पंचायत जुटैत अछि, आ हुनकेँ बचयबाक लेल गीता संघर्ष करैत छथि। मुदा उपलब्ध दृश्य-क्रममे ललिता स्वयं अपन इच्छाक विस्तृत कथन करैत नहि देखाइत छथि। ओ प्रवेश करैत छथि, किशनक संग चलैत छथि, भीड़ द्वारा घेरल जाइत छथि, मुदा स्वयं बोलबाक अवसर लगभग नहि पबैत छथि। पात्र-सूचीमे स्त्री-पात्रक अन्तर्गत हुनकर नामक अनुपस्थिति एहि असमानताकेँ आओर दृष्टिगोचर करबैत अछि।

ई समस्या केवल तकनीकी चूक नहि, कथात्मक दृष्टिक प्रश्न अछि। जखन विवाहक स्वायत्तता मुख्य विषय हो, तखन निर्णय लेनिहार युवतीक अनुभव, संशय, जोखिम आ अभिलाषाकेँ स्वर देब विशेष महत्त्व राखैत अछि। गीताक प्रभावी भाषण नाटकक

प्रगतिशील अर्थकेँ स्पष्ट करैत अछि, मुदा ललिताक मौन ओहि प्रगतिशील अभिप्रायक सम्पूर्ण कलात्मक निर्वाह रोकैत अछि। स्त्रीक अधिकारक पक्षमे बोलनाइ आ स्त्रीकेँ अपन पक्ष स्वयं बोलय देनाइ—दुनू अलग उपलब्धि अछि।

किशनक संवाद अपेक्षाकृत किछु विस्तार पबैत अछि। ओ बालिग होयबाक आ वैधानिक विवाहक अधिकारक चर्चा करैत छथि; एतय पुरुष प्रेमी स्वयं अपन निर्णयक भाष्यकार छथि, जखन स्त्री प्रेमी मुख्यतः दृश्यगत उपस्थिति बनि रहैत छथि। एहि असन्तुलनकेँ रचनाक विशिष्ट सीमा कहब उचित अछि। तथापि गीताक माध्यमसँ लेखक स्त्रीक स्वतन्त्र नैतिक नेतृत्वक एकटा दोसर प्रतिरूप रचैत छथि; अतः पाठमे स्त्री-विरोध नहि, स्त्री-प्रतिनिधित्वक असमान वितरण चिह्नित कयल जएबाक चाही।

८. संवाद, लोकभाषा आ दृश्य-शिल्प

पटकथाक भाषा संवादप्रधान अछि। ग्रामीणक उत्तेजित, अधूरा आ प्रत्यक्ष बोलचाल, सहदेवक भययुक्त चेतावनी, किशनक अधिकारबोध, गीताक विवेकपूर्ण प्रतिवाद तथा मास्टर साहेबक सुधारवादी स्वर—ई सभ अलग-अलग सामाजिक स्थितिक संकेत दैत अछि। विशेषतः आरम्भिक दृश्यसभमे भाषाक स्वाभाविकता घटना-विस्तारक गति बढ़बैत अछि। स्थानीय बोलीक लय व्यक्तिक क्रोध, व्यग्रता आ सामाजिक दबावक नाटकीय अनुभव उपस्थित करबैत अछि।

दृश्य-संरचनामे आँगन, दुआरि, रात्रिक घर, पाठ-पढ़ाइ कक्ष, सड़क, पुस्तकालय, बन्द घर आ गाछतर पंचायत-स्थल क्रमशः निजी सँ सार्वजनिक क्षेत्रक ओर गतिक अनुभव करबैत अछि। आँगनमे शुरू भेल बात अन्तमे चबुतरापर पहुँचैत अछि। एकर समानान्तर गीताक आवागमन व्यक्तिगत स्त्री-गतिशीलताकेँ दृश्यरूप दैत अछि। साइकिल विशेष महत्त्वक वस्तु अछि—ई केवल यात्रा-साधन नहि, निगरानीक सीमासँ बाहर निकलबाक क्षमता आ तत्परताक संकेत बनैत अछि।

चिट्ठीक टुकड़ा आ विवाहक कागज—ई दुनू लिखित प्रमाणक विपरीत उपयोग देखबैत अछि। पहिल चिट्ठी सहायता आ विश्वासक सन्देश अछि; ओकर फाटल अंश पिताक हाथमे पहुँचि गीतापर निगरानीक साधन बनैत अछि। अन्तमे विवाहक कागज प्रेमी-युगलक सुरक्षा लेल प्रस्तुत होइत अछि। एहि प्रकार कागज वस्तु मात्र नहि, सत्ता-संघर्षक माध्यम अछि: एकठाम निजी सम्बन्धक भेद खोलयवला, दोसरठाम वैधानिक सहमतिक दावाकेँ समर्थित करयवला। ई समानान्तर प्रतीक पटकथाक सम्भावनाशील कलात्मक उपलब्धि अछि।

तथापि संवादक उत्तरार्द्धमे समस्या देखाइत अछि। पंचायतमे गीताक भाषण, मास्टर साहेबक कथन आ जमादारक चेतावनी महत्त्वपूर्ण बात स्पष्ट करैत अछि, मुदा अनेक ठाम पात्र परिस्थिति जटिल बनयबाक बदला पूर्वनिर्धारित विचारक प्रवक्ता भऽ जाइत छथि। ब्रेख्तक सामाजिक रूपसँ उत्तरदायी रंगमंचक सिद्धान्तसँ एहि प्रवृत्तिक उद्देश्य बुझल जा सकैत अछि; किन्तु सामाजिक प्रयोजनक स्वीकृति स्वतः कलात्मक जटिलताक कमीकेँ दूर नहि करैत अछि।

९. कानून, लोक-प्रतिष्ठा आ संवैधानिक नैतिकता

किशनक बालिग होयबाक घोषणा आ गीताक विवाह-चयनक समर्थनमे कानूनी तर्क रचनाक बुनियादी नैतिक दावाकेँ स्पष्ट करैत अछि। मुदा कानूनक वास्तविक सन्दर्भ आ नाटकक कथनकेँ सावधानीसँ अलग पढ़बाक आवश्यकता अछि। भारतमे विशेष विवाह अधिनियम, १९५४ विवाहक एक वैधानिक व्यवस्था उपलब्ध करबैत अछि, तथापि ओकर अन्तर्गत विवाह सम्पन्न होयबाक निश्चित शर्त आ प्रक्रिया अछि। पटकथाक अन्तिम दृश्य विवाहक कागज थाना पहुँचल रहबाक सूचना दैत अछि; ओकर आधारपर कथानक विवाहकेँ सम्पन्न मानैत अछि। पाठ स्वयं सम्पूर्ण वैवाहिक प्रक्रिया नहि देखबैत, तेँ कागजक प्रकृति वा अपनाओल विधिक मार्गक विशिष्ट अनुमान नहि कयल जा सकैत।

रचनाक प्रकाशनसँ पहिने 'लता सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य' निर्णयमे सर्वोच्च न्यायालय बालिग व्यक्तिक इच्छानुसार विवाह करबाक स्वतन्त्रता आ जातिगत धमकी-विरोधी संरक्षणक पक्ष स्पष्ट कयने छल। एहि दृष्टिसँ किशन आ गीताक अधिकारक तर्क ओहि समय उपलब्ध न्यायिक चिन्तनसँ मेल खाइत अछि। आरो महत्त्वपूर्ण ई जे न्यायालयक विचार विवाह-चयनकैँ केवल पारिवारिक विवाद मानय सँ इनकार करैत अछि; धमकी आ हिंसा सार्वजनिक विधिक प्रश्न बनैत अछि।

पछातिक 'शक्ति वाहिनी बनाम भारत संघ' निर्णय सामाजिक सम्मानक नामपर बालिग व्यक्तिक वैवाहिक विकल्प रोकबाक अवैधताकैँ विस्तारसँ प्रतिपादित करैत अछि। ई २०१८क निर्णय रचनाक कालपछातिक सन्दर्भ अछि—एकरा २०१३क लेखकक प्रत्यक्ष प्रेरक स्रोत नहि, अपितु आजुक आलोचनात्मक पाठकैँ स्पष्ट करयवला न्यायिक आलोक बुझबाक चाही। गीताक सार्वजनिक कथन आ जमादारक हस्तक्षेप एहि व्यापक संवैधानिक प्रश्नक नाट्य-रूप प्रस्तुत करैत अछि: समुदाय अपन सम्मानक अर्थ स्वयं बना सकैत अछि, मुदा ओहि नामपर अन्य व्यक्तिक शरीर आ निर्णयपर दण्डकारी अधिकार स्थापित नहि कऽ सकैत।

तथापि राज्यक उपस्थिति मात्रसँ समाज बदलि जायत—एहि आश्वासनकैँ आलोचनात्मक ढंगसँ देखब आवश्यक अछि। जमादारक एक चेतावनीपर पंचक माथ झुकि जाइनाइ आ धनेसरक तत्काल परिवर्तन रचनाक इच्छित नैतिक फल दैत अछि। असल सामाजिक तनावक दीर्घकालीन रूप—प्रतिशोध, बहिष्कार, सुरक्षा, जीवन-निर्वाह—नाटकक सीमासँ बाहर रहि जाइत अछि। ई अभाव रचनाक विधिक पक्षकैँ असत्य नहि बनबैत; ई ओकर नाटकीय समाधानकैँ अपेक्षाकृत सरल अवश्य बनबैत अछि।

१०. नाट्य-गठनक शक्ति आ अन्तर्विरोध

नौ दृश्यक क्रम उद्देश्यपूर्ण अछि: अफवाह आ घरेलू टिप्पणी, भीड़क निर्माण, प्रेमी-युगलक भय, गीताक संज्ञान, सहयोगक खोज, पिताक दमन, घरेलू बन्दीसँ

मुक्ति आ सार्वजनिक हस्तक्षेप। एहि अनुक्रममे तनावक फैलाव सफलतापूर्वक रचल गेल अछि। अरस्तूक कथानक-सम्बन्धी विचारमे घटनाक परस्पर आवश्यक वा सम्भाव्य सम्बन्धक महत्त्व पर जोर अछि; एहि कसौटीपर प्रारम्भिक दृश्यसभक कारण-परिणाम क्रम अधिक सघन देखाइत अछि।

सभसँ तीक्ष्ण दृश्य सहदेवक घरमे घटैत अछि। किशनक अधिकार-बोध आ पिता सहदेवक आशंकाबीच कोनो आसान समाधान उपस्थित नहि अछि। सहदेव कानूनक विरोध करैत नहि, कानूनी अधिकारक सामाजिक असुरक्षा बतबैत छथि। एहि तरह पात्रक कथनमे अनुभूतिक जटिलता अछि। दोसर प्रभावकारी क्षण गीताक घरबन्दी अछि, जतय पितृसत्ता केवल भाषण नहि, केबाड़क भौतिक अवरोध बनि जाइत अछि। आठम दृश्य ओहि अवरोधकेँ छोट बालकक मददसँ तोड़ैत अछि; प्रतिरोधक सामाजिक विस्तारक सुन्दर दृश्य-कल्पना एतय उपस्थित अछि।

कमजोरीक केन्द्र मुख्यतः ओ घटनासभ अछि जे नाटकीय रूपसँ घटबाक बदला सूचनाक रूपमे पहुँचा देल जाइत अछि। मास्टर साहेबक सहयोगसँ विवाहक औपचारिकता कोना सम्पन्न भेल, पंचायतमे प्रेमी-युगलकेँ कोना पकड़ल गेल, गीताक पूर्व प्रेम-स्मृतिक घटनाक्रम की छल—एहि प्रश्नसभक उत्तर दृश्य-विस्तार नहि पबैत अछि। विशेषतः पाँचम दृश्य 'निर्देशानुसार' कही खुलल सम्भावनाकेँ विकसित नहि करैत अछि। एहि कारणे नाटकीय सम्पूर्णता आ दृश्य-आधारित प्रमाणक बीच दूरी रहि जाइत अछि।

अन्तिम दृश्य न्यायोचित परिणाम प्रस्तुत करैत अछि, मुदा चरम संघर्षमे रचनाक सभ प्रमुख संस्थागत शक्ति एकसाथ उपस्थित भऽ जाइत अछि: पंचायत, शिक्षित स्त्री, शिक्षक आ पुलिस। एहन संकुचन लघु पटकथाक परिमाण-सापेक्ष बोधगम्य अछि; तथापि पूर्वतैयारीक अभावसँ पुलिसक आगमन आकस्मिक अनुभव होइत अछि। धनेसरक अन्तिम आशीर्वाद कथा-संकेत रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर अन्तःपरिवर्तनक क्रम दृश्यरूपमे पर्याप्त अर्जित नहि अछि।

एहि सीमासभकेँ मानलापर रचनाक उपलब्धि घटैत नहि, उलटि स्पष्ट होइत अछि। 'पंचैती' घटनाक सामाजिक केन्द्रकेँ सही पहिचानैत अछि: जातिगत वर्चस्व केवल धारणामे नहि, भीड़, धमकी, अपमानक रस्म आ निजी आवागमनपर रोकमे मूर्त होइत अछि। नाटक एहि मूर्त रूपसभकेँ कम शब्दमे मंचपर आनैत अछि। एकर शिल्पगत चुनौती अछि जे जीवनक बहुवचनता—विशेषतः ललिताक अनुभव—ओहि तीव्र तर्कक पाछाँ नहि छूटय।

११. निष्कर्ष : प्रतिरोधक नाट्यभाषा आ ओकर अधूरापन

राजदेव मण्डलक 'पंचैती'क केन्द्रीय उपलब्धि ई अछि जे ओ प्रेम-विवाहक व्यक्तिगत प्रसंगकेँ सामाजिक न्याय आ लोक-अधिकारक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि। शीर्षकक अन्तर्निहित व्यंग्य, चबुतराक सत्ता-संकेत, जातिगत प्रतिष्ठाक हिंसक शब्दावली, धनेसरक घरबन्दी, गीताक साइकिल-यात्रा आ सामुदायिक दण्डक समक्ष ओकर सार्वजनिक प्रतिवाद—ई सभ मिलि एकटा सघन नाट्य-परिदृश्य रचैत अछि। गीता शिक्षित स्त्रीक प्रतिरोधक सक्रिय रूप छथि; मास्टर साहेब आ बालकक सहयोग देखबैत अछि जे समाजक भीतरहिसँ अन्यायक विरोधक रास्ता निकलि सकैत अछि।

रचना जखन प्रेमक अधिकारक पक्षमे ठाढ़ होइत अछि तखन ओ मात्र निजी भावना नहि, व्यक्ति-स्वायत्तताक नैतिक प्रतिष्ठा व्यक्त करैत अछि। आंबेडकरक जाति-विरोधी प्रतिपादन, स्त्री-नियन्त्रणक सामाजिक अध्ययन तथा भारतीय न्यायिक विचारक सन्दर्भमे एहि अभिप्रायक व्यापक अर्थ खुलैत अछि। मुदा कोनो रचनाक सामाजिक लक्ष्यक प्रशंसा ओकर प्रत्येक शिल्पगत निर्णयक समर्थन नहि अछि। ललिताक मौन, निर्णायक घटना-दृश्यक अनुपस्थिति, अन्तिम समाधानक आकस्मिकता आ पिताक शीघ्र परिवर्तन गम्भीर आलोचनात्मक प्रश्न बनल रहैत अछि।

अन्ततः 'पंचैती'केँ एहन लघु पटकथाक रूपमे मूल्यांकित कयल जा सकैत अछि जे ग्रामीण न्याय-दावाक भीतर निहित अन्याय उजागर करबाक साहस राखैत अछि। ओ जातिगत हिंसाक समक्ष वैधानिक आ नैतिक प्रतिरोधक स्पष्ट पक्ष लैत अछि, मुदा

प्रतिनिधित्वक दृष्टिसँ अजस्र सम्भावना अपूर्ण छोड़ि दैत अछि। एहि द्वैतमे रचनाक वास्तविक साहित्यिक महत्त्व निहित अछि—ई प्रश्नक समाधानक घोषणा करैत-करैत पाठककेँ ओहि अनुत्तरित प्रश्नसँ सेहो साक्षात्कार करबैत अछि जे पीड़ित स्त्रीक अपन स्वरकेँ सार्वजनिक निर्णयक केन्द्रमे कोना आनल जाए।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव. पंचैती (लघु पटकथा). प्रथम संस्करण. दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१३।

Ambedkar, B. R. Annihilation of Caste. 1936. पाठ उपलब्ध: Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Volume 1, Government of Maharashtra, 1979; Columbia Universityक सम्पादित पाठ, अनुच्छेद २०(५). https://ccnmtl.columbia.edu/projects/mmt/ambedkar/web/section_20.html

Aristotle. Poetics. अध्याय ७. Translated by Ingram Bywater, 1909. Perseus Digital Library. https://beta.perseus.tufts.edu/urn:cts:greekLit:tlg0086.tlg034.bywater1909-eng1:7/

Brecht, Bertolt. “A Short Organum for the Theatre” (1948). In Modern Theories of Drama: A Selection of Writings on Drama and Theatre 1850-1990, edited by George W. Brandt, 232-246. Oxford: Oxford University Press, 1998. https://doi.org/10.1093/oso/9780198711407.003.0038

Chakravarti, Uma. “Conceptualising Brahmanical Patriarchy in Early India: Gender, Caste, Class and State.” Economic and Political Weekly 28, no. 14 (3 April 1993): 579-585.

Chatman, Seymour. Story and Discourse: Narrative Structure in Fiction and Film. Ithaca: Cornell University Press, 1978.

भारत सरकार. The Special Marriage Act, 1954 (Act No. 43 of 1954). India Code. https://www.indiacode.nic.in/indiacode/handle/123456789/1387

भारतक सर्वोच्च न्यायालय. Lata Singh v. State of U.P., (2006) 5 SCC 475; निर्णय ७ जुलाई २००६। https://indiankanoon.org/doc/1364215/

भारतक सर्वोच्च न्यायालय. Shakti Vahini v. Union of India, (2018) 7 SCC 192; निर्णय २७ मार्च २०१८। https://indiankanoon.org/doc/92846055/

अध्याय 8

त्रिवेणीक रंग : घर, वर्ग आ भयक आख्यान

राजदेव मण्डलक 'रूसल बौआ', 'दोख केकर' आ 'डरक नदी'क विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सारांश

राजदेव मण्डलक 'त्रिवेणीक रंग'क तीन कथा—'रूसल बौआ', 'दोख केकर' आ 'डरक नदी'—घरक परिचित परिवेशकेँ सामाजिक अन्तर्विरोधक तीव्र रंगमंच बनबैत अछि। पहिल कथामे मेला आ नव वस्त्रक आकांक्षा आर्थिक विभाजनकेँ बाल-दृष्टिसँ उद्घाटित करैत अछि; दोसर कथामे सासु-पुतोहुक तनाव, गर्भहानि आ मातृत्वक पीड़ाकेँ कथा-भीतर-कथाक विन्याससँ नैतिक प्रश्न बनाओल गेल अछि; तेसर कथामे स्वप्न, वृद्धावस्था आ साँपक छोड़ल खोलक सहारे परिवारक भयपूर्ण संरचना उघड़ैत अछि। प्रस्तुत अध्ययन घटनाक सार कहलासँ आगाँ बढ़ि कऽ कथक-स्थिति, संवाद, समापन, स्त्री-अनुभव, वर्गीय दूरी आ प्रतीकक सम्बन्धमे तर्क विकसित करैत अछि। तीनू कथाक सामर्थ्यक संग-संग तिनकर समाधानक वैचारिक सीमा सेहो देखाओल गेल अछि: बाल-मेधाक भरोसे आर्थिक विषमता समाप्त नहि होइत, मातृत्वक महिमाकरण स्त्रीक असहमतिकेँ दबा सकैत अछि, आ भयक पहचान ओकर सामाजिक कारणक निवारण नहि अछि। एही द्वन्द्वमे ई कथासभक आलोचनात्मक महत्त्व निहित अछि।

बीजशब्द: राजदेव मण्डल; त्रिवेणीक रंग; मैथिली विहनि कथा; वर्गीय विषमता; पारिवारिक सत्ता; मातृत्व; स्वप्न; आख्यानशास्त्र।

१. कथासाहित्यक परिचित संसारमे असुविधाजनक प्रश्न

लघु कथा अपन आकारसँ नहि, चयनक अनुशासनसँ प्रभावी होइत अछि। एकटा क्षण, एकटा टकराहट अथवा एकटा संवादमे एहन दबाव संचित कएल जा सकैत अछि जे नमहर आख्यानक विस्तारो बिना मनुष्यक स्थिति स्पष्ट भऽ जाय। राजदेव मण्डलक 'त्रिवेणीक रंग' एही सम्भावनाक रोचक उदाहरण उपस्थित करैत अछि। शीर्षकमे रंगक उत्सवात्मक बोध अछि, मुदा विवेच्य तीनू कथाक भीतर उत्सवक संग अभाव, आत्मीयताक संग अपमान आ सुरक्षा-बोधक संग भय उपस्थित अछि। बाहरी रूपसँ साधारण लगैत पारिवारिक प्रसंगसभ क्रमशः सामाजिक सम्बन्धक गम्भीर आलोचनामे बदलि जाइत अछि।

संकलनक पहिल संस्करण श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ २०१४ मे प्रकाशित भेल छल। एकरा विहनि आ लघु कथाक संग्रह कहल गेल अछि। वर्तमान विवेचनक पाठाधार 'रूसल बौआ', 'दोख केकर' आ 'डरक नदी' अछि। ताहि कारणेँ निष्कर्ष एही तीन रचनाक निकट अध्ययनपर आधारित अछि; बिना पाठसाक्ष्यक संकलनक आन रचनासभक कथावस्तु अथवा सौन्दर्यविषयक दावा नहि कएल जा रहल अछि। ई सीमा आलोचनाक कमजोरी नहि, प्रमाण आ निष्कर्षक बीच अपेक्षित अनुशासन अछि।

'त्रिवेणी'केँ एतय तीन भिन्न जीवनस्थितिक संयुक्त पाठक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। एक धार आर्थिक विषमता आ बाल-आकांक्षाक अछि; दोसर, परिवारक नैतिक ऋण आ स्त्री-देहपर परम्परागत नियन्त्रणक; तेसर, सामूहिक स्वार्थ आ भविष्यक असुरक्षाक। ई पाठकीय अर्थ-संरचना अछि, लेखकक घोषित रचना-योजनाक प्रमाण नहि। एहन अन्तर राखब आवश्यक अछि, कारण रचनाक अर्थ पाठकक आलोचनात्मक क्रियासँ विकसित होइत अछि, मुदा ओ अर्थकेँ पाठमे भेटैत संकेतक प्रति जवाबदेह रहबाक चाही।

२. रचनाकारक प्रसंग आ आलोचनाक पद्धति

२०१२ मे प्रकाशित एक साक्षात्कारमे राजदेव मण्डल मैथिलीमे आरम्भिक लेखन, प्रकाशन-साधनक अभाव तथा हिन्दीमे साहित्यिक सक्रियताक कारणपर विचार करैत छथि। लेखकक कहबामे मातृभाषाक प्रति लगाव आ प्रकाशनक व्यावहारिक कठिनाइ दुनू एक संग भेटैत अछि। ई आत्मकथ्य रचनाकारक साहित्यिक यात्राक प्रसंग बुझबामे उपयोगी अछि, मुदा एकरे आधारपर कथा-पात्रक प्रत्येक कथनकेँ लेखकक निजी विचार मानि लेब समीक्षात्मक त्रुटि होएत। कथाक कथावाचक, पात्र आ ऐतिहासिक लेखक तीन पृथक् स्तर अछि।

एहि अध्ययनमे कथाक क्रम, कथनक स्थिति, पात्रक दृष्टि तथा समापनक प्रभावपर विशेष ध्यान देल गेल अछि। जेरार जेनेटक आख्यान-विमर्शक समय, दूरी आ कथन-स्तर सम्बन्धी विवेचन तथा सुसन एस. लान्सरक दृष्टिबिन्दु-विषयक विश्लेषण एहि पाठक औजार बनैत अछि; प्रयोग उदाहरणक अनुरूप अछि, कोनो सिद्धान्तक यान्त्रिक आरोपण नहि। संगहि संवादक भीतर विभिन्न सामाजिक स्थानसँ उठैत स्वर बुझबा लेल बाख्तिनक बहुस्वरता सम्बन्धी चिन्तन प्रासंगिक अछि। आरम्भसँ अन्त धरि कथा कतए सहानुभूति रचैत अछि आ कतए स्वयं अपन नैतिक दावाक विरोधाभास उजागर करैत अछि, से मूल प्रश्न अछि।

३. 'रूसल बौआ': मेलाक उजासमे अभावक अन्हार

३.१ वस्त्र, मेला आ सामाजिक दूरी

'रूसल बौआ'क आरम्भ दुर्गापूजाक मेलासँ होइत अछि। घर-घर मेवा-मिठाइ आ नवा पहिरनक तैयारी; बालकसभक मुँहपर उत्साह; मिलनक सामाजिक अवसर—ई सभ मिलि उत्सवक सामूहिक दृश्य बनबैत अछि। मुदा कथाक केन्द्रमे प्रश्न अछि: जे बच्चा अपन मनक उत्सवमे सहभागी होमय चाहैत अछि, ओकर परिवार जँ वस्त्रक साधारण माँगो पूरा नहि कऽ सकय तँ उत्सवक समानता कतए रहि जाइत अछि?

बेचूकेँ अपन संगी अमितक नवा पैंट-सर्ट देखिकऽ दुःख होइत छैक। मेला एतय धार्मिक पृष्ठभूमिसँ बेसी उपभोग आ सामाजिक तुलना केर सार्वजनिक मंच बनि जाइत अछि।

फेकनक पहिल चिन्ता बेटा कतय अछि, भूखल त नहि अछि, एहि प्रश्नसँ व्यक्त होइत अछि। ओ बालकक तत्कालिक आवश्यकताकेँ देखैत अछि; पत्नी ओकर रूसेबाक कारण आ अमित द्वारा कएल जा रहल चिढ़ेबाक प्रसंग सोझाँ आनैत अछि। ममताक ई दू स्वर परस्पर विरोधी नहि, वरन् अभावक दबावमे पड़ल एक्के परिवारक दू व्याकुल प्रतिक्रिया अछि। फेकनक हाथमे पाय नहि अछि; ओकर हताशा उदासीनतासँ नहि, संसाधनक कमी आ अपन जिम्मेवारी पूरा नहि कऽ सकबाक विवशतासँ उत्पन्न होइत अछि।

अमितक बापक सरकारी नौकरी, अधिक जमीन आ आर्थिक हैसियतक उल्लेख वस्त्रक तात्कालिक प्रश्नकेँ संस्थागत असमानतासँ जोड़ि दैत अछि। ‘बड़का लोक’ नामक सामाजिक संज्ञा सम्पत्तिक संग प्रतिष्ठाकेँ सेहो संगहि लऽ चलैत अछि। बेचू एकरा सहजतासँ स्वीकार नहि करैत अछि। ओकर प्रश्नक मर्म ई अछि जे कद-काठी, पढ़ाइ अथवा खेलमे अपनाकेँ हीन नहि पबैत ओ केवल परिवारक धनक आधारपर किएक छोट मानि ले? एहि बिन्दुपर कथा जन्मसँ प्राप्त हैसियत आ अर्जित क्षमताक बीच अन्तर्विरोध खोलैत अछि।

३.२ श्रमक गरिमा आ अपमानक संरचना

फेकनक कथनमे रौदी आ दाहीक बेराबेरी आगमन, दिन-रातिक परिश्रम, कम उपज, रोगाइत देह आ बाहर कमाए जाइबाक कठिनाइ समटि जाइत अछि। ई विवरण गरीब गृहस्थक परिश्रमकेँ आलस्यक विपरीत स्थापित करैत अछि। ओकर संकट व्यक्तिगत अकर्मण्यताक नहि, श्रम आ प्रतिफलक बीच असमान सम्बन्धक अछि। खेत, मौसम, स्वास्थ्य आ घरेलू खर्च—चारू समस्या एक-दोसरसँ गाँथल अछि। बच्चा पढ़ाओल जा रहल अछि, मुदा पढ़ाइ-सँ जुड़ल खर्च परिवारक बचल साधनकेँ आरो संकुचित करैत अछि।

पत्नी जखन फेकनकेँ ‘कोनो करमक लोक नै छी’ कहैत अछि, तखन शब्द आर्थिक अपमानक हथियार बनि जाइत अछि। ई वाक्य पुरुषक रोजगार-संकटकेँ ओकर सम्पूर्ण मनुष्यत्वक विफलता घोषित करबाक रूप धारण करैत अछि। कथावाचक ओकर भीतर उठल पीड़ाकेँ प्रस्तुत करैत अछि: अपमान केवल कानसँ सुनल वाक्य नहि, श्रमक अवमूल्यनक अनुभव अछि। तथापि पत्नीकेँ सरलतासँ निर्दयी घोषित करब उचित नहि। ओकर कथनमे अपन ‘सऽख-सेहता’ जरा गेलाक स्मृति आ बच्चाक भविष्य बिगड़बाक भय सेहो समाहित अछि। परिवारक भीतर तिक्त भाषा प्रायः ओहि अभावक माध्यम बनैत अछि जकर वास्तविक कारण परिवारसँ बाहर पसरल रहैत अछि।

कथाक सर्वाधिक प्रभावी मोड़ बेचूक श्रवणशील उपस्थितिसँ बनैत अछि। बालक ओझराइत बहसक बाहर नहि अछि; ओ अढ़मे ठाढ़ सभ सुनि रहल अछि। ओकर दयालु प्रतिवचन—बाबूकेँ नहि कानबाक आग्रह—कथाक करुणा-व्यवस्थाकेँ बदलि दैत अछि। पिता जकरा लेल वस्त्र नहि जुटा सकल, वएह पुत्र पिताकेँ सांत्वना दैत अछि। कथाक भावनात्मक केन्द्र वस्त्रप्राप्तिसँ हटि कऽ परस्पर मानवीय पहचानपर आबि जाइत अछि।

३.३ बालकक उत्तर: आशा अथवा प्रतिस्पर्धाक पुनरावृत्ति?

बेचू निश्चय करैत अछि जे ओ परीक्षामे अमितसँ बेसी अङ्क आनिकऽ उत्तर देत। ई प्रतिरोध ओकर आत्मसम्मानक उद्घोषक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। पिता-पुत्रक आलिंगन आ माताक मुस्की पराजयक क्षणकेँ आशाक क्षणमे बदलि दैत अछि। कथाक अन्तिम भाव—क्षणभरिक लेल नमहर-छोट आ ऊँच-नीचक भेद एके रंग बुझेनाइ—शीर्षकक रंग-बोधसँ सेहो संवाद करैत अछि। मुदा ‘क्षणभरिक लेल’क सीमा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: अनुभवक क्षणिक समतासँ आर्थिक ढाँचा स्वतः समाप्त नहि भऽ जाइत अछि।

एतय आलोचनात्मक प्रतिप्रश्न उठैत अछि। संगीक नवा वस्त्र देखाकऽ उपहास करबाक प्रतिकार बेचू सेहो परीक्षा-परिणामसँ संगीकेँ 'बुड़बक' बनएबाक भाषामे करैत अछि। एतय आत्मसम्मानक पुनर्स्थापना अछि, मुदा प्रतियोगिताक तर्क पुरने ढंगसँ जीवित अछि। शिक्षाक अपेक्षा उपयोगी सामाजिक पूँजी अछि, तथापि शिक्षा अकेले जमीन, वेतन आ मौसमजन्य क्षतिक अन्तर नहि भरि दैत अछि। कथा अपन संक्षिप्त आकारमे ई आर्थिक समाधान नहि दैत; ओकर उपलब्धि एतबे अछि जे ओ निर्दय तुलना-बोधक ठाम पिता-पुत्रक सह-अनुभूति स्थापित करैत अछि। ई उपलब्धि वास्तविक अछि, मुदा संरचनागत प्रश्न खुल्ले राखैत अछि।

४. 'दोख केकर': दोषारोपणसँ स्मृति धरि

४.१ घरेलक बहसक नैतिक असमानता

'दोख केकर'क आरम्भ रात्रिक चुप्पी आ पति-पत्नीक जागरणसँ होइत अछि। दिनेश पत्नीकेँ भोजन करबाक आग्रह करैत अछि; पत्नी सासुक गारि-बातक शिकायत करैत छथि आ पतिक निष्क्रियताकेँ सेहो प्रश्नांकित करैत छथि। प्रारम्भिक संवादमे दुइटा कष्ट बराबर स्पष्ट अछि: घरक वृद्ध माताक प्रति पुत्रक दायित्व आ नव-परिवारमे सम्मान चाहनिहार पुतोहुक आत्मसम्मान। एकरे केओ सही-केओ गलतक सरल न्यायमे बदलि देब कथाक जटिलता घटा देत। शीर्षक 'दोख केकर' कारण आ जिम्मेवारीक निर्णय पाठकसँ माँगैत अछि।

दिनेश तुरन्त प्रतिवाद नहि करैत अछि। ओ एकटा स्त्रीक पुरान कथा सुनबैत अछि। एहि सुनाएल वृत्तान्तमे पहिने पति आ ससुरक उपेक्षा, अपर्याप्त दहेजसँ उपजल तिक्तता, गर्भक बारम्बार क्षति, चरित्र आ देहपर दोषक लादल व्यवस्था, आ उपचारक खोज अछि। जे स्त्री आरम्भमे पति-ससुरक दृष्टिमे प्रिय रहैत छलीह, विपत्तिक समय ओही परिवारमे अनचाही बनि जाइत छथि। कथा एहि परिवर्तनकेँ व्यक्तिगत स्वभावक उतार-चढ़ाव मात्र नहि, स्त्रीक सामाजिक मूल्यकेँ मातृत्वक परिणामसँ जोड़ि देबाक अन्याय रूपमे पढ़बाक अवसर दैत अछि।

महत्त्वपूर्ण अछि जे पति-पुत्रक बातचीतमे पुनः-पुनः “दोष”क भाषा लौटैत अछि। सासु-पुतोहुक एखुनका वादमे दोषक प्रश्न जतेक तीव्र अछि, दिनेशक सुनाओल पुरान जीवनमे सेहो स्त्रीकेँ दोषी ठहरेबाक तत्परता ओतबे कठोर छल। कथाक भीतर एक प्रकारक नैतिक प्रतिध्वनि उत्पन्न होइत अछि: वर्तमानमे स्त्री आ स्त्रीक टकरावक नीचाँ पुरान पीढ़ीपर भेल पुरुषक सत्ता-सम्बन्धी अन्याय दबल अछि।

४.२ गर्भहानि, दहेज आ वनवासक आलोचनात्मक पाठ

दिनेशक कथामे पाँचम मासक आसपास गर्भहानि पुनरावृत्त होइत अछि। दुखक घड़ीमे स्त्रीकेँ उपचार, सहचर्य आ विश्रामक अधिकार भेटबाक चाही, मुदा ओकरा अपन देहक असफलताक एकमात्र कारण मानल जाइत अछि। कथाकारक “भातक दुख नै बातक दुख” भावात्मक सूत्र अछि: अपमानित करैत वचनक आघात भोजनक अभावसँ भिन्न, मुदा ओहिसँ कम तीव्र नहि। एहि प्रसंगमे स्त्रीक मन आ शरीर अलग-अलग विषय नहि रहैत; निरन्तर तनाव हुनकर शारीरिक कष्टकेँ बढ़बैत चित्रित होइत अछि।

नैहरमे पहुँचल स्त्रीकेँ छाँहक अनुभव होइत अछि। ई बिम्ब स्त्रीक सामाजिक भूगोलक सूक्ष्म टिप्पणी अछि: ससुरार कर्तव्यक स्थान होइतहुँ असुरक्षा देलक, जखनकि नैहर संकटमे आश्रय बनल। माए-बाप उपचारक उपायसभ करैत छथि। एक साधुक परामर्शपर गर्भवती बेटीकेँ घर-अँगनासँ अलग आमक गाछीमे रहबाक, अपन भोजन स्वयं बनएबाक आ बोलचाल बन्द रखबाक कठोर नियम स्वीकार कराओल जाइत अछि। ओ एक प्रकारक वनवास भोगैत छथि: कुशक ओछाइन, मौसमक मार, जीव-जंतुक डर आ रातिक लम्बा एकान्त।

एहि प्रसंगक साहित्यिक बल विशिष्ट भौतिक विवरणमे अछि। दोरासँ देहपर घाव, माटिपर सुतनाइ आ रातिक मध्येमे बेटीकेँ पाँजमे भरि सुताबए अबैत माए—ई सभ विवरण पौराणिक त्याग-कल्पनाकेँ देहक वास्तविक वेदनासँ जोड़ैत अछि। माएक गुप्त आगमन कथाक सभसँ कोमल प्रतिपक्ष अछि: जे नियम कथित कल्याणक लेल

बनाओल गेल, ओ नियम स्वयं बेटीकेँ मानव-सान्निध्यसँ वञ्चित करैत अछि; माए एहि अमानवीयताकेँ अपूर्ण रूपेँ तोड़ैत छथि। कथाकार एहन विधिक विस्तृत चित्रण करैत छथि जे पाठकक ध्यान मातृत्वक उत्सवसँ पहिने मातृत्वपर लादल यातना दिस जाए।

वनवासक बाद बेटाक जन्म होइत अछि आ परिवारमे स्नेह फेर लौटैत अछि। घटनाक क्रम एहि विश्वासकेँ पात्रसभक जीवनमे प्रभावशाली बनबैत अछि; मुदा साहित्यिक पाठसँ तपस्या अथवा एकान्तवासकेँ गर्भहानिक चिकित्सकीय उपचार सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। वास्तविक आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे स्त्रीक मानवीय सम्मान पुत्र-जन्मक बादे किएक पुनर्स्थापित होइत अछि। कथा परिणामक सुख देखबैत अछि, तखन ओही सुखक पाछाँ दबा गेल शर्तबद्ध स्वीकृतिक समस्या पाठकक सोझाँ छोड़ि दैत अछि। एतय लेखकक करुणा आ कथामे जीवित सामाजिक मान्यता बीच एक तनाव स्पष्ट देखाइत अछि।

४.३ कथा-भीतर-कथा आ रहस्योद्घाटन

दिनेशक सुनाओल जीवनकथा सुनैत पुतोहु आरम्भमे नहि जनैत छथि जे वर्णित स्त्री हुनकर अपन सासु छथि आ ओ बेटा दिनेश स्वयं छथि। अन्तमे ई सम्बन्ध स्पष्ट होइतहि कथाक स्वरूप बदलि जाइत अछि। पुरान घटनाक अनामित प्रस्तुति वर्तमान बहसकेँ क्षणभरि थामि दैत अछि; पहचानक उद्घाटन श्रोता-पात्रक नैतिक कल्पनाक सहारे काम करैत अछि। जेनेटक कथन-स्तर सम्बन्धी शब्दावलीमे देखी तँ मुख्य संवादक भीतर दोसर स्तरक कथन प्रवेश करैत अछि आ अन्तमे ओ स्तर वर्तमानक चरित्र-संबन्धसँ जुड़ि जाइत अछि।

अन्तिम मौनक बाद दिनेश आ हुनकर पत्नीक बीच निकटताक संकेत अछि। संवादक कठोरता भावनात्मक संचारमे बदलि जाइत अछि; कथाकार झगड़ाक न्यायिक निर्णय सुनाबए नहि लगैत छथि। मुदा एहि समाधानमे एक अनिवार्य सावधानी अछि: सासुक अतीतक दुःख आजुक पुतोहुक शिकायतकेँ स्वतः असत्य नहि बनबैत अछि। माताक सहल यातनाक आधारपर पुत्रवधूक वर्तमान पीड़ा चुप कराएब

एक अन्य अन्याय होएत। कथा जँ करुणाक विस्तारक रूपमे पढ़ल जाए तँ ओ सबहक दुख देखबाक शिक्षा दैत अछि; जँ केवल पुतोहुक समर्पणक उपदेश बनाओल जाए तँ स्त्रीक दू पीढ़ी फेर एक-दोसरक विरुद्ध ठाढ़ भऽ जाइत अछि। एही दोधारी सम्भावनामे एकर आलोचनात्मक सार्थकता अछि।

५. 'डरक नदी': स्वप्नमे परिवार, जागरणमे असुरक्षा

५.१ स्वप्नक फ्रेम आ वृद्धक उपेक्षा

'डरक नदी'क आरम्भ सरिताक निद्राहीनतासँ होइत अछि। निद्रा लगिते ओ स्वप्नमे मूससभक एकटा परिवार देखैत छथि। बिलक मुहपर साँप होएबाक आशंका परिवारक भीतर घबराहट फैला दैत अछि। बालक, पोता-पोती, काका-भतीजा आ बुजुर्ग—सभ भयक एक्के प्रसंगमे उपस्थित छथि, मुदा प्रत्येकक प्रतिक्रिया अलग अछि। बूढ़ मूसक अनुभवी छवि पहिले आदरणीय अछि; संकट बढ़िते ओकरा 'सबसे पहिले' जाँचक लेल पठएबाक दबाव उत्पन्न होइत अछि। पारिवारिक सलाह शीघ्रहि बलिदानक अनुशंसामे बदलि जाइत अछि।

बूढ़ मूस कहैत अछि जे संसारमे एहन स्थान नहि जतए डर पीछा नहि करत, जीवबाक लेल संघर्ष आवश्यक अछि। ओकर कथन बुजुर्गक अनुभवक दाबी अछि। मुदा पोता ओकरा अपन विगत वीरताक कहानी याद दियाबैत अछि आ परीक्षाक लेल उकसाबैत अछि। एहि संवादमे पीढ़ीक सम्बन्धक दुइटा रूप एकसंग देखाइत अछि: अनुभवसँ लाभ उठेबाक इच्छा आ अनुभवधारी देहकेँ जोखिमक मोहरा बना देबाक प्रवृत्ति। बुजुर्गक सलाह आदरणीय ओहि धरि अछि जाधरि ओ बिना मूल्य परिवारक काम आबैत अछि; स्वयम् रक्षा करबाक बेला ओ बोझ ठहरेबाक शिकार भऽ जाइत अछि।

परिवारक सदस्य अलग-अलग तर्क दैत छथि। केओ कहैत अछि जे वृद्धक उमेर बीति चुकल, केओ ओकरा भार मानैत अछि, केओ भावुकता देखबैत अछि, मुदा निर्णय अन्ततः ओकरा खतरा दिस धकेलबाक अछि। ई खुलल क्रूरताक एकरूप प्रदर्शन

नहि; सभसँ तीक्ष्ण बात अछि जे उपयोगितावादी सोच अपनाकँ परिवारक संरक्षणक नैतिक भाषामे प्रस्तुत करैत अछि। कथामे सामाजिक परित्यागक समस्या बिनु कोनो उपदेशक पात्रसभक कथोपकथनसँ उभरैत अछि। बूढ़ मूसक 'हम भार बिनि गेलियौ'क पीड़ा वृद्धावस्थाक आर्थिक आ भावनात्मक असुरक्षाकँ केन्द्रमे आनैत अछि।

५.२ साँपक खोल: देखल भय आ वास्तविक संकट

दबावक बीच बूढ़ मूस काँपैत-काँपैत बिल लग जाइत अछि। ओकर शारीरिक भय—डगमग चाल, नियन्त्रण टूटब, झाँकुरमे लुकाएब—कथाकँ केवल नीति-कथा नहि रहए दैत; पात्रक देहमे डरक व्यावहारिक उपस्थिति बनैत अछि। जखन ओकरा बुझाइत अछि जे बिल लग जे वस्तु साँप लगैत छल, से साँपक छोड़ल खोल अछि, तखन हास्य आ राहतक क्षण उत्पन्न होइत अछि। मुदा एक प्रश्न तुरन्त राहतकँ भंग करैत अछि: असल साँप तखन कतय गेल? वस्तुक सही पहिचान असुरक्षाक अन्त नहि करैत; बरु अदृश्य संकटक सम्भावना बढ़बैत अछि।

एही ठाम कथाक शिल्प महत्त्वपूर्ण बनि जाइत अछि। एक भय दृश्य वस्तुसँ आरम्भ भेल छल; ओकर झूठ साबित होइतहि भय अनुपस्थित वस्तुक कल्पनामे प्रवेश करैत अछि। प्रारम्भमे साँपक रूप अछि, अन्तमे साँपक सम्भावित उपस्थिति। ई संक्रमण बतबैत अछि जे संकट केवल देखल वस्तुसँ नहि, सम्बन्धक भीतर जमल अविश्वाससँ सेहो जन्मैत अछि। बूढ़ मूसकँ सुरक्षित होएबाक भरोसा देबाक बदला परिवारक सदस्य ओकरा धकियाबैत बिल दिस दौड़ि पड़ैत अछि; भौतिक आतंकसँ उत्पन्न अराजकता सामाजिक हिंसामे बदलि जाइत अछि।

साँपक 'केँचुआ' एकटा सटीक प्रतीक अछि। खोल देहक पुरान आकारक चिह्न अछि, मुदा ओ स्वयं जीव नहि। पात्रसभ रूप आ यथार्थक बीच अन्तर देरिसँ बुझैत अछि। तथापि प्रतीकक अर्थ एतबे नहि जे भ्रम दूर कएलासँ समाधान भेटत: स्वप्नक घटना संकेत करैत अछि जे कखनो-कखनो भ्रमक निरसन नब अनिश्चितताक द्वार

खोलैत अछि। ई अन्तिम अनिश्चितता कथा कैँ उपदेशात्मक पशु-कथासँ अलग करैत अछि। कथाकार पाठककेँ एकटा स्थिर, सन्तोषजनक उत्तर नहि दैत छथि।

५.३ सरिताक जागरण आ स्त्रीक भविष्य-भय

स्वप्न टूटिते सरिता देहपर एकटा हाथक स्पर्श अनुभव करैत छथि; ई हुनकर पतिक हाथ अछि। एहि क्षण हुनका अपन धिया-पुताक बढ़ैत संख्या आ बढ़ैत आवश्यकताक स्मृति अबैत अछि। एतय कथा अचानक पशु-परिवारसँ मनुष्य-परिवारमे लौटैत अछि। स्वप्नक वृद्ध मूस, जोखिम आ संसाधनक लड़ाइ सीधा मानवीय उपदेश बनि नहि आबैत, वरन् सरिताक भीतर बहैत भयक नदीक रूपमे प्रतिध्वनित होइत अछि। अन्तमे 'बाढ़ि'क बिम्ब सघन होइत अछि: पहिनेसँ बहैत भयमे अकस्मात तीव्रता आबि गेल अछि।

पतिक स्पर्शकेँ सरलतासँ प्रेमक, अथवा केवल हिंसाक, एकमात्र संकेत मानब पाठसँ आगाँ बढ़ि जाएब होएत। रचनामे सरिताक प्रतिक्रिया भयावह स्मृति आ भावी दायित्वक बोझसँ जुड़ल अछि; स्पर्शक संग सन्ततिक निरन्तर वृद्धि-संबन्धी चिन्ता जोड़ल गेल अछि। ताहि कारणेँ एहिमे दाम्पत्यक असमान प्रजनन-दायित्व, घरक साधन आ स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छाक प्रश्न उठैत अछि। मुदा कथा सरिताक मनक अन्तिम निर्णय नहि कहैत; ओ भयक तीव्रता दिखबैत छैक। एहि अव्यक्तताकेँ आलोचनामे बचा कऽ राखब रचनाक खुलेपनक सम्मान अछि।

'रूसल बौआ'मे अन्ततः पिता-पुत्रक आलिंगन भावनिक आश्वासन दैत अछि; 'दोख केकर'मे मौन निकटताक दिशा खोलैत अछि; 'डरक नदी'मे शारीरिक निकटता स्वयं भयक बाढ़िक सहचर बनि जाइत अछि। ई तीन भिन्न समापन पारिवारिक सम्बन्धकेँ एक्के नैतिक सूत्रमे बाँधबाक प्रयासकेँ चुनौती दैत अछि। परिवार कखनो दुख-सहभागिताक स्थल अछि, कखनो कर्तव्य आ स्मृतिक जटिल अदालत, आ कखनो असुरक्षाक स्रोत।

६. कथन-व्यवस्था: दृश्य, संवाद आ अन्तक भार

तीनू कथाक आरम्भ अलग-अलग संवेदनात्मक द्वार खोलैत अछि। 'रूसल बौआ'मे मेला सार्वजनिक आ उज्ज्वल दृश्य अछि; 'दोख केकर'मे निशीथरात्रि आ पतिक भोजनक आग्रह निजी तनावक प्रवेशद्वार अछि; 'डरक नदी'मे स्वप्न अपरिचित जगतमे लऽ जाइत अछि। दृश्य-चयन कथा-समयकेँ सांकेतिक बनबैत अछि। मेला सामाजिक प्रदर्शनक काल; राति अनकहल अपराध-बोधक काल; निद्रा भीतरी अनिश्चितताक काल बनैत अछि। एहि तीन आरम्भक तुलना कथाकारक कथावस्तु चयनमात्र नहि, कथावाचनक नियन्त्रण सेहो देखबैत अछि।

'रूसल बौआ'मे कथावाचक फेकनक विवशता आ बेचूक प्रतिक्रियाक बीच सहानुभूतिक सेतु बनबैत छथि। संवाद कथाक गति निर्धारित करैत अछि; विवरण सीमित रहैत अछि। 'दोख केकर'मे दिनेशक आवाज प्रमुख होइत अछि; ओ वर्तमानकेँ बदलए लेल अतीत सुनबैत अछि। ई कथन नैतिक रूपसँ निष्पक्ष नहि, कारण श्रोता-पत्नीपर ओकर प्रभाव उत्पन्न करब स्वयं कथक-पात्रक उद्देश्य अछि। 'डरक नदी'मे स्वप्नक माध्यमसँ मूससभक संवाद सरिताक अन्तःस्थिति दिस लौटैत अछि। कथकक बदलैत दूरी आ दृष्टिबिन्दु रचनाक अर्थक आधार अछि।

तीनू कथामे अन्तिम मोड़ अछि, मुदा मोड़क स्वर भिन्न। पहिलमे बच्चाक कथन बापकेँ सहारा दैत अछि; दोसरमे कथक-पात्रक पहिचान कथा-भीतरक तथ्यकेँ वर्तमान आचरणक नैतिक प्रश्न बनबैत अछि; तेसरमे स्वप्न भंग भेला पर वास्तविक भय आरो प्रबल होइत अछि। पहिल दू कथाक अन्त भावनिक सामञ्जस्यक ओर बढ़ैत अछि, तेसर स्पष्ट मेल-मिलापक आसरा नहि दैत। एहि विविधताकेँ देखैत 'सबटा कथामे एक्के प्रकारक सुखान्त' सन दावा असंगत होएत।

जेनेटक क्रम, गति आ कथन-स्तरक प्रश्न एहि कथासभमे ठोस रूपँ प्रयोज्य अछि: मेलाक एक दिनमे कृषि-अर्थव्यवस्थाक नमहर संकट संकेतित अछि; दिनेशक कथन वर्तमान रात्रिमे पचीस बरखक स्मृति समेटैत अछि; सरिताक क्षणिक स्वप्न भविष्यक

अनिश्चित कालकेँ खोलि दैत अछि। समयक ई संकुचन आ विस्तार कथाक संक्षिप्त देहमे सामाजिक इतिहासक भार राखैत अछि। सिद्धान्तक महत्त्व एतय पारिभाषिक कौशल देखएब नहि, पाठमे समयक अनुभूति केना बनेल गेल से स्पष्ट करब अछि।

७. लोकभाषा, वाक्य-शक्ति आ सामाजिक स्वर

मण्डलक भाषा दृश्य-निर्माणसँ पहिने सम्बन्ध निर्माण करैत अछि। 'रूसल बौआ'मे घरेलू प्रश्न, मेलाक वस्तुसभक नाम, खेत आ मौसमक उच्चारण, बच्चाक प्रतिप्रश्न—सभ एकटा परिचित लोक-सम्प्रेषणक भाव उत्पन्न करैत अछि। जे शब्द मानक साहित्यिक गद्यक दृष्टिसँ सामान्य लगि सकैत अछि, ओही पात्रक स्वभाव आ सामाजिक स्थिति उजागर करबाक सटीक उपाय बनैत अछि। विशेषतः अभावक वर्णनक बाद फेकनक ऊपर फेंकल एकटा वाक्य समस्त विवरणसँ भारी सिद्ध होइत अछि।

'दोख केकर'मे 'भातक दुख' आ 'बातक दुख'क विरोध मात्र लोकसूक्ति नहि, कथाक अनुभूतिगत तर्क अछि। स्त्रीक मानसिक पीड़ा आ भौतिक कष्ट परस्पर सम्बद्ध अछि, से सहज कथनसँ प्रत्यक्ष होइत अछि। 'वनवास' धार्मिक आख्यानक शब्द होइतहुँ एतय घरक भीतर स्त्रीपर लागू अनुशासनक नाम बनि जाइत अछि; लोकप्रचलित पदक अर्थ परिवारक अनुभवसँ पुनर्निर्मित होइत अछि। एहि बिन्दुपर भाषिक सादगी आलोचनात्मक गहराइ उत्पन्न करैत अछि।

'डरक नदी'मे मूस परिवारक पात्रसभक उच्चारण, चिढ़ेनाइ, कुटिल आश्वासन आ आपसी धकिया-धक्की कथाकेँ नाटकीय बनबैत अछि। बूढ़ मूस आ पोताक बीचक संवादमे आदर, स्वार्थ, व्यंग्य आ धमकी एक्के भाषिक संसारमे उपस्थित अछि। एहन बहुवचनता बाख्तिनक संवाद-विचारसँ जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि: व्यक्ति जे कहैत अछि, से ओकर सामाजिक स्थिति, श्रोता आ आशयक दबावमे बनैत अछि। मुदा ई कथासभ उपन्यासक विस्तृत बहुभाषिक संरचना नहि; ताहि लेल बाख्तिनक अवधारणाकेँ सीमित, कार्यकारी अर्थमे ग्रहण करब अधिक उचित अछि।

एकटा शिल्पगत सावधानी सेहो देखाएब आवश्यक अछि। किछु ठाम कथावाचक घटनाकेँ स्वयं बाजबाक अवसर कम दैत छथि आ अर्थकेँ प्रत्यक्ष नीतिवचनमे कहि दैत छथि। उदाहरणार्थ बूढ़ मूसक संघर्षक सामान्य उपदेश अथवा परिवारक दुःखपर कथकक टिप्पणी पाठकक अर्थ-निर्माणकेँ किछु हद धरि पूर्वनिर्धारित करैत अछि। मुदा पात्र-स्वरक आवेगक कारण कथा पूर्ण रूपेँ उपदेशात्मक नहि होइत। खास कऽ 'डरक नदी'क अन्त कथकक कथित शिक्षा सँ आगाँ बढ़ि कऽ अनुत्तरित भय उपस्थित करैत अछि।

८. वर्ग, लिंग आ पीढ़ी: तीनू कथाक बीच अन्तःसम्बन्ध

पहिल कथामे वर्गीय अन्तर प्रत्यक्ष अछि—जमीन, सरकारी रोजगारी आ उपभोग-क्षमता। दोसरमे सत्ता आर्थिक सूचकांकसँ कम आ लिंग तथा पीढ़ी सम्बन्धी नियमसँ संचालित अछि। तेसरमे परिवारक सदस्य अपन सामूहिक सुरक्षा लेल वृद्धकेँ जोखिममे धकेलैत अछि, आ जागरणमे एक स्त्री भावी गृहस्थी-संकटसँ घेराइत छथि। तीनू कथाकेँ जोड़निहार सूत्र ई अछि जे परिवार समाजसँ पृथक् निष्कलुष क्षेत्र नहि, वरन् ओही समाजक असमानताक पुनरुत्पादन करबाक स्थल सेहो अछि।

पहिल कथामे पिता स्नेह रखैत छथि मुदा आर्थिक सामर्थ्य कम अछि; दोसरमे पुत्र माएक बलिदानक स्मृति रखैत अछि मुदा पत्नीकेँ न्याय दियएबाक प्रश्नकेँ पूर्ण रूपेँ नहि खोलैत; तेसरमे बुजुर्गक प्रति स्नेहक भाषा अछि मुदा आवश्यकता पड़िते ताहि स्नेहक स्थानपर स्वार्थ आबि जाइत अछि। एही अन्तरक कारणेँ परिवारक आदर्शक आलोचना करैत हम सम्बन्धक सम्भावना नकारि नहि रहल छी। मण्डलक पात्र निरपेक्ष दुष्ट अथवा निरपेक्ष पुण्यवान नहि; ओ सभ दूषित सामाजिक परिस्थितिमे प्रेम, असंतोष आ भयक मिश्रण लऽ जीवैत छथि।

स्त्री-पात्रक अध्ययनमे सेहो एकरूपता थोपब अनुचित अछि। बेचूक माय आर्थिक अभावक तिक्त आवाज छथि; दिनेशक पत्नी अपन अपमानक प्रतिकार चाहैत छथि; पीड़ित सासु पुरान समयक असहाय स्त्री छथि; सरिता भविष्यक अनिश्चिततासँ

भयभीत आन्तरिक केन्द्र। चारू स्थिति एक्के 'त्यागमयी नारी'क साँचेमे नहि अटैत अछि। लान्सर द्वारा उठाओल दृष्टि आ वैचारिक स्थानक प्रश्न एतय उपयोगी अछि: कथामे के बाजि सकैत अछि, के दोसरक कथा सुनैत अछि, आ केकर पीड़ा मौन रहि जाइत अछि?

वृद्धावस्था आ बाल्यावस्था सेहो एक-दोसरक विपरीत स्थान मात्र नहि। 'रूसल बौआ'क बालक पिताकेँ सहारा दैत अछि, जखनकि 'डरक नदी'क पोता बूढ़केँ संकटमे धकेलैत अछि। एहि विरोधसँ स्पष्ट होइत अछि जे उम्र स्वयं नैतिकता निर्धारित नहि करैत; सामाजिक सम्बन्धक रूप आ संसाधनपर नियन्त्रण अधिक निर्णायक अछि। 'दोख केकर'मे पुत्र पुरान पीढ़ीक वेदना सुनबैत अछि; 'डरक नदी'मे नव पीढ़ी पुरान पीढ़ीक उपयोगिता परखैत अछि। एके पीढ़ीगत सम्बन्ध विभिन्न आख्यानमे अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि।

९. रचनात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

ई कथासभक पहिल उपलब्धि विषयक चयन अछि। लेखक सामाजिक अन्यायकेँ अदालत, आन्दोलन अथवा सार्वजनिक घोषणाक स्थानपर घरक आँगन, रातिक बिछौन आ स्वप्नक मूस-बिलमे पकड़ैत छथि। एहि सूक्ष्म स्थानसभमे बृहत्तर व्यवस्था प्रवेश करैत अछि। उपजक अनिश्चितता एक बच्चाक वस्त्रक माँगमे अनुभव होइत अछि; दहेज आ पुत्र-कामना एक स्त्रीक गर्भहानिक इतिहासमे; वृद्धक अवमूल्यन परिवारक सामूहिक निर्णयमे। छोट आकार एहि बहुस्तरीय संकेतकेँ सम्भव बनबैत अछि।

दोसर उपलब्धि संवादक नाटकीय उपयोग अछि। परिचित घरेलू बोलीसँ पात्र एक-दोसरकेँ कष्ट दैत, बचबैत, मनबैत आ छलैत छथि। कथाक सामाजिक विश्लेषण पूर्णतः बाहरी विवेचनक भरोसे नहि, पात्रक कथनक असंगतिसँ जन्मैत अछि। जे बालक उपभोगक दौड़मे आहत अछि, वएह प्रतिस्पर्धाक दोसरा रूपक आश्रय लैत अछि; जे पति माताक पीड़ा बुझबैत अछि, ओ पत्नीकेँ अपन शिकायत पुनः कहबाक पूर्ण अवसर नहि दैत; जे परिवार वृद्धक अनुभवक सम्मान करैत अछि, वएह ओकर

प्राणकेँ जोखिममे दैत अछि। एहि आत्मविरोधक चित्रण कथासभकेँ चर्चा योग्य बनबैत अछि।

मुदा सीमा पर ध्यान देब सेहो आवश्यक अछि। 'रूसल बौआ'क सहानुभूतिपूर्ण अन्त सामाजिक असमानताक संस्थागत कारणकेँ अनसुलझल छोड़ैत अछि। 'दोख केकर'क मार्मिक रहस्योद्घाटन सासु-पुतोहुक वर्तमान संघर्षक ठोस समाधान प्रस्तुत नहि करैत; ओ नैतिक संवेदना जगबैत अछि, अधिकार-सम्बन्धक पुनर्संरचना नहि। तेसर कथामे भयक रूपक अत्यन्त प्रभावी अछि, मुदा सरिताक व्यक्तिगत परिस्थिति जानबूझि अथवा आकारक कारणेँ अस्पष्ट रहैत अछि; पाठककेँ भविष्यक चिन्ताक स्रोत अनुमानित करबाक पड़ैत अछि। एही अस्पष्टताक एक अंश सौन्दर्यगत शक्ति, आ दोसर अंश सामाजिक विश्लेषणक सीमा अछि।

रचनासभकेँ नैतिक उपदेशक रूपमे मात्र पढ़ब पाठकक सुविधा होएत, मुदा ओकर साहित्यिक जटिलता कम कऽ देत। ओकरा विपरीत प्रत्येक भावुक समाधानकेँ छल कहब सेहो एकांगी होएत। कथाकारक करुणा वास्तविक पात्रानुभवसँ उपजैत अछि; आलोचनाक दायित्व अछि ओहि करुणाक मर्यादा मानैत ओकर वैचारिक अपर्याप्तता पहिचानब। एहि संतुलनसँ मण्डलक कथा-संसारकेँ न त अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसामे विलीन करबाक आवश्यकता अछि आ न आरोपक कठोर खाँचेमे।

१०. निष्कर्ष: रंगक संग बहैत अनकहल प्रश्न

'त्रिवेणीक रंग'क प्रस्तुत तीनू कथामे समाजक समस्या अलक्षित कोनामे नहि, मानवीय निकटताक बीच उपस्थित अछि। 'रूसल बौआ' आर्थिक असमानताक मार झेलैत घरमे आत्मसम्मानक नाजुक पुनर्जन्म देखबैत अछि। 'दोख केकर' पुरान मातृपीड़ाकेँ वर्तमान सम्बन्धक संवादमे लऽ आनि स्मृति आ न्यायक प्रश्न तेज करैत अछि। 'डरक नदी' स्वप्नक सहारे परिवारक स्वार्थ, वृद्धक असुरक्षा आ स्त्रीक अपूर्ण भविष्य-बोधकेँ एकत्र करैत अछि। तीनू कथा सामाजिक संरचनाकेँ निजी भावनासँ अलग करबाक असम्भवता प्रमाणित करैत अछि।

मण्डलक कथा-कौशलक मूल विशेषता अछि—संक्षिप्त घटना, पहिचान योग्य लोकभाषा, संवादक भीतर दबाव आ अन्तमे अर्थक अचानक विस्तार। ई विस्तार सर्वत्र एक्के दिशामे नहि: पहिलमे आशा, दोसरमे स्मृतिक सहानुभूति, तेसरमे भयक वृद्धि। विशेषतः तेसर कथाक अनिश्चय पहिल दू कथाक आश्वासनकेँ पुनः पढ़ए लेल बाध्य करैत अछि। पाठक बुझैत अछि जे प्रेम आ आत्मीयता महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा संसाधनक विषमता, लिंग-अन्याय आ परित्यागक भय मात्र स्नेहसँ विलुप्त नहि होइत।

एहि तीन रचनाक साक्ष्यक आधारपर कहि सकैत छी जे मण्डलक लघुकथा पाठकसँ करुणा माँगैत अछि, मुदा सभसँ अधिक मूल्यवान तखन बनैत अछि जखन करुणाक संग प्रश्न जीवित रहैत अछि। बालकक साहस, माएक एकान्त-साधना आ सरिताक भय—ई तीनू अलग आवाज मिलि एहन साहित्यिक त्रिवेणी रचैत अछि जतय घरक सामान्य भाषा सामाजिक न्यायक असामान्य प्रश्न उठबैत अछि।

ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव। त्रिवेणीक रंग (विहनि/लघु कथा संग्रह)। दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१४।

मुन्नाजी। ‘राजदेव मण्डलसँ साक्षात्कार’। मैथिली समालोचना, अप्रैल २०१२। https://maithili-samalochna.blogspot.com/2012/04/blog-post_6313.html

पल्लवी प्रकाशन। ‘प्रकाशित पुस्तक’। प्रकाशकक पुस्तक-सूची, मई २०२४; प्रविष्टि २८९ मे त्रिवेणीक रंगक २०२१ संस्करणक विवरण। https://pallaviprakashan.blogspot.com/2024/05/blog-post.html

Genette, Gérard. Narrative Discourse: An Essay in Method. Ithaca: Cornell University Press, 1980.

Lanser, Susan Sniader. The Narrative Act: Point of View in Prose Fiction. Princeton: Princeton University Press, 1981.

Bakhtin, M. M. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. Austin: University of Texas Press, 1981.

अध्याय 9

वापसी : प्रतिष्ठाक अवापसी आ सम्बन्धक विखण्डन

राजदेव मण्डलक 'वापसी' एकांकी-संचयनक पाठाधारित नाट्यशास्त्रीय आ सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

सार

राजदेव मण्डलक 'वापसी' नामक एकांकी-संचयनमे दू रचना—'वापसी' आ 'सम्बन्ध'—संगृहीत अछि। पहिल एकांकी दहेजक लोभ, सम्बन्धी परिवारक प्रतिष्ठा आ आत्मबोधक संघर्षकेँ केन्द्र बनबैत अछि; दोसर गुम भेल भाइकेँ चिन्हबाक प्रश्न, उत्तराधिकारक हिसाब आ परिवारक भीतर बढ़ैत अविश्वासकेँ। एहि अध्ययनक प्रतिपाद्य अछि जे दुनू एकांकीमे 'वापसी' मात्र कोनो वस्तु अथवा व्यक्तिक पुनरागमन नहि, अपितु नैतिक सम्बन्धक पुनर्स्थापनाक कठिन अथवा असम्भव प्रक्रियाक रूपमे उपस्थित होइत अछि। लेखमे कथ्य, दृश्यविन्यास, पात्र-समूह, भाषिक स्वाभाविकता, मंच-संकेत, स्त्री-पात्रक नैतिक भूमिका, सम्पत्ति आ मान-प्रतिष्ठाक परस्पर सम्बन्ध, आ अन्त्यक नाटकीय व्यंजनाक सूक्ष्म विवेचन कएल गेल अछि। नाटकीय क्रिया, संवाद-संप्रेषण, मंच-चिह्न तथा रस-भाव सम्बन्धी सैद्धान्तिक अवधारणाकेँ पाठक विशिष्ट परिस्थितिक अनुरूप समायोजित कऽ प्रयोग कएल गेल अछि। मूल्यांकनमे संग्रहक संक्षिप्तता, स्थानीय बोलीक सामर्थ्य आ नैतिक विडम्बनाक उपलब्धि संगे कतिपय उपदेशात्मकता आ कथोपकथनक एकरेखीयताक सीमा सेहो चिन्हित कएल गेल अछि।

बीजशब्द: मैथिली एकांकी; राजदेव मण्डल; दहेज; प्रतिष्ठा; पारिवारिक सम्बन्ध; उत्तराधिकार; दृश्यविधान; लोकभाषा; नाट्यनैतिकता।

१. प्रस्तावना: छोट नाट्य-रूपमे पैघ सामाजिक प्रश्न

एकांकीक कलात्मकता ओकर लघु आकारमे नहि, अपितु संघर्षक सघनता, पात्रक परस्पर क्रिया आ दृश्य-अन्तरालक अनुशासनमे निहित रहैत अछि। छोट नाटक प्रायः एक वा किछु सीमित परिस्थितिक माध्यमसँ ओहि सामाजिक दबावकेँ देखबैत अछि जे दीर्घ आख्यानमे पसारि कऽ कहल जा सकैत छल। 'वापसी'मे पारिवारिक व्यवहारक दू क्षेत्र—विवाह-संस्कार आ पैतृक सम्पत्ति—पर लेखक अपन दृष्टि स्थिर करैत छथि। दुनू क्षेत्रमे अर्थक लेनदेन कानून वा रीतिसँ आगाँ बढ़ि आत्मीय सम्बन्धक कसौटी बनि जाइत अछि। एतए धनक अपेक्षा मात्र भौतिक अभिलाषा नहि, बल्कि दोसर व्यक्तिक मानवीय अस्तित्वकेँ नापबाक एकटा विकृत पैमाना बनैत अछि।

संग्रहक पहिल रचना 'वापसी' चारि दृश्यक भीतर घरेलू आ सामाजिक टकरावकेँ क्रमशः विकसित करैत अछि; 'सम्बन्ध' तीन दृश्यमे भाय-भायक आत्मीयता पर सम्पत्तिक दावाक आघात देखबैत अछि। ई संख्या स्वयंमे मूल्यांकनक आधार नहि; महत्त्व एहि बातक अछि जे दृश्य बदललासँ प्रश्नक दायरामे परिवर्तन होइत अछि। पहिलमे दुआर, समधीक घर, चन्देसरक घरक एक भाग आ चौबटिया नैतिक निर्णयक व्यापक सामुदायिक क्षेत्र बनैत अछि; दोसरमे दरबज्जा, गामक चौबटियापर चाहक दोकान आ पुनः दरबज्जाक क्रम घरक गोपनीय स्वार्थकेँ सार्वजनिक जिरहमे बदलि दैत अछि।

एहि शोधक पद्धति मूल रचनाक निकट-पाठ, पात्र-वचन आ रंगनिर्देशक अन्तर्सम्बन्धक विश्लेषण तथा तुलनात्मक नाट्य-सिद्धान्तपर आधारित अछि। पाठक प्रत्यक्ष कथन आ समीक्षकक अर्थ-निर्माणमे अन्तर राखल गेल अछि। अतः 'प्रतिष्ठाक अवापसी' अथवा 'सम्बन्धक विखण्डन' नाटककारक लिखित सूत्र-वाक्य नहि, अपितु प्रसंग, संवाद आ अन्तिम परिणतिक आधारपर एहि अध्ययनक व्याख्यात्मक निष्कर्ष अछि।

२. पोथीक रचना-विन्यास आ नामकरण

संग्रहक शीर्षक एकवचन ‘वापसी’ अछि, मुदा विषयक दृष्टिसँ ओ दू अलग नाटकीय स्थितिक एकटा साझा संवेदनात्मक नामक रूप लैत अछि। पहिल एकांकीमे देय दहेजक वस्तु लौटाओल जा सकैत अछि, मुदा ओकर बहाने उपजल अपमान आ मानक ह्रास मेटल नहि जा सकैत; दोसरमे बरिसोंसँ बिछुड़ल भाइ देहसहित घर धरि पहुँचलोपर अपनत्वक गृहमुख नहि पबैत। एना पहिल घटनामे ‘फेर देब’ आ दोसरमे ‘फेर आब’—दू क्रियाक असफल नैतिक अर्थ शीर्षककेँ अर्थबहुल बनबैत अछि। ई अर्थ-साम्य पाठमे प्रत्यक्ष मौजूद दुनू अन्त्यसँ निर्मित होइत अछि; एहि लेल अलग-अलग कथानककेँ जबरदस्ती एक करबाक आवश्यकता नहि।

‘वापसी’क भाषा आ रंग-विधान समकालीन ग्रामीण जीवनक पृष्ठभूमि रचैत अछि, मुदा रचना कोनो विशिष्ट ऐतिहासिक घटना, आन्दोलन वा स्थानक दस्तावेज नहि बनैत। एकांकीक सामाजिक विश्व मुख्यतः घरेलू सम्बन्ध, गामक लोक-मत, विवाहक प्रतिष्ठा, बँटवारा आ व्यक्ति-स्वार्थक टकरावसँ बनल अछि। संग्रहक मूल योगदान एही सीमित परिवेशमे नैतिक जटिलताक रंगमंचीय रूपायन अछि, न कि सम्पूर्ण मैथिली रंगमंचक कालक्रमिक प्रतिनिधित्वक दावा।

३. ‘वापसी’ : दहेजक लेनदेनसँ प्रतिष्ठाक संकट धरि

३.१ आरम्भक दृश्य : आग्रह आ असहमतिक बीजारोपण

प्रथम दृश्य पत्तीलालक दुआरपर आरम्भ होइत अछि। लुतीचन अपन सहधर्मी-सदृश आत्मीय सम्बोधनमे समधीक घर जायबाक तैयारीक बात उठबैत छथि। पत्तीलालक प्रतिक्रियामे समधीक प्रति तिरस्कार आ दहेजसँ जुड़ल असन्तोष जल्दी स्पष्ट भऽ जाइत अछि। एहि संवादमे महत्त्वपूर्ण बात ई नहि जे दू पात्र पुरान विवादक सूचना दैत छथि; महत्त्वपूर्ण ई अछि जे दर्शक आरम्भसँ देखि लैत छथि—पत्तीलाल

सम्बन्धकँ सम्मान अथवा स्नेह नहि, बकाया दावाक भाषामे पढ़ि रहल छथि। लुतीचनक टोका-टोकी पत्तीलालक सामाजिक धरातल पर पहिल प्रश्नचिह्न अछि।

लुतीचनक उपस्थिति नाटकमे केवल सूचना देबऽ वाला पड़ोसीक नहि। ओ पत्तीलालक निर्णयपर समाजक भीतरसँ उठल नैतिक आपत्ति राखैत छथि। पत्तीलालक वचनमे 'बाँकी' आ 'देबाक' हिसाब, लुतीचनक वचनमे 'भेट' आ पारिवारिक समुचित व्यवहारक आग्रह—एहि भाषिक विरोधसँ संघर्षक स्वरूप खुलैत अछि। लेखक मंचपर किछु विशेष दुर्घटना देखेने बिना दू प्रकारक नैतिक अर्थव्यवस्था आमने-सामने ठाढ़ करैत छथि।

३.२ समधीक घर : अनुपस्थिति आ स्मृतिक माध्यमसँ तनाव

दोसर दृश्य चन्देसरक घरमे घटित होइत अछि। पत्तीलालक आगमनक प्रतीक्षा आ परिवारक शोकपूर्ण सूचना एकरेखीय संघर्षक दिशा बदलि दैत अछि। सुरखबाक माध्यमसँ समधीक अनुपस्थितिक खबर अबैत अछि। एतए पात्र-रचना एकटा अर्थपूर्ण नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करैत अछि: जे व्यक्ति कथोपकथनमे आलोचना आ लेनदेनक केन्द्र बनल छल, ओकर अनुपस्थितिक कारणे सम्बन्धक अधूरापन आरो भारी भऽ उठैत अछि। भेटबाक जिद्द आ भेटक असम्भवता एक-दोसराक विपरीत पड़ैत अछि।

पत्तीलालक आत्मप्रतिष्ठाक भाषा एहि शोक-परिस्थितिमे असहज प्रतीत होइत अछि। नाटक मानो पूछैत अछि जे मृत्यु, स्नेह आ सम्बन्धी परिवारक दुखक सोझाँ पुरान आर्थिक हिसाबक कोन स्थान रहि जाइत अछि। प्रश्नक उत्तर लेखक तत्काल नहि दैत छथि; ओकर परिणाम अगिला दृश्यसभमे पत्तीलालक आक्रोश आ घरक भीतर उठैत विरोधसँ तैयार होइत अछि। एहि विलम्बसँ दहेजक लोभ एकटा स्थायी मनोवृत्तिक रूपमे उभरैत अछि, क्षणिक आवेगक रूपमे नहि।

३.३ घरक भीतरक प्रतिवाद : पीढ़ी आ स्त्री-पात्रक भूमिका

तेसर दृश्य चन्देसरक घरक एक भागमे आयोजित अछि। एतए पत्तीलालक समक्ष सुरखबा आ लुतीचनक अतिरिक्त परिवारक भीतरसँ सेहो प्रतिवादक स्वर प्रबल होइत अछि। पत्तीलाल देय वस्तु न भेटलाक असन्तोष व्यक्त करैत छथि आ 'सोनाक कनौसी'क प्रश्न उठबैत छथि। कंतलाल आ फूलोदेयक प्रवेशक बाद झगड़ाक केन्द्र एकटा आभूषणसँ बदलि कऽ वैवाहिक जीवनक नैतिक संरचना बनि जाइत अछि।

पत्तीलाल जकरा अपन अधिकार अथवा मानक रक्षा बुझैत छथि, ओहि आग्रहमे पुत्रक दाम्पत्य, वधूक स्वाभिमान आ दू परिवारक परस्पर विश्वास आहत भऽ रहल अछि। कंतलाल पिताक आग्रहसँ दूरी बनबैत छथि; फूलोदेय सेहो आर्थिक वस्तुकेँ अन्तिम निर्णायक मानबासँ मना करैत छथि। यद्यपि लेखक सम्पत्ति तथा परिवारक संवादमे पुरुषक अधिक बोलबाक परम्परागत स्थान राखैत छथि, तथापि फूलोदेयक हस्तक्षेप निर्णायक छैक। ओ सहनशीलताक निष्क्रिय मूर्ति नहि, नैतिक तर्कक सक्रिय प्रस्तुतकर्ता बनि सोना वापस करबाक उपायमे सहमति दैत छथि।

एहि दृश्यक एकटा मार्मिक विरोधाभास अछि: आर्थिक वस्तु जतेक छोट होइत जाइत अछि, ओकर प्रतीकात्मक भार ओतेक बढ़ैत अछि। 'कनौसी' प्रकटतः एकटा आभूषण अछि, मुदा नाटकक भीतर ओ दहेज-प्रथा, पितृसत्तात्मक निर्णय, पीढ़ीक संस्कार आ प्रतिष्ठाक संकटसभक संयुक्त चिह्न बनि जाइत अछि। एना वस्तु नाटकमे दृश्य-प्रॉप भऽ सकैत अछि, साथहि ओकर अर्थ दृश्यक बाहर समाजक मान्यताधरि प्रसारित होइत अछि।

३.४ चौबटियाक निर्णायक दृश्य : वस्तुक वापसी, मानक नहि

चौठ दृश्य चौबटियापर रखल गेल अछि। आरम्भमे पत्तीलाल अपन आग्रहक नैतिक आधार बचयबाक प्रयत्न करैत छथि, मुदा घोंघाय आ चटपटियाक वचनकेँ ओ सहजहि नकारि नहि पबैत छथि। कथोपकथनक क्रममे कंतलाल आ फूलोदेय प्रवेश करैत छथि, आ सोना वापस कएल जायबाक सूचना भेटैत अछि। पत्तीलालक अन्तिम प्रतिक्रिया

एहि एकांकीक मूल अर्थ खोलैत अछि: “मुदा हमर प्रतिष्ठाक वापसी तँ नहि भऽ सकैत अछि।” ई पंक्ति बाह्य लेनदेन आ भीतरी सामाजिक क्षतिक बीच भेद स्थापित करैत अछि।

एहि अन्त्यकेँ सरल ‘सुधरि गेल व्यक्ति’क कथा मानब अपर्याप्त होयत। पत्तीलाल अपन लोभक सर्वथा त्याग नहि घोषित करैत छथि; ओ विशेष रूपेँ प्रतिष्ठाक क्षतिक स्वीकार करैत छथि। ई स्वीकारोक्तिमे पश्चात्ताप, लाज आ आत्मकेन्द्रित खेद तीनू एकसंग पढ़ल जा सकैत अछि। नाटक सामाजिक आलोचनाक कठोरता एही जटिलतामे धारण करैत अछि : आर्थिक वस्तु देल जा सकैत अछि, मुदा लोक-विश्वासक पुनर्निर्माण ओकर स्वाभाविक परिणाम नहि।

चौबटिया, जे गामक सामान्य आवागमनक स्थान अछि, एतए सार्वजनिक नैतिक निर्णयक मंच बनैत अछि। दहेजक कथित ‘घरेलू मामला’ समुदायसमक्ष उद्घाटित होइत अछि। लेखक लोक-गप्पक सम्भावित हिंसाक स्थानपर संवादक माध्यमसँ सामुदायिक सचेतनाकेँ सक्रिय करैत छथि। तथापि चटपटिया आ घोंघायक वचनमे लोक-टिप्पणीक दबाव सेहो अछि; एहि लेल समुदाय केवल न्यायकारी शक्ति नहि, मान-अपमानक निर्माणमे भागीदार व्यवस्था सेहो अछि।

४. ‘सम्बन्ध’: भायक पहिचान, सम्पत्तिक अधिकार आ आत्मीयताक विफलता

४.१ पहिल दृश्य : बाँटाक आशंका

‘सम्बन्ध’क आरम्भ लखपतियाक दरबज्जापर होइत अछि। लखपतिया अपन भाइकेँ पैतृक सम्पत्तिमे हिस्सा देबाक बातसँ आशंकित छथि। फुलचनक संग बातचीतमे जल्दी बुझाइत अछि जे विवाद केवल जमीन-जायदादक नहि, अपितु भाइ-भैयारीक ‘महँगी’ होइत गेल सामाजिक कीमतक अछि। परिवारक भीतर बीमारी, अन्तःसंघर्ष आ आत्मीय सम्बन्धक भाषा निरन्तर आर्थिक हिस्सेदारीक

भाषासँ विस्थापित होइत अछि। लेखक एतए लखपतियाक स्वार्थकेँ सहज-सामान्य व्यवहारक वेशमे प्रस्तुत करैत छथि, जकर असल रूप आगाँक दृश्य खोलैत अछि।

आरम्भमे नाटक पाठककेँ कोनो सर्वज्ञ प्रमाणपत्र नहि दैत। फुलचनक स्मृति, लखपतियाक भय आ पुरान घटनासभ एकर सूचना-भूमि बनैत अछि। एहन सीमित सूचना नाटकीय शंकाक उपयोगी साधन अछि: गुम भेल व्यक्ति सचमुच आबि रहल छथि अथवा लोकक अफवाह सम्पत्ति-चिन्ताकेँ भड़का रहल अछि? ई प्रश्नक उत्तर नाटक पात्रक परस्पर पहिचानक परीक्षासँ देबऽ चाहैत अछि।

४.२ दोसर दृश्य : गामक चौबटियापर स्मृति आ परिचय

दोसर दृश्य गामक चौबटियापर चाहक दोकानमे घटित होइत अछि। लेटरु काका एकटा व्यक्तिकेँ संग आनैत छथि आ ओकर परिचय लखपतियाक भाइ जगु बौकू रूपमे दैत छथि। भुनेसार, कमलेश, फुलचन आ अन्य ग्रामीणक प्रतिक्रिया गामक सामूहिक स्मृतिक प्रकृतिपर प्रकाश दैत अछि। दुर्घटनाक बाद चेहराक परिवर्तनक बात पहिचानक दृश्य-चिह्नकेँ अस्थिर बना दैत अछि; कथोपकथन, स्मरण आ पुरान चिह्न एतए अधिक महत्त्वपूर्ण होइत अछि।

लेटरु काका पुरान गामक परिचय-रक्षक छथि। ओ बौकूक घाव, बितल बरिस आ गामसँ बाहरक भटकनक प्रसंग जोड़ि ओकर परिचयकेँ सामाजिक स्वीकृति देबाक प्रयत्न करैत छथि। मुदा ग्राम-समुदायक विश्वाससँ सत्ताशाली परिवारक हित अवश्य बदलब, एकर कोनो गारंटी नहि। हिनका माध्यमसँ नाटक सार्वजनिक सत्यापन आ निजी स्वार्थक अन्तर देखबैत अछि: गामक स्मृति जकरा चिन्हैत अछि, घरक स्वामी ओकरा स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि रहि सकैत अछि।

चाहक दोकानक चुनाव अर्थवान अछि। ई श्रम, बाट, अफवाह आ सामूहिक चर्चा सभक संगमस्थल अछि। पहिल एकांकीक चौबटियापर जकाँ एतहुँ घरक भीतरक प्रश्न सार्वजनिक परामर्शक विषय बनैत अछि। मुदा एतए सार्वजनिक परिचय सिद्ध

होयबाक प्रक्रिया परिवारक स्वागतमे रूपान्तरित नहि होइत; एहि असमानतासँ 'सम्बन्ध'क करुणा धीरे-धीरे गाढ़ होइत अछि।

४.३ तेसर दृश्य : पहिचानक टकराव आ खुलल अन्त्य

तेसर दृश्य फेर लखपतियाक दरबज्जापर लौटैत अछि। छिटकीवाली उपस्थित भऽ खबर दैत छथि जे लखपतियाक भाइ गाममे आयल छथि। लखपतियाक प्रतिक्रिया स्वागत नहि, सन्देह आ आरोप अछि। बौकू अपन पहिचान घोषित करैत छथि, मुदा लखपतिया ओकरा 'बररूपिया' कहैत छथि; ओ कथित नाटक रचबाक आरोप लगबैत छथि। एतए नाटकक भीतर नाटकक संकेत एकटा विडम्बनात्मक बिन्दु बनैत अछि: वास्तवमे अभिनय के करि रहल अछि—बौकू, जकर रूप दुर्घटनासँ बदलल, अथवा लखपतिया, जे सम्बन्ध नकारबाक लेल अविश्वासक अभिनय करैत अछि?

बौकू दुर्घटनाक दाग देखबैत छथि आ अपन पुरान जीवनक संस्मरण सोझाँ रखैत छथि। दुखनी दायक प्रवेश मातृ-स्मृति आ करुणाक ध्वनि आनि दैत अछि। किन्तु लखपतियाक व्यवहारसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे सम्पत्ति बाँटबाक आशंका ओकर निर्णयकेँ पहिनेहेँ प्रभावित कऽ चुकल अछि। बौकू धनक अपेक्षा अपन सहोदरकेँ भेटबाक कामना व्यक्त करैत छथि। अन्ततः ओकर विदा होयबाक निर्णयसँ नाटक स्वार्थी अस्वीकारक भयावह अर्थ खोलैत अछि: जकरा सबसँ बेसी आत्मीय आश्रय चाही, ओकरा अपन घरसँ फेर परती भेजल जाइत अछि।

अन्तिम दृश्य अत्यन्त संवेदनशील अछि। फुलचन बौकूक पुनः समझेबाक प्रयास करैत छथि; बौकू कहैत छथि जे ओ अपन सहोदरकेँ तकैत आयल छल, मुदा आब विदा लेत। एहि अस्वीकृत वापसीमे राजनीतिक अथवा कानूनी न्याय पूरा नहि होइत; ओकर स्थान पारिवारिक त्रासदी लैत अछि। बौकूक आहत पुकार आ दुखनीक विलाप नाटककेँ खुलल नैतिक प्रश्नपर छोड़ैत अछि। सम्बन्ध, जे देह, स्मृति आ पारस्परिक परिचयपर आधारित होयबाक चाही, एतए हिस्सेदारीक भयक अधीन भऽ जाइत अछि।

५. दू एकांकीक साझा केन्द्र : धन, मान आ आत्मीयताक द्वन्द्व

दुनू एकांकीक नैतिक संरचनामे समानता स्पष्ट अछि। ‘वापसी’मे पत्तीलाल दहेजक वस्तु चाहैत छथि, ‘सम्बन्ध’मे लखपतिया सम्पत्तिक सम्भावित बँटवारासँ बचय चाहैत छथि। पहिलमे जकरा पाबय चाहैत छथि ओहि वस्तुक अपेक्षा प्रतिष्ठाक हानि पैघ सिद्ध होइत अछि; दोसरमे जकरा बचाबय चाहैत छथि ओहि सम्पत्तिक अपेक्षा सहोदर-स्नेहक मूल्य पैघ उभरैत अछि। एक पात्र लेनदेनक बलपर सम्बन्ध नियन्त्रित करऽ चाहैत छथि, दोसर अधिकार नकारिकऽ सम्बन्ध समाप्त करऽ चाहैत छथि। दुनू प्रयत्न अन्ततः आत्मीय जीवनकेँ छिन्न-भिन्न करैत अछि।

यद्यपि एकांकी-द्वयकेँ एकटा ‘दुई पात्र-दुई दोष’क नैतिक दृष्टान्त बनबैत रहब सेहो न्याय नहि होयत। पत्तीलालक वचनमे सामाजिक प्रतिष्ठाक परिचित दबाव अछि; लखपतियाक वचनमे उत्तराधिकारसँ उपजल भयक तर्क अछि। नाटकक अधिक सूक्ष्म उपलब्धि ई अछि जे पात्र अपन स्वार्थकेँ खुल्लमखुल्ला अधर्मक रूपमे नहि, सामान्य लोक-व्यवहारक नामपर उचित ठहराबय चाहैत छथि। एहि आत्म-औचित्यस्थापनाक कारणे नाटकीय दोष व्यक्तिगत भऽ करियो सामाजिक संरचनासँ जुड़ल देखाइत अछि।

दहेज आ पैतृक सम्पत्तिकेँ लेखक एकसमान कानूनी प्रश्न नहि बनबैत छथि; ओकरा जोड़बाक औचित्य नैतिक प्रयोजनमे अछि। दहेजक माँग विवाह सम्बन्धमे अपमान पैदा करैत अछि, सम्पत्तिक एकाधिकार भाय-भायक विश्वासक हत्या करैत अछि। दूनू प्रसंगमे धन एहन माध्यम बनैत अछि जे आत्मीयताकेँ साधन बनाबय लगैत अछि। परिवार सामाजिक आधार रहबाक बदला आर्थिक दावापूर्तिक स्थल बनि जाइत अछि।

६. दृश्य, समय आ स्थल : नाट्यक्रियाक अनुशासन

कथावस्तुक दृष्टिसँ दुनू रचना सीमित दृश्यविन्यास अपनबैत अछि। किछु घरेलू स्थान, एकटा सार्वजनिक चौबटिया, दिनक समय आ दृश्य-परिवर्तनक संक्षिप्त संकेत —एतबे साधनसँ लेखक सम्बन्धक बदलैत रूप देखबैत छथि। रंगनिर्देश पात्रक प्रवेश,

प्रस्थान, बैठकी, प्रतिक्रिया, हाव-भाव आ प्रकाश्य टकरावकेँ व्यवस्थित करैत अछि। मंचक भाषा अत्यधिक अलंकारपूर्ण नहि; ओ अभिनेता आ निर्देशककेँ मूल क्रियाक बोध कराबैत अछि।

मैनफ्रेड फिस्टर नाटकक पाठ आ रंग-प्रस्तुति बीच बहुस्तरीय संप्रेषणक सम्बन्धपर बल दैत छथि। एहि दृष्टिसँ 'वापसी'क दुआर, चौकी, घुमाफिरी आ सामूहिक प्रवेश मात्र साहित्यिक विवरण नहि, अभिनेता लोकनिक बीच दूरी-निकटता बदलयबाक संकेत छथि। 'सम्बन्ध'क दरबज्जासँ चाहक दोकान आ पुनः दरबज्जा धरि आयल क्रम आत्मीय स्थानक सार्वजनिक परीक्षण आ फेर आत्मीय अस्वीकृतिक वृत्त बनबैत अछि। तथापि लिखित पाठसँ प्रत्यक्ष प्रस्तुति-सफलताक अन्तिम दावा नहि कएल जा सकैत; मंचनमे अभिनय, विराम, समूह-संचालन आ स्थान-निर्माणक स्वतन्त्र भूमिका रहत।

एकांकीक सघनताक दावेकेँ दृश्यक आन्तरिक अर्थसँ कसबाक आवश्यकता अछि। 'वापसी'मे पहिल दू दृश्य दीर्घ प्रस्तावनाक तुल्य लगि सकैत अछि; मुख्य नैतिक संघर्ष तेसर आ चौठ दृश्यमे अधिक प्रभावी होइत अछि। 'सम्बन्ध'मे दोसर दृश्यक सार्वजनिक पहिचान-परीक्षा कथात्मक सूचनाकेँ अपेक्षाकृत अधिक स्थान दैत अछि। तथापि एहि सूचना-परिप्रेक्ष्य बिना तेसर दृश्यक अस्वीकारक मार्मिकता घटि सकैत छल। एना किछु विस्तार नाटकीय आवश्यकता आ व्याख्यात्मक बोझक सीमापर ठाढ़ अछि।

७. संवाद-भाषा : लोकवाक्, विडम्बना आ चरित्रनिर्माण

राजदेव मण्डलक संवादक प्रमुख शक्ति ओकर बोलीसँ अर्जित स्वाभाविकता अछि। सम्बोधन, आपसी टोका-टाकी, प्रश्नोत्तर, कठोर बोल, झिझक, लोक-अनुभवसँ उठल शब्द-प्रयोग—सभ मिलिकऽ पात्रक संसार रचैत अछि। पात्रसभ शास्त्रीय भाषण नहि दैत छथि; ओ प्रत्यक्ष उद्देश्य साधबाक लेल बोलैत छथि। पत्तीलालक कठोर स्वर आ लुतीचनक टोक, लखपतियाक आरोप आ बौकूक अस्मिता-संरक्षण एकरेखा नैतिक निबन्धसँ पृथक रंगकीय तनाव पैदा करैत अछि।

नाटकीय संवाद सामान्य वार्तालापसँ भिन्न एहि कारणे होइत अछि जे ओ एक दिस दृश्यक पात्रकेँ सम्बोधित करैत अछि, दोसर दिस दर्शकक अर्थग्रहणकेँ आकार दैत अछि। फिस्टरक संवाद-संप्रेषण सम्बन्धी विवेचनक प्रकाशमे देखल जाए तँ 'वापसी'क 'कनौसी' प्रसंग पाठककेँ सामाजिक अन्यायक ज्ञान दैत अछि; तखनहि नाटकक पात्रसभ अपने-अपने हित-अहितक हिसाब करि रहल छथि। 'सम्बन्ध'मे 'बौकू' नाम, देहक दाग आ 'भाइ' सम्बोधनक पुनरावृत्ति दर्शकक स्मृतिमे पहिचानक दावा स्थिर करैत अछि, जखन लखपतिया ओकरा अस्वीकार करैत छथि।

भाषामे कतिपय स्थानपर नैतिक निर्णय अत्यन्त स्पष्ट शब्दमे कहल जाइत अछि। एहिसँ लोकमंचपर सन्देशक तीक्ष्णता बढ़ैत अछि, मुदा साहित्यिक सूक्ष्मताक दृष्टिसँ दर्शकक लेल अर्थ-निर्माणक अवकाश कखनो संकुचित होइत अछि। विशेष कऽ अन्तिम भागमे पात्र अपन नैतिक स्थितिकेँ प्रत्यक्ष व्याख्यायित करैत छथि। ई सीमा रचनाक सामाजिक उद्देश्यसँ जुड़ल अछि; एकरेखीयता होइतहु संवादक स्थानीय लय ओकरा जीवित बनबैत अछि।

८. पात्र-संरचना : व्यक्ति, समुदाय आ प्रतिवाद

पहिल नाटकक केन्द्र पत्तीलाल छथि, मुदा हुनकर चरित्र कंतलाल, फूलोदेय, लुतीचन, घोंघाय आ चटपटियाक बिना पूर्ण नहि होइत। ओ सभ अलग-अलग नैतिक दृष्टिक वाहक छथि। पत्तीलालमे स्वार्थक दबाव, कंतलालमे पीढ़ीगत प्रतिरोध, फूलोदेयमे मानवीय संयम, लुतीचनमे नातेदारीक औचित्य आ ग्रामीण पात्रसभमे जनमतक टिप्पणी संयुक्त रूपसँ नाटकक निर्णय बनबैत अछि। एकल नायकक मानसक अपेक्षा संवादात्मक समूह एहि नाटकक नियामक शक्ति अछि।

दोसर नाटकमे लखपतिया आ बौकूक संघर्षक कक्षामे लेटरु काका, भुनेसार, कमलेश, फुलचन, दुखनी दाय आ छिटकीवाली क्रमशः साक्ष्य, सूचना, स्मृति आ संवेदनाक माध्यम बनैत छथि। पाठमे किछु पात्र अपन विशिष्ट मनोवैज्ञानिक विकाससँ बेसी प्रसंगक कार्यात्मक भूमिकाक कारणे उभरैत छथि। एकांकीक लघु-

विधानमे ई स्वाभाविक अछि; मुदा जँ मंचनमे प्रत्येकक देहभाषा आ स्वर एकहि ढाँचामे रहि गेल, तँ समुदाय मात्र कोरस बनि रहबाक जोखिम अछि।

दुखनी दाय आ फूलोदेयक तुलनासँ स्त्री-पात्रक दू अलग ऊर्जा देखाइत अछि। फूलोदेय सक्रिय नैतिक मध्यस्थ छथि, जे विवादित वस्तु लौटेबाक उपाय स्वीकार करैत छथि; दुखनीक व्यथा सम्बन्धक विच्छेदक त्रासदीकेँ शरीर आ स्वर प्रदान करैत अछि। तथापि दुनू नाटकमे निर्णयक सार्वजनिक क्षेत्र मुख्यतः पुरुष पात्रक नियन्त्रणमे अछि। स्त्रीक आवाज अपन संकट व्यक्त करैत अछि, मुदा सम्पत्तिक संरचनात्मक नियम फेरो पुरुष-केन्द्रित रहैत अछि। एही विरोधाभासकेँ रचनाक सामाजिक आलोचनाक सम्भावना आ सीमा दुनू रूपमे देखल जा सकैत अछि।

९. भारतीय आ आधुनिक नाट्य-सिद्धान्तक आलोकमे पाठ

भरतमुनिक 'नाट्यशास्त्र'मे रस, भाव, अभिनय, नाटकक रूपभेद आ वस्तुविन्यास सम्बन्धी पृथक-पृथक चर्चा अछि। एहिमे रस-सिद्धान्तकेँ यान्त्रिक सूत्रक रूपमे आरोपित करबाक बदला देखल जा सकैत अछि जे 'वापसी'मे लाज, क्षोभ आ नैतिक ग्लानिक क्रम दर्शकक भीतर आलोचनात्मक करुणा उत्पन्न करैत अछि, जखन 'सम्बन्ध'मे आशा, शंका, अस्वीकार आ वियोगक क्रम करुणाभावकेँ गाढ़ करैत अछि। एहि अर्थमे दुनू रचना भावक एकरूप विस्तार नहि; ओ दृश्यानुसार संवेदनाक परिवर्तित संयोजन प्रस्तुत करैत अछि।

अरस्तूक नाट्यविवेचनमे नाटकक क्रियाविधान आ घटनाक क्रम चरित्रक गुण-वर्णनसँ पृथक विश्लेषणक आधार अछि। 'वापसी'क कथात्मक प्रगति लोभ–प्रतिवाद–वस्तुक पुनर्दान–प्रतिष्ठाक पछतावा रूपमे देखल जा सकैत अछि। 'सम्बन्ध'क प्रगति स्वार्थ–सूचना–परिचय–अस्वीकार–विदा अछि। दुनू क्रममे अन्तिम घटना पहिल स्थितिक नवनिर्मित अर्थ दैत अछि : दहेजक लाभ प्रतिष्ठाक हानि, सम्पत्तिक सुरक्षा भायक वियोग बनि जाइत अछि। ई विरोधार्थक निष्पत्ति नाट्यक्रियाक संरचनात्मक

शक्तिक प्रमाण अछि; एहि अवधारणाकेँ ग्रीक त्रासदीक नियामक मानकसँ हूबहू नापब अनावश्यक होयत।

पात्र आ क्रियाक परस्पर-निर्भरता सम्बन्धी फिस्टरक विवेचन एतए विशेष उपयोगी अछि। पत्तीलालक स्वार्थ ओकर वचनक बादो फेर निर्णयमे देखाइत अछि; लखपतियाक भय ओकर सन्देहपूर्ण प्रश्नसँ प्रत्यक्ष अस्वीकृतिमे रूपान्तरित होइत अछि। अर्थात् दोषक घोषणा नहि, व्यवहारक विकाससँ चरित्र बनैत अछि। पैट्रिस पाविसक रंग-चिह्न सम्बन्धी शब्दावलीसँ सेहो एहि बातकेँ बुझल जा सकैत अछि जे सोना, दुर्घटनाक दाग, दरबज्जा आ चौबटिया अर्थवहन करनिहार रंग-संकेत बनैत अछि।

रेमण्ड विलियम्स ग्राम आ नगरक साहित्यिक बिम्बकेँ सरल 'निर्मल गाम बनाम दूषित शहर'क द्वन्द्वमे नहि पढ़बाक आग्रहक उपयोगी आलोचनात्मक पृष्ठभूमि दैत छथि। 'वापसी'मे गामक सम्बन्ध स्वतः पवित्र नहि—यैह सामाजिक स्थल दहेजक माँग, सम्पत्तिक स्वार्थ आ अपमानक पुनरुत्पादन करैत अछि। सामूहिक आवाज प्रतिवादक सम्भावना अवश्य दैत अछि, मुदा ग्राम-समाजकेँ स्वयंसिद्ध नैतिक आदर्श मानल जाए तँ लेखकक असल आलोचना ओझराइत अछि।

१०. नाटकीय विडम्बना आ शीर्षकक अन्तर्ध्वनि

पहिल एकांकीक अन्तमे पत्तीलालक मुँहसँ 'प्रतिष्ठाक वापसी'क असम्भवता उच्चारित होइत अछि। एहि वाक्यमे 'वापसी' शब्द वस्तुगत क्रियासँ नैतिक असम्भवतामे पलटैत अछि। दोसर एकांकीमे शीर्षक 'सम्बन्ध' अन्तमे शब्दगत उलटाव प्राप्त करैत अछि : जकरा सम्बन्ध पुष्ट करबाक लेल व्यक्ति पहुँचैत अछि, ओहि सम्बन्धकेँ घरक भीतर नकारि देल जाइत अछि। दूनू शीर्षक अन्त्यक कारणे पहिल दृश्यकेँ फेरसँ पढ़बाक प्रेरणा दैत अछि।

एतए लेखक दुःखक स्रोत बाहरी दैवी विपत्ति नहि बनबैत छथि। पत्तीलालक प्रतिष्ठा अपन लोभक व्यवहारसँ क्षीण होइत अछि; लखपतियाक भाय-सम्बन्ध अपन

आशंकित निर्णयसँ टूटैत अछि। एहिना नाटक प्रश्न करैत अछि जे सामाजिक विनाशक कारण केवल दुर्घटना अथवा आर्थिक अभाव नहि, अपितु मनुष्यक नैतिक विकल्प सेहो होइत अछि। 'सम्बन्ध'मे दुर्घटना देहक रूप बदलैत अछि, किन्तु आत्मीयताक नाश अस्वीकारक निर्णय करैत अछि—दुनू स्तरक अन्तर नाटकक गम्भीर उपलब्धि अछि।

११. पाठक उपलब्धि आ कलात्मक सीमा

संग्रहक उल्लेखनीय उपलब्धि चारि क्षेत्रमे अछि : सीमित रंग-विधानमे स्पष्ट संघर्षक निर्माण; जीवित मैथिली लोकवाक्क प्रयोग; वस्तुगत विवादकेँ आत्मीयता आ प्रतिष्ठाक प्रश्न बनाय देब; आ अन्तिम वाक्य वा क्रियासँ पहिने घटल घटनाक नैतिक अर्थ पलटि देब। नाटककार कथ्यक सामाजिक तात्कालिकताकेँ उपेक्षित नहि करैत छथि। दहेज, लोभ, सम्पत्तिक बँटवारा आ गामक सार्वजनिक चर्चा जेहन विषय मंचपर संप्रेषणीय रूपमे उपस्थित होइत अछि।

सीमासभक आलोचनात्मक उल्लेख सेहो आवश्यक अछि। बहुतो प्रसंगमे पात्र स्पष्ट पक्ष वा प्रतिपक्षक रूपमे व्यवस्थित देखाइत छथि; एहि कारणे हुनक अन्तर्विरोधक बहुस्तरीय मनोवैज्ञानिक विकास कम स्थान पबैत अछि। किछु संवाद सामाजिक सन्देशकेँ खुलि कऽ कहैत अछि, जकर परिणाम ई होइत अछि जे दर्शक स्वयं निष्कर्ष पर पहुँचबाक अपेक्षा निष्कर्ष सुनैत अछि। एकांकीक उत्कर्षक समीप कथोपकथनक तीव्रता अत्यधिक होइत अछि; ओहि ठाम विराम, मौन आ अप्रकट तनावक सम्भावना आरो बढ़ाओल जा सकैत छल।

'सम्बन्ध'क अन्त करुण होइतहु सम्पत्तिक विवादक सामाजिक प्रक्रिया पूर्ण नहि करैत। नाटक बौकूक अपमान आ विदाकेँ दर्शबैत अछि; ओकर कानूनी अधिकारक अन्तिम निराकरण प्रस्तुत नहि करैत। एकरा कथानकक अनिवार्य दोष कहब उचित नहि, कारण रचनाक लक्ष्य नैतिक विफलता देखायब अछि। तथापि सामाजिक-यथार्थवादी पाठकक मनमे ई प्रश्न रहैत अछि जे समूहक नैतिक समर्थनक बादो

अन्यायक व्यावहारिक प्रतिरोध कतय गेल। एहि अनुत्तरित प्रश्नसँ नाटकक आलोचनात्मक प्रतिध्वनि बढ़ैत अछि।

'वापसी'मे सेहो सोनाक कनौसीक पुनर्दानसँ दहेजक संस्थागत आलोचना स्वतः पूरा नहि होइत। व्यक्तिगत क्षमायाचना वा लाज सामाजिक चलनक पुनर्निर्माणक विकल्प नहि। मुदा नाटक पत्तीलालक अन्तिम आत्मस्वीकृतिक माध्यमसँ एतबे अवश्य देखबैत अछि जे अपमानक हिसाब वस्तुक हिसाबसँ अलग होइत अछि। एहन निष्पत्ति सामाजिक सुधारक आशावाद आ स्थायी क्षतिक करुण यथार्थक बीच तनाव बनौने रखैत अछि।

१२. निष्कर्ष

राजदेव मण्डलक 'वापसी' एकांकी-संचयनकँ पारिवारिक उपदेशक दू छोट कथा मानि छोड़ब ओकर नाट्यसार्थकता घटाएब होयत। दुनू एकांकीमे घर आ गाम मात्र पृष्ठभूमि नहि; ओ मनुष्यक सामाजिक पहिचानक परीक्षा-स्थल अछि। पहिल रचनामे दहेजक स्वार्थ सोनाक वस्तु तऽ लौटा दैत अछि, प्रतिष्ठा नहि; दोसर रचनामे सम्पत्तिक स्वार्थ सहोदरक देहक सामने ठाढ़ रहितो अपनत्व नहि लौटा सकैत अछि। एहि समानान्तर विडम्बनासँ संग्रहक नाम ओकर सभसँ महत्त्वपूर्ण अर्थ पबैत अछि।

संग्रहक भाषा स्थानीय, संघर्ष प्रत्यक्ष, रंगनिर्देश संक्षिप्त आ अन्त्य विचारोत्तेजक अछि। पात्रक कहियो-कहियो प्रत्यक्ष नीतिकथन आ सीमित मनोवैज्ञानिक जटिलता ओकर सौन्दर्यपर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा लोकजीवनक भंगिमामे नैतिक चोट पहुँचेबाक ओकर क्षमता महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली एकांकीक पाठक लेल ई पोथी खास एहि कारणेसँ विवेचनीय अछि जे ओ 'वापसी'कँ मात्र लौटबाक भौतिक घटना नहि, सामाजिक भरोसा आ आत्मीय अधिकारक नाजुक सम्भावना बना दैत अछि।

ग्रन्थसूची

मण्डल, राजदेव। वापसी : एकांकी संचयन। निर्मली (सुपौल): पल्लवी प्रकाशन, २०१८। ISBN 978-93-88421-88-1।

Aristotle. Poetics. मूल ग्रन्थ; पाठ-संदर्भ : 1450a-1452a. डिजिटल पाठ, Internet Classics Archive, Massachusetts Institute of Technology: https://classics.mit.edu/Aristotle/poetics.1.1.html

Lidova, Natalia. "Natyashastra." Oxford Bibliographies in Hinduism, Oxford University Press, २०१४। https://doi.org/10.1093/obo/9780195399318-0071

Pavis, Patrice. Dictionary of the Theatre: Terms, Concepts, and Analysis. अनुवाद: Christine Shantz. Toronto: University of Toronto Press, १९९८। https://doi.org/10.3138/9781442673908

Pfister, Manfred. The Theory and Analysis of Drama. अनुवाद: John Halliday. Cambridge: Cambridge University Press, १९८८। https://doi.org/10.1017/CBO9780511553998

Williams, Raymond. The Country and the City. New York: Oxford University Press, १९७३।

Williams, Raymond. Drama from Ibsen to Brecht. London: Chatto & Windus, १९६८।

नित नवल राजदेव मण्डल

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह · गजेन्द्र ठाकुर

कोसीक बाढ़ि, जातिक अपमान, श्रमक भूख, स्त्रीक प्रतिरोध आ गाछ-माछ-नदीक संकट — राजदेव मण्डलक कविता, उपन्यास, पटकथा, नाटक आ एकांकीक भीतरसँ एहि पोथीमे **नौ कृतिक निकट-पाठ** कएल गेल अछि।

समीक्षा सरोकारक घोषणामात्र नहि देखैत अछि; ओ ई जाँचैत अछि जे सरोकारकेँ संवेदनात्मक रूप देबाक प्रक्रिया कतए सफल भेल आ कतए असफल।

बाढ़ि, जाति, श्रम आ प्रतिरोध — नौ कृतिमे समकालीन मैथिली समाज

अम्बरा ◆ बसुंधरा ◆ हमर टोल ◆ जल भँवर ◆ जाल ◆ लाज ◆ पंचैती ◆ त्रिवेणीक रंग ◆ वापसी

विदेह वेबसाइट

www.videha.co.in

विदेह ई-जर्नल (GitHub)

videha-ejournal.github.io/videha

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X | © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सम्पादक : विदेह